



जैन विश्व भारती

मानवीय मूल्यों को समर्पित संस्था



मंत्री प्रतिवेदन 2024-2025





अर्हम्

जैन विश्व भारती एक विराट संस्था है। उसके पास अनेक आयाम हैं। सन् 2026-27 में वहां गुरुकुलवास का प्रवास भी निर्धारित है। वह जैन विश्व भारती के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है। शिक्षा, साहित्य, साधना आदि के क्षेत्र में जैन विश्व भारती धार्मिक-आध्यात्मिक उन्नयन करती रहे। मंगलकामना।

प्रेक्षा विश्व भारती, गांधीनगर

आचार्य महाश्रमण



जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूँ- 341306, जिला डीडवाना-कुचामन (राजस्थान)

संपर्क सूत्र : 01581-226080 / 224671

E-mail: jainvishvabharati@yahoo.com, ladnun@jvbharati.org

जैन विश्व भारती की 54वीं वार्षिक साधारण सभा की सूचना

मान्यवर,

सादर जय जिनेन्द्र,

जैन विश्व भारती की 54 वीं वार्षिक साधारण सभा दिनांक 1 सितम्बर 2025 को सांय 7.00 बजे आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, कोबा, अहमदाबाद (गुजरात) में होगी, जिसमें निम्नलिखित विषयों पर विचार किया जाएगा-

1. जैन विश्व भारती की 53वीं वार्षिक साधारण सभा की कार्यवाही का पठन और स्वीकृति।
2. जैन विश्व भारती के वर्ष 2024-25 के मंत्री के वार्षिक प्रतिवेदन पर विचार एवं स्वीकृति।
3. जैन विश्व भारती के दिनांक 01 अप्रैल 2024 से 31 मार्च 2025 तक के हिसाब परीक्षक द्वारा अंकेक्षित आय-व्यय लेखा एवं संतुलन पत्र का प्रस्तुतीकरण तथा स्वीकृति।
4. आगामी एक वर्ष हेतु अंकेक्षक की नियुक्ति।
5. आए हुए सुझावों एवं प्रस्तावों पर विचार।
6. जैन विश्व भारती की शैक्षणिक ईकाईयों से प्राप्त आय (सरप्लस) को शैक्षणिक ईकाईयों हेतु ही उपगत किया जाने का प्रस्ताव व स्वीकृति।
7. विविध- अध्यक्ष महोदय की अनुमति से।
8. धन्यवाद ज्ञापन।

जैन विश्व भारती की वार्षिक साधारण सभा में सभी सदस्यों की उपस्थिति सादर प्रार्थित है। कोरम के अभाव में स्थगित सभा उसी दिन और उसी स्थान पर आधा घण्टे पश्चात् आयजित होगी।

भवदीय

सलिल लोढा
मंत्री

दिनांक : 14.08.2025

विशेष : सम्मानित सदस्यगणों से निवेदन है कि आय-व्यय लेखा एवं संतुलन पत्रक संबंधी कोई भीजिज्ञासा ई-मेल द्वारा अथवा पोस्टल से प्रेषित करें ताकि साधारण सभा में समुचित प्रत्युत्तर प्रदान करजिज्ञासा का समाधान किया जा सके।





जैन विश्व भारती के अध्यक्ष और मंत्री एवं उनके कार्यकाल

अध्यक्ष

श्री मोहनलाल बांठिया
 श्री खेमचंद सेठिया
 श्री खेमचंद सेठिया
 श्री सूरजमल गोठी
 श्री सूरजमल गोठी
 श्री श्रीचंद रामपुरिया
 श्री श्रीचंद रामपुरिया
 श्री बिहारीलाल जैन
 श्री बिहारीलाल जैन
 श्री खेमचंद सेठिया
 श्री गुलाबचंद चिंडालिया
 श्री श्रीचंद बैंगानी
 श्री धरमचंद चैपड़ा
 श्री चैनरूप भंसाली
 श्री गुलाबचंद चिंडालिया
 श्री मूलचंद बोथरा
 श्री बुधमल दूगड़
 श्री सिद्धराज भंडारी
 श्री सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया
 श्री सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया
 श्री ताराचंद रामपुरिया
 श्री धरमचंद लुंकड़
 श्री बी. रमेशचंद बोहरा
 श्री अरविन्द संचेती
 श्री मनोज कुमार लूनिया
 श्री टी. अमरचंद जैन
 श्री टी. अमरचंद जैन

कार्यकाल

1970-1972
 1972-1974
 1974-1976
 1976-1977
 1977-1979
 1979-1981
 1980-1981
 1981-1984
 1981-1984
 1984-1990
 1990-1992
 1992-1994
 1994-1996
 1996-1997
 1997-2000
 2000-2002
 2002-2004
 2004-2006
 2006-2010
 2010-2012
 2012-2014
 2014-2016
 2016-2018
 2018-2020
 2020-2022
 2022-2024
 2024-2026

मंत्री

श्री सूरजमल गोठी
 श्री महावीरराज गेलड़ा (1972-1973)
 श्री संपत्तराज भूतोड़िया (1973-76)
 श्री संपत्तराज भूतोड़िया
 श्री श्रीचंद बैंगानी
 श्री श्रीचंद बैंगानी (1979-80)
 श्री श्रीचंद सुराणा
 श्री शंकरलाल मेहता (1981-1983)
 श्री श्रीचंद बैंगानी (1983-84)
 श्री श्रीचंद बैंगानी
 श्री श्रीचंद बैंगानी
 श्री झूमरमल बैंगानी
 श्री ताराचंद रामपुरिया
 श्री हनुमानमल चिंडालिया
 श्री ताराचंद रामपुरिया
 श्री गुलाबचंद चिंडालिया
 श्री भागचंद बरड़िया
 श्री नरेन्द्र छाजेड़
 श्री भीखमचंद पुगलिया
 श्री जितेन्द्र नाहटा
 श्री बंशीलाल बैद
 श्री अरविन्द गोठी
 श्री राजेश कोठारी
 श्री गौरव जैन मांडोत
 श्री प्रमोद बैद
 श्री सलिल लोढा
 श्री सलिल लोढा





जैन विश्व भारती (सत्र 2024-26)

विभागीय दायित्व | संचालिका समिति

पदाधिकारी

नाम

श्री टी. अमरचंद जैन
श्री पन्नालाल बैद
श्री छत्तरमल बैद
श्री विजयसिंह डागा
श्री अजितसिंह चोरड़िया
श्री प्रमोद बैद
श्री सलिल लोढ़ा
श्री रमेश कुमार खटेड़े
श्री नवीन बैंगाणी
श्री राजेश कोठारी

स्थान

चेन्नई
दिल्ली
चेन्नई
गुवाहाटी
सूरत
कोलकाता
मुम्बई
चेन्नई
कोलकाता
चेन्नई

पद

अध्यक्ष
वरिष्ठ उपाध्यक्ष
उपाध्यक्ष
उपाध्यक्ष
उपाध्यक्ष
उपाध्यक्ष
मंत्री
संयुक्त मंत्री
संयुक्त मंत्री
कोषाध्यक्ष

न्यास मण्डल

नाम

श्री जयन्तीलाल जी. सुराणा
श्री सुरेन्द्र कुमार कोठारी
श्री मूलचंद नाहर
श्री जोधराज बैद
श्री सुभाषचंद नाहर
श्री राजेश दूगड़े
श्री गणेशमल बोथरा
श्री जतनलाल पारख
श्री इन्द्राजमल भूतोड़िया
श्री दर्शन जैन रमेशचंद

स्थान

चेन्नई
मुंबई
बैंगलोर
दिल्ली
औरंगाबाद
वापी
बीकानेर
कोलकाता
कोलकाता
चेन्नई

पद

मुख्य न्यासी
न्यासी
न्यासी
न्यासी
न्यासी
न्यासी
न्यासी
न्यासी
न्यासी
न्यासी

पंचमण्डल

नाम

श्री भीखमचंद पुगलिया
श्री जे. गौतमचंद सेठिया
श्री उत्तमचंद नाहटा

स्थान

कोलकाता
चेन्नई
गुवाहाटी

पद

सदस्य
सदस्य
सदस्य

संचालिका समिति सदस्य

नाम

श्री अनिल चंडालिया
श्री अमित आर. कांकरिया
श्री अशोक पारख
श्री बी. केवलचंद मांडोते
प्रो. बी. आर दूगड़े
श्री बी. रमेशचंद बोहरा
श्री बजरंग कुमार सेठिया

स्थान

सूरत
पुणे
सिलीगुड़ी
चेन्नई
लाडनूं
चेन्नई
सिलीगुड़ी

नाम

श्री माखनलाल गोयल
श्री माणकचंद संकलेचा
श्री मनीष कुमार सिंघी
श्री मनोज जैन
श्री मुकेश कुमार सुराणा
श्री प्रफुल्लचंद बैताला
श्री प्रकाशचंद लोढ़ा

स्थान

सिरसा
जसोल
गुवाहाटी
पंचकुला
सिकन्दराबाद
कटक
बैंगलोर





श्री भंवरलाल गोठी
 श्री चांदरतन बी. दूगड़
 श्री धरमचंद लुंकड़
 श्री धीरज धारीवाल
 श्री गौरव जैन मांडोत
 श्री गौतमचंद समदिया
 श्री हंसराज डागा
 श्री हनुमानचंद लुंकड़
 श्री हसमुख आर. मेहता
 श्री इन्दर कुमार बैंगानी
 श्री जयभगवान जैन
 श्री जितेन्द्र बांठिया
 श्री कमलसिंह खटेड़
 श्री मदनचंद दूगड़ 'जौहरी'
 श्री महावीर बी. सेमलानी

जयपुर
 मुंबई
 चेन्नई
 सूरत
 जयपुर
 जयपुर
 गंगाशहर
 अहमदाबाद
 मुंबई
 दिल्ली
 कैसिंगा
 दिल्ली
 दिल्ली
 मुंबई
 सूरत

श्री राजेन्द्र खटेड़
 श्री राजेन्द्र मेहता
 श्री राकेश बोहरा
 श्री संदीप मुथा
 श्री संजय भंसाली
 श्री संजय मरलेचा
 श्री शुभकरण बोथरा
 श्री सुरेश एम. आच्छा
 श्री सूर्यप्रकाश श्यामसुखा
 श्रीमती सुशीला पुगलिया
 श्री तुलसी कुमार दूगड़
 श्री उत्तमचंद पगारिया
 डॉ. वंदना बरड़िया कुंडलिया
 श्री विजयराज आंचलिया
 श्री विकास कुमार बोथरा

लाडनूं
 जोधपुर
 दुबई
 चेन्नई
 सूरत
 पुणे
 दिल्ली
 चिकमगलूर
 लुधियाना
 कोलकाता
 कोलकाता
 कोल्हापुर
 जयपुर
 चेन्नई
 इस्लामपुर

नाम

श्री अजय चोपड़ा
 श्री अमित नाहटा
 श्री अमृतलाल खांटेड़
 श्री अरविंद कुमार संचेती
 श्री अशोक बरमेचा
 श्री अशोक परमार
 श्री आलोक घोड़ावत
 श्री बाबूलाल बोथरा
 श्री बाबूलाल सेखानी
 श्री बदरीलाल पितलिया
 श्री बजरंग बोथरा
 श्री भैरूलाल चोपड़ा
 श्री बुधमल बैद
 श्री चैनरूप चिंडालिया
 श्री दलपत लोढ़ा
 श्री ओम जालान
 श्री पन्नालाल बैद
 श्री प्रकाश गादिया
 श्री राजेन्द्र बच्छावत
 श्री राजकुमार बोथरा
 श्री राजकुमार नाहटा
 श्री रमेश डागा
 श्री रमेश कोठारी
 श्री रतन दूगड़
 श्री रूपचंद दूगड़
 डॉ. संजय जैन
 श्री संजय सुराणा

स्थान

जयपुर
 बैंगलोर
 नवी मुंबई
 अहमदाबाद
 हैदराबाद
 चेन्नई
 इन्दौर
 कोलकाता
 अहमदाबाद
 बैंगलोर
 नोएडा
 अहमदाबाद
 दिल्ली
 कोलकाता
 जयपुर
 कोलकाता
 जयपुर
 पीपरी-चिंचवड़
 कोलकाता
 सूरत
 दिल्ली
 चेन्नई
 इन्दौर
 कोलकाता
 मुंबई
 सूरत

नाम

श्री दौलत डागा
 श्री जसराज बुरड़
 श्री जीतमल चोरड़िया
 श्री जगतसिंह कोठारी
 श्री कमलकिशोर ललवानी
 श्री कमलसिंह बैद
 श्री कीर्तिभाई मेहता
 श्री महावीर पीपाड़ा
 श्री महेन्द्र भंडारी
 श्री महेन्द्र खांटेड़
 श्री माणकचंद बुच्चा
 श्री मनोज दूगड़
 श्री मंगतराय बंसल
 श्री मनोहरलाल सेठिया
 श्री नरपतसिंह चोरड़िया
 श्री सोहनलाल धाकड़
 श्री सुदर्शन पारख
 श्री सुखराज सेठिया
 श्री सुनील कठोतिया
 श्री सूरजमल जैन
 श्री सुरेन्द्र दूगड़
 श्री सुरेन्द्र घोसल
 श्री सुरिन्दर कुमार मित्तल
 श्री सुरेशचंद गोयल
 श्री सुशील हीरावत
 श्री उम्मेदसिंह बोकड़िया
 श्री विजयकुमार चोरड़िया

स्थान

जयपुर
 अहमदाबाद
 दिल्ली
 कोलकाता
 विजयवाडा
 अहमदाबाद
 वलाजाबाद
 हैदराबाद
 खींवाड़ा
 मुंबई
 हैदराबाद
 जालना
 कोयम्बूरू
 बैंगलोर
 मुंबई
 चेन्नई
 दिल्ली
 गुवाहाटी
 धुलिया
 कोलकाता
 दिल्ली
 मंडी गोबिन्दगढ़
 कोलकाता
 कोलकाता
 चेन्नई
 मुंबई





श्री सतीशचंद घोड़ावत
श्री शांतिलाल बरमेचा
श्री शांतिलाल जैन (गजपुर)
श्री शांतिलाल मारू

जयसिंगपुर
मुंबई
सूरत
उदयपुर

श्री विमल कुमार चिप्पड़
श्री विनोद बैद
श्री विनोद जैन डांगरा
श्री धर्मचन्द चपलोत

चेन्नई
कोलकाता
चेन्नई
उदना

संरक्षक

नाम

श्री अभय दूगड़
श्री भागचंद बरड़िया
श्री दानमल पोरवाल
श्री जसकरण चोपड़ा
श्री कमलसिंह बैद
श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी
श्री ख्यालीलाल तातेड़ा
श्री लक्ष्मीपत दुधेड़िया
श्री महेन्द्र नाहटा

स्थान

बैंगलोर
लाडनूं
भिलाई
सूरत
जयपुर
दिल्ली
मुंबई
बैंगलोर
दिल्ली

नाम

श्री मांगीलाल सेठिया
श्री पुखराज बडोला
श्री राकेश एस. कठोतिया
श्री रमेश कुमार धाकड़
श्री रणजीतसिंह कोठारी
श्री सुमतिचंद गोठी
श्री सुरेन्द्र जैन कांकरिया
श्री सुरेन्द्र कुमार चौरड़िया
श्री स्वतंत्र जैन

स्थान

दिल्ली
चेन्नई
मुंबई
मुंबई
कोलकाता
मुंबई
न्यूजर्सी
कोलकाता
हयुस्टन

नाम

श्री गौरव जैन मांडोत

शिक्षा विभाग

स्थान

जयपुर

पद

संयोजक

समण संस्कृति संकाय

स्थान

दिल्ली
सिन्धनूर
दिल्ली
चेन्नई

माधवनगर

विभागाध्यक्ष
सह-विभागाध्यक्ष
संयोजक जैन विद्या कार्यशाला
संयोजक आगम मंथन प्रतियोगिता
विदेश संयोजक
जैन विद्या परीक्षा

श्री मालचंद बेगानी
श्री हनुमानचंद लुंकड़
श्री पुखराज डागा
श्री गौतमचंद डागा
श्री सुनिल आचंलिया
डॉ. विजय बी. संचेती

श्री विजयराज आंचलिया
श्री बजरंग सेठिया
श्री इन्द्र बैंगानी
श्री रमेश कुमार खटेड़ा
श्री राजकुमार जैन (दक)

आदर्श साहित्य विभाग

चेन्नई
सिलीगुड़ी
दिल्ली
चेन्नई
कांकरोली

विभागाध्यक्ष
संयोजक
कार्यालय-संयोजक
सदस्य
सदस्य

श्री अशोक चिंडालिया
श्री राजेन्द्र मोदी
श्री अरूण संचेती
श्री अमित सेठिया
श्री बिमल गुनेचा
श्री विकास कुमार जैन
श्रीमती उषा धारेवा

प्रेक्षा फाउण्डेशन

मुंबई
इन्दौर
दिल्ली
नागपुर
दिल्ली
मुंबई
कोलकाता

विभागाध्यक्ष
संयोजक-प्रशिक्षक
सह-संयोजक
सह-संयोजक
सह-संयोजक
सदस्य
सदस्य

महाप्रज्ञ ग्लोबल स्कूल समिति

दिल्ली
चेन्नई

सदस्य
सदस्य

श्री पन्नालाल बैद
श्री धर्मचंद लुंकड़





श्री धर्मेन्द्र डागलिया
श्री समकित पारख

श्री बी. रमेशचंद बोहरा
श्री रमेश सूतरिया
श्री प्रफुल्ल बैताला

श्री उत्तमचंद पगारिया
श्री विकास बोथरा
श्री अशोक पारख
श्री रमेश खटेड़

श्री सुरेन्द्र जैन कांकरिया
श्री स्वतंत्र जैन
श्री राकेश बोहरा
श्री अमित बैद
श्री विमल बरड़िया

श्री उमेश कुमार बी. सेठिया
श्री विजय सुराणा
श्री रणजीत लुंकड़

श्री गौतम चौरड़िया
श्री राजकुमार नाहटा
श्री सुमन जैन
श्री संजय धारीवाल

श्री धरमचंद लुंकड़
श्री नवीन बैंगानी
श्री राजेश दूगड़

श्री जयंतीलाल जी. सुराणा
श्री मदनचंद दूगड़ 'जौहरी'

डॉ. प्रताप संचेती
श्री कमलेश एन जैन
श्री ताराचंद जैन

गंगाशहर
मुंबई

पुरस्कार चयन समिति

चेन्नई
मुंबई
कटक

सदस्य
सदस्य

संयोजक
सह-संयोजक
सह-संयोजक

चित्त समाधि परियोजना समिति

कोल्हापुर
इस्लामपुर
सिलीगुड़ी
चेन्नई

संयोजक
सह-संयोजक
सह-संयोजक
सह-संयोजक

विदेश संपर्क समिति

न्यूजर्सी
ह्युस्टन
दुबई
दुबई
न्यूजर्सी

संयोजक
सदस्य
सदस्य
सदस्य
सदस्य

वित्तीय सलाहकारिता समिति

चेन्नई
उज्जैन
कोलकाता

सदस्य
सदस्य
सदस्य

सूचना एवं प्रौद्योगिकी समिति

जलगांव
चेन्नई
चेन्नई

सदस्य
सदस्य
सदस्य

कानूनी सलाहकारिता समिति

रायपुर
दिल्ली
पंचकूला
बैंगलोर

सदस्य
सदस्य
सदस्य
सदस्य

परिसर रख-रखाव समिति

चेन्नई
कोलकाता
वारी

सदस्य
सदस्य
सदस्य

शोध विभाग

चेन्नई
मुंबई

सदस्य
सदस्य

आध्यात्मिक अनुसंधान समिति

गुरुग्राम
मुंबई
मुंबई

विभागाध्यक्ष
सह-विभागाध्यक्ष
सह-विभागाध्यक्ष

विशेष: उक्त सभी विभागों/समितियों में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष एवं मंत्री पदेन सदस्य के रूप में रहेंगे।





न्यासमंडल की ओर से उद्घोषणा



परम पूज्य पंचपरमेष्ठी के श्री चरणों में कोटिशः नमन।

वैराग्य, साधना और करुणा के सजीव स्वरूप, एकादशम अधिशास्ता युग प्रधान परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के श्रीचरणों में श्रद्धापूर्वक सादर वंदना। वंदनीय मुख्यमुनि प्रबर, आदरास्पद साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, वंदनीय साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी, मुनिश्री कीर्तिकुमारजी एवं समस्त चारित्रात्माओं को विनययुक्त वंदन।

जैन विश्व भारती केवल एक संस्था नहीं, यह युग निर्माण की एक जीवंत प्रयोगशाला है। इस संस्था की आधारशिला गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी के दिव्य स्वन्मों से निर्मित हुई, आचार्यश्री महाप्रज्ञ की प्रज्ञा से पुष्ट हुई और आज आचार्यश्री महाश्रमणजी के दिव्य संरक्षण में नए आलोक से प्रकाशित हो रही है।

मैं अपनी ओर से हृदय की गहराइयों से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ कि पूज्यप्रबर की असीम कृपास्वरूप सूरत में आयोजित 53 वीं वार्षिक साधारण सभा में मुझे इस गौरवशाली संस्था के प्रधान न्यासी पद का महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया। यह केवल सम्मान नहीं, बल्कि एक गहन दायित्व-बोध का क्षण था। उस समय मन में यही संकल्प जागा कि इस संस्था की प्रतिष्ठा को कैसे शतगुणित किया जाए और पूज्य आचार्य प्रबर की महान कल्पनाओं को साकार करना हमारा परम कर्तव्य है।

54वें वार्षिक अधिवेशन के इस पावन अवसर पर, जब हम पीछे मुड़ते हैं और विगत वर्ष की यात्रा को देखते हैं, तो हर्ष, संतोष और संकल्प तीनों भाव मन में एक साथ उदित होते हैं। यह वर्ष विकास, नवाचार और आध्यात्मिक ऊर्जा का अद्भुत समन्वय लेकर आया।

योगक्षेम वर्ष की पूर्व तैयारी और उस वर्ष में निकटस्थ सहभागिता की कल्पना भी गौरव की अनुभूति हो रही है। यह आयोजन न केवल आत्मशुद्धि का माध्यम है, बल्कि सामाजिक जागरूकता, आध्यात्मिक साधना और संस्थागत सुदृढता की दिशा में एक सशक्त कदम है।

आज हमारे समक्ष विभिन्न योजनाएँ जो गतिशील हैं, वे संस्था की विविध दिशाओं में हो रही प्रगति का प्रमाण हैं, इन योजनाओं में संस्था की कर्मठ कार्यकारिणी, वित्तीय अनुशासन, और गुरु की कृपा तीनों की सम्मिलित ऊर्जा कार्य कर रही है।

न्यासमंडल केवल अनुमोदक मंडल नहीं, वह दृष्ट्या, संकल्पकर्ता और संरक्षक के रूप में कार्य कर रहा है। संस्था के प्रत्येक निर्णय में पारदर्शिता, दूरदृष्टि और नैतिक प्रतिबद्धता को हमने सर्वोच्च प्राथमिकता दी है।

सभी के लिए यह हर्ष का विषय है कि अब संस्था को अध्यक्ष के रूप में श्री अमरचंद जी लुंकड़ जैसा संयमी, सुव्यवस्थित एवं दूरदर्शी नेतृत्व प्राप्त हुआ है। उनकी नेतृत्वदायी शैली में दृढ़ता, समर्पण और विवेक का सुंदर समन्वय है। हमें विश्वास है कि उनके नेतृत्व में जैन विश्व भारती अभूतपूर्व ऊँचाइयों को स्पर्श करेगी।

कर्मठ मंत्री के रूप में श्री सलिल लोढ़ा के कुशल संगठक विवेक, कोषाध्यक्ष श्री राजेश कोठारी के वित्तीय अनुशासन और परिसर संयोजक श्री धरमचंद लुंकड़ के अनुभवी मार्गदर्शन के लिए भी हार्दिक प्रशंसा प्रकट करते हैं।

आज जैन विश्व भारती केवल संरचना का विस्तार नहीं, बल्कि संवेदना का भी संवर्धन कर रही है। शोध, साधना, सेवा और संस्कृति इन चार स्तंभों पर संस्था की नींव और भी दृढ़ हो रही है।

हम, न्यासमंडल के सभी सदस्यगण, पूर्ण समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ यह संकल्प करते हैं कि जैन विश्व भारती को संयम, साधना और सेवा का विश्व वंदनीय आदर्श बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

पूज्य आचार्यश्री की कृपा, संघ का मार्गदर्शन और समाज का सहयोग- यही हमारे पथ प्रदर्शक हैं।

इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ,

हम सभी न्यासीगण की ओर से, सभी अनुदानदाताओं, अधिकारीगणों, सहयोगी साथियों को हार्दिक साधुवाद अर्पित करते हैं।

सधन्यवाद।

जयतीलाल जी. सुराणा

प्रधान न्यासी, जैन विश्व भारती, लाडनूं





अध्यक्ष की कलम से...

परम पावन पंचपरमेष्ठी को श्रद्धा-सहित वंदन।

परम वंदनीय वैराग्यमूर्ति आचार्यश्री महाश्रमणजी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, मुख्यमुनिश्री महावीर कुमारजी, साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी, जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी तथा समस्त चारित्रात्माओं को कोटि-कोटि सविनय वंदन।

आचार्यश्री तुलसी स्वप्नदृष्टा थे, नये-नये सपने देखना और उन्हें साकार करने का संकल्प लेना उनके जीवन का अभिन्न अंग था। कभी कोई छोटा-सा निमित्त उनके विराट स्वप्न का आधार बन जाता तो कभी बिना किसी निमित्त के ही वे स्वप्नलोक में उड़ान भर लेते थे। सन् 1987 के रतनगढ़ चातुर्मास के दौरान उनके 75वें वर्ष में प्रवेश पर यह निवेदन हुआ कि इस अवसर को किसी विशेष उत्सव के रूप में मनाया जाए या इसे साधु-साध्वियों के निर्माण वर्ष के रूप में अभिहित किया जाए। यही था योगक्षेम वर्ष का प्रथम पृष्ठ।



योग का अर्थ है, अप्राप्त की प्राप्ति और क्षेम का अर्थ प्राप्त की सुरक्षा। इस भाव के आधार पर योगक्षेम वर्ष को आध्यात्मिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण का वर्ष घोषित किया गया। जिसका उद्देश्य था व्यक्तित्व निर्माण और प्रज्ञा-जागरण। प्रारूप तय हुआ कि इस विराट आयोजन का केन्द्र जैन विश्व भारती लाडनूं रहेगा। 15 फरवरी 1989 को आचार्यश्री लाडनूं पथारे और 18 से 20 फरवरी को तपोयोग, जपयोग, ध्यानयोग एवं मौनयोग जैसे विशेष अनुष्ठानों के साथ योगक्षेम वर्ष का शुभारंभ हुआ। पूरे वर्ष भर लाडनूं का वातावरण अनुष्ठानमय रहा और प्रज्ञा की ज्योत जली रही।

ई. सन् 1989 में जो एक स्वप्न था 1990 में पूर्ण हुआ और फिर स्मृतियों में बस गया। किंतु यह हमारा सौभाग्य है कि वर्ष 2026 में पुनः उसी पावन धरती पर पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में योगक्षेम वर्ष का भव्य आयोजन होने जा रहा है मानो इतिहास अपने आप को दोहरा रहा हो। जैसे 1989 में प्रशिक्षण, व्यक्तित्व निर्माण और नवउत्पाह का संचार हुआ था, वैसे ही इस बार भी प्रज्ञा के दीप पुनः प्रज्वलित होंगे।

विगत छह माह से जैन विश्व भारती में भी निरंतर विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों की शृंखला चल रही है जो ऐसा लगता है अतीत का पुनरावर्तन हो रहा है। अब हम सब योगक्षेम वर्ष के साक्षी बनने जा रहे हैं यह अवसर भी किसी स्वप्न से कम नहीं। वर्तमान में जैन विश्व भारती में अनेकों विशाल परियोजनाएं गतिशील हैं महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, चित्त समाधि केंद्र, प्रज्ञा केंद्र, सेवाभावी ओ.पी.डी. योगक्षेम भवन-1 व 2, संवाद अतिथि गृह, सचिवालय, नवग्रह पार्क आदि शीघ्र ही पूर्ण होने की ओर हैं।

गुवाहाटी भवन, बीकानेर भवन, दूगड़ गेस्ट हाउस, विमल विद्या विहार ऑडिटोरियम, जय तुलसी पाठशाला, जैन विश्व भारती चिकित्सालय, उपासक भवन, रोहिणी भवन, इत्यादि कार्य तीव्र गति से आगे बढ़ रहे हैं। नवनिर्माण के साथ-साथ नवीनीकरण व सौंदर्यीकरण कामधेनु पार्क, नेहरू पार्क, शुभम् गार्डन, भिक्षु विहार अहिंसा भवन, विभिन्न आवासीय इकाइयां आदि भी निरंतर रूप ले रहे हैं। परिसर विकास के साथ-साथ शैक्षणिक इकाईयां उत्कृष्ट परिणाम दे रही हैं साहित्य-संपदा का विस्तार प्रेरणादायी है और प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा शिविर कार्यशालाएं तथा प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष की गतिविधियां आत्मनिर्भरता और ध्यान, साधना को नई दिशा दे रही हैं। जैन विद्या परीक्षाएं शोध कार्य आगम संपादन आगम अर्पण योजना सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला की नवीन व्यवस्थाएं सब मिलकर विकास की नई गाथा लिख रहे हैं।

पूज्यप्रवर ने हमें योजनाओं के सृजन और निष्पादन का जो दायित्व सौंपा है वह अकल्पनीय सौभाग्य है। साध्वीप्रमुखाश्री, मुख्यमुनिश्री एवं साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी के मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। मुनिश्री कीर्तिकुमारजी की दूरदृष्टि और प्रेरणा ने हमें सदैव अग्रसर किया है आपकी चिंतन-शक्ति हमारे लिए अमूल्य प्रेरणा-स्रोत है।

मुझे अध्यक्षीय दायित्व पुनः मिलने के साथ टीम चयन का अवसर भी मिला। मंत्री श्री सलिल लोढ़ा का विशेष सहयोग और मेरे छोटे भाई श्री धर्मचंद लुंकड़ द्वारा अर्थसंकलन के साथ निर्माण कार्य का व्यक्तिगत पर्यवेक्षण मेरे लिए आश्वासन और प्रेरणा दोनों हैं। पूरी टीम ने तन-मन-धन से साथ दिया जिसके लिए मैं सभी के प्रति कृतज्ञ हूं। मंत्री महोदय ने अपनी लेखनी से मंत्री प्रतिवेदन में प्रत्येक गतिविधि को सुरुचिपूर्ण ढंग से समाहित किया है, इसके लिए विशेष आभार। कोष की सुरक्षा के दायित्व को दक्षता के साथ निर्वहन करने के लिए कोषाध्यक्ष श्री राजेश कोठारी के प्रति भी हृदय से आभार।

न्यास मंडल के सहयोग और सहभागिता के बिना कोई भी निर्णय संभव नहीं था। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे प्रत्येक निर्णय में न्यास मंडल ने न केवल विश्वास किया बल्कि समय पर रचनात्मक सुझाव और प्रेरणादायी मार्गदर्शन भी प्रदान किया। विशेष रूप से प्रधान न्यासी श्री जयंतीलालजी सुराणा का हमारे कार्यों के प्रति अटूट विश्वास और निर्णयों में सकारात्मक सहभागिता हम सबके लिए ऊर्जा-स्रोत रही है। उनके साथ-साथ सभी न्यासीण जिनका दृष्टिकोण दूरदर्शी है और जिनकी सोच संस्थान के विकास और उत्थान के लिए सदैव तत्पर रहती है उनके प्रति भी मैं अपनी गहन कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। न्यास मंडल की सामूहिक दूरदृष्टि समय पर लिये गये निर्णय और संस्था के प्रति समर्पित भाव ने जैन विश्व भारती की प्रगति को नई दिशा प्रदान दी है। इस सामूहिक समर्पण और सहभागिता के बिना हम आज इस मुकाम पर नहीं पहुँच सकते थे। साथ ही मैं पंचमंडल का हार्दिक आभार जिन्होंने यथासमय यथेष्ट मार्गदर्शन प्रदान किया हमारे परामर्शकगण का भी विशेष धन्यवाद जिनके अनुभवी मार्गदर्शन और रचनात्मक सुझावों ने हमें कई महत्वपूर्ण निर्णयों में सही दिशा दी। संरक्षकगण का स्नेहिल सहयोग और संरक्षण की भावना हमारे लिए सदैव शक्ति का आधार रही है। मैं विभागाध्यक्षों के परिश्रम और नेतृत्व की भी सराहना करता हूं जिन्होंने अपने-अपने विभागों में योजनाओं को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया और समय पर उत्कृष्ट परिणाम दिये। इसी क्रम में समिति सदस्यों का भी आभार जिनके सक्रिय सहयोग और सामूहिक सहभागिता से अनेक योजनाएं धरातल पर उत्तर सकीं। इन सभी का योगदान चाहे प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष जैन विश्व भारती के विकास पथ पर अमूल्य है। किसी भी भूल के लिए सहदय क्षमा चाहता हूं और सभी के मंगल की कामना करता हूं।

टी. अमरचंद लुंकड़, अध्यक्ष







जैन विश्व भारती की 54वीं वार्षिक साधारण सभा पर प्रस्तुत -मंत्री प्रतिवेदन



परमाराध्य परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के श्रीचरणों में भावपूर्ण वंदन।

श्रद्धेया साध्वीप्रमुखा साध्वीश्री विश्रुतविभाजी, मुख्य मुनि मुनिश्री महावीरकुमारजी, साध्वीवर्या साध्वीश्री संबुद्धयशाजी तथा समस्त चारित्रात्माओं के पावन चरणों में सविधि वंदन। जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी को सादर वंदन।

तेरापंथ स्थापना का यह त्रिशताब्दी वर्ष हमारे लिए अद्वितीय आध्यात्मिक सौभाग्य का क्षण है। किसी भी धार्मिक संस्था के लिए यह समयावधि भले ही दीर्घ न लगे किंतु इन तीन शतकों में तेरापंथ ने जो इतिहास रचा है, वह गौरव और प्रेरणा का अमिट स्रोत है। संस्थापक आचार्य भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी के इस पावन अवसर पर योगक्षेम वर्ष का आरंभ होना वास्तव में ऐतिहासिक और अद्वितीय संगम है। यह भी एक अविस्मरणीय क्षण होगा जब जैन विश्व भारती में योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष का भव्य समापन संपन्न होगा।

मंत्री प्रतिवेदन केवल वार्षिक क्रियाकलापों का औपचारिक विवरण भर नहीं है यह अतीत का दर्पण वर्तमान का संरक्षक और भविष्य का पथदर्शक है। यह हमारी उपलब्धियों का लेखा-जोखा ही नहीं बल्कि आगे की दिशा में प्रेरणा और संकल्प का भी आधार है। इस वर्ष जैन विश्व भारती के परिसर में योगक्षेम वर्ष की तैयारियों के साथ ही अनेक भव्य निर्माण एवं विकास कार्य प्रारंभ हुए। यह पूज्य गुरुदेव की कृपा-दृष्टि और दूरदर्शिता ही है कि सम्माननीय श्री अमरचंदंजी लुंकड़ को पुनः जैन विश्व भारती का दायित्व सौंपा गया जिसके परिणामस्वरूप कार्य योजनाएं समयबद्ध गति से पूर्ण हो रही हैं।

सम्माननीय अध्यक्ष श्री टी. अमरचंदंजी लुंकड़, मुख्य न्यासी श्री जयंतिलालजी सुराणा, पदाधिकारीगण न्यासीगण, पंचमंडल, परामर्शकगण, संरक्षकगण, विभागाध्यक्ष, समिति सदस्य, संचालिका समिति के सदस्यगण और जैन विश्व भारती परिवार के सभी सम्मानित सदस्यगण आप सभी को सादर जय जिनेन्द्र। सत्र 2024-26 के प्रथम वर्ष की पूर्णता के इस अवसर पर जब हम आचार्य तुलसी द्वारा उपमित कामधेनु-जैन विश्व भारती के कार्यों की ओर दृष्टि डालते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद और सजग व सक्रिय टीम के सहयोग से विकास की एक अनवरत शृंखला नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। चूँकि मैं एक पेशेवर चार्टर्ड अकाउंटेंट हूँ, अंकों के सौंदर्य और उनके जादुई संसार से मेरा विशेष लगाव स्वाभाविक है। यदि संस्था की समृद्धि को अंकों में परिएकर सहेज़ँ, तो भी यह मेरे लिए अपार प्रसन्नता का विषय है कि इस कार्यकाल में अनुदान घोषणाओं ने एक नया स्वर्णिम कीर्तिमान स्थापित किया है। यह निरंतर प्रगति और उन्नति हमें उस समृद्ध जैन विश्व भारती की झिलक दिखाती है, जो हमारे लिए योगक्षेम वर्ष का प्रवेशद्वार बनकर सामने खड़ी है।

अचिन्तनीय और अकल्पनीय कार्यों की सफल पूर्णता ने यह सिद्ध कर दिया है कि जहाँ गुरु-दृष्टि का आशीर्वाद हो वहाँ कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं रहता। हमारी यही मंगलकामना है कि गुरु-दृष्टि की यह सृजनधारा निरंतर प्रवाहित होती रहे। योगक्षेम वर्ष के दृष्टिकोण से परिसर में संचालित विकास कार्यों के प्रति हम पूर्णतः आश्वस्त हैं क्योंकि अग्रज श्री धरमचंदंजी लुंकड़ (पूर्व अध्यक्ष) जैन विश्व भारती ने न केवल अर्थ-संकलन की महती जिम्मेदारी निर्भाव है बल्कि निर्माण कार्य का व्यक्तिगत पर्यवेक्षण करते हुए इसे सफल समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण बनाने में अपना अद्वितीय योगदान दिया है। उनकी दूरदृष्टि परिश्रम और समर्पण ने इन कार्यों को प्रेरणादायी स्वरूप प्रदान किया है।

इस वर्ष प्रतिवेदन की प्रस्तुति में भी एक विशेष परिवर्तन किया गया है क्योंकि योगक्षेम वर्ष के दृष्टिकोण से जैन विश्व भारती में आमूलचूल परिवर्तन घटित हुए हैं और हम इन्हें प्राथमिकता के साथ प्रस्तुत करना अपना सौभाग्य मानते हैं।

गुरु-दृष्टि, सामूहिक परिश्रम और समाज-हित की भावना ये तीन आधार स्तंभ जैन विश्व भारती की शक्ति हैं। पिछले 54 वर्षों में हमने जो उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं वे केवल अतीत की स्मृतियाँ नहीं बल्कि भविष्य की प्रेरणाएँ हैं।

हमारा संकल्प है कि शिक्षा, सेवा, साधना और समन्वय के मार्ग पर चलते हुए हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक और भी सशक्त, उन्नत और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध जैन विश्व भारती का निर्माण करें। पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद और हमारी सजग-सक्रिय टीम के समन्वित प्रयासों से विकास कार्यों की शृंखला प्रतिवर्ष नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। मेरी यही कामना है कि गुरु-दृष्टि से यह सृष्टि सृजन अनवरत चलता रहे।

एशिया के मैनचेस्टर के रूप में विख्यात अहमदाबाद महानगर में आयोजित इस 54वीं वार्षिक साधारण सभा में आप सभी सम्माननीय सदस्यों का स्वागत करते हुए हम हर्ष और गौरव की अनुभूति कर रहे हैं।

आचार्यश्री तुलसी ने जैन विश्व भारती की कल्पना ऐसे संस्थान के रूप में की थी, जो कामधेनु की भाँति समस्त मानवता और विशेषकर जैन समाज की आकांक्षाओं की पूर्ति में समर्थ हो। हमारा यह सौभाग्य है कि वर्तमान अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जैन विश्व भारती को जय कुंजर -विशालकाय हाथी की उपमा से उपमित किया और यह पूज्यप्रवर की आर्ष-वाणी का प्रताप है कि जैन विश्व भारती जय कुंजर के समान निरन्तर समृद्ध हो रही है। आज अद्विशताब्दी से अधिक की यात्रा में जैन विश्व भारती ने अनेक ऐतिहासिक उपलब्धियाँ अर्जित की हैं और गौरव के शिखरों पर प्रतिष्ठित हो चुकी है। संस्था के उत्थान, उपलब्धियों की गाथाएं, विकास की यात्राएं और भविष्य की रूपरेखा -इन सबका संपूर्ण चित्रण इस प्रतिवेदन के माध्यम से आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि प्रत्येक सदस्य संस्था की गतिविधियों से जुड़ा रहे। शिक्षा, सेवा, शोध, साहित्य, साधना, समन्वय और संस्कृति इन सप्त सकारों की सृजनात्मक यात्रा का यह प्रतिवेदन हमारे सम्माननीय जैन विश्व भारती परिवार के समक्ष गर्व और कृतज्ञता के साथ प्रस्तुत है।







पावन-पाथेय

जैन विश्व भारती संस्थान एक तपोवन का रूप लेता जा रहा है। इसके प्रकाम्पन इंगित दे रहे हैं कि प्राचीनकाल में यह कोई तपोभूमि रही है। प्रारम्भ में अधिसंख्य लोग इसके स्थायित्व को लेकर आश्वस्त नहीं थे। किन्तु मुझे बराबर यह आभास हो रहा था कि जैनविश्वभारती समाज के लिए कामधेनु है। काश! समाज के लोग इसका दोहन करना सीख लें। दोहन की कला ज्ञात न हो तो अमृत पिलाने वाली धेनु लात भी मार सकती है। इस स्थिति को मैं आज भी अनुभव कर रहा हूँ। सन्तोष की बात यह है कि अब समाज के अधिकतम चिन्तनशील लोगों का विधायक चिन्तन इसके साथ जुड़ रहा है।- आचार्य तुलसी

जैन विश्व भारती परिसर विकास की दिशा में एक युगांतकारी पहल



मुझे जैन विश्व भारती के इस कार्यकाल में दायित्व प्राप्त हुआ - परिसर विकास के संयोजक का योगक्षेम वर्ष का स्वागत और अनेकों कल्पनाएं जेहन में चलचित्र की भाँति चलने लगी। जैन विश्व भारती की सशक्त टीम के साथ सर्वप्रथम परियोजनाओं की सूची तैयार की और तदुपरान्त कार्य योजनाओं का शुभारम्भ हुआ। गुरुदेव के आशीर्वाद से अकल्पनीय रूप से योजनाएं गति प्राप्त करती गई। जैसा मैंने सुना था कि जैन विश्व भारती कामधेनु है और सबके स्वज्ञ पूर्ण करती है, मुझे भी यह अनुभव हुआ कि जब अनुदानदाताओं का अप्रतिम सहयोग मुझे प्राप्त हुआ। मैंने दो वर्ष के कार्यकाल में परिसर को समृद्ध करने का एक स्वज्ञ देखा और आज यह स्वज्ञ साकार होता प्रतीत हो रहा है। मन में आत्मतोष है परन्तु अभी यात्रा रुकी नहीं है, निरन्तर गतिमान है। योगक्षेम वर्ष में जैन विश्व भारती का यह

परिसर सुखद व साताकारी प्रवास की धुरी बने और संस्था का गैरव निरन्तर संवर्द्धित हो। - धरमचंद लुंकड़, परिसर संयोजक

जैन विश्व भारती यह केवल एक संस्था नहीं बल्कि गुरु दृष्टि से प्रसूत वह तपोभूमि है जहाँ संघ संस्कार अंकुरित होते हैं और मानवता अपने श्रेष्ठतम रूप में अभिव्यक्त होती है। आचार्यश्री तुलसी द्वारा कल्पित यह पावन भूमि आज आचार्यश्री महाश्रमणजी की प्रज्ञा एवं प्रेरणा से योगक्षेम वर्ष 2026-27 के रूप में एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण की ओर अग्रसर है। यह वर्ष केवल एक तिथि या कालखंड नहीं बल्कि एक जाग्रत चेतना एक संघ, समर्पित, संकल्प और एक संस्था से तीर्थ बनने की यात्रा है।

योग और क्षेम - आत्मोक्तर्ष और संरक्षण का दिव्य संगम, योग का अर्थ है आत्मिक उत्थान साधना, संयम, शुद्ध विचार और आध्यात्मिक बोध की प्राप्ति। क्षेम है उस प्राप्त चेतना की सुरक्षा समृद्धि और सततता। इस योगक्षेम वर्ष में जैन विश्व भारती दोनों आयामों को साथ लेकर चल रही है जहाँ एक ओर साधकों की साधना को पोषित किया जा रहा है वहाँ दूसरी ओर संस्था की मूल संरचना व्यवस्थाएं और सेवाओं को सशक्त रूप में स्थापित किया जा रहा है।

परिसर विकास -एक द्रष्टव्य दूरदर्शी और दिव्य यात्रा - योगक्षेम वर्ष 2026-27 के लिए जैन विश्व भारती का संपूर्ण परिसर एक नये रूप नयी चेतना और नये वातावरण की ओर उन्मुख है। यह विकास केवल भौतिक संसाधनों का विस्तार नहीं बल्कि संघ परंपरा की चेतना को मूर्त रूप देने का सृजनात्मक प्रयास है।

संस्था से तीर्थ की ओर एक चेतना का उत्कर्ष -यह परिसर अब केवल एक संस्था नहीं रहेगा अपितु संघ की साधना संयम और संस्कृति का जीता जागता प्रतीक बनेगा एक ऐसा आध्यात्मिक तीर्थ जहाँ हर श्रावक हर आगंतुक स्वयं को आचार्यश्री की प्रेरणा के सान्निध्य में अनुभव करेगा। जहाँ साधना और सेवा का संगम परंपरा और प्रगति का संतुलन और योग व क्षेम का सामंजस्य विद्यमान होगा। जैन विश्व भारती भवन नहीं भविष्य का निर्माण कर रही हैं। यह कार्य ईंट और पत्थर का नहीं श्रद्धा और संकल्प का है। यह सेवा प्रकल्प नहीं एक संघीय संकल्प है जो जैन विश्व भारती को युगों तक प्रकाशित करने वाला दीपसंभ बनाएगा। नए स्वरूप में जीवंत कर रही है, ऐसा तीर्थ जो आने वाली पीढ़ियों को तप, त्याग और तत्त्वज्ञान से जोड़े रखे।

परिसर विकास की यह व्यापक योजना तीन मुख्य आयामों पर केंद्रित है

नवनिर्माण (New Initiatives) : ऐसे नये प्रकल्पों का निर्माण किया जा रहा है, जो साधना, शिक्षा, सेवा और अनुसंधान के क्षेत्र में जैन विश्व भारती को और अधिक प्रगतिशील और प्रभावी बनाएंगे।

पुनर्निर्माण (Revival with Purpose) : संस्था के पूर्ववर्ती भवनों विभागों और व्यवस्थाओं को मूल भावना के अनुरूप नवजीवन देकर उन्हें और अधिक प्रासंगिक, उपयोगी और आध्यात्मिक गरिमा और अधिक बढ़ सके ऐसे बनाना।

सौन्दर्यकरण (Spiritual Aesthetics) : परिसर के प्रत्येक कोने में सौंदर्य, सात्त्विकता और शांति की ऐसी अभिव्यक्ति करना, जहाँ प्रवेश करते ही मन श्रद्धा और साधना से भर उठे। साधना, अध्ययन और आत्म-चिंतन की ऊर्जा स्वतः प्रवाहित हो।

भौतिक संरचना का सशक्तीकरण - नव निर्माणों के माध्यम से

दुगड़ अतिथिगृह का शिलान्यास एवं निर्माण कार्य प्रगति पर

जैन विश्व भारती के विकास पथ में द्विमंजिला अतिथिगृह का निर्माण वर्धमान ग्रंथागार रोड पर किया जा रहा है। श्री बुधमलजी- सुरेन्द्रकुमारजी, तुलसीकुमारजी, कमलकुमारजी दुगड़ (कल्याण मित्र परिवार) के सौजन्य से दुगड़ अतिथिगृह का शिलान्यास जैन संस्कार विधि से संपन्न होकर







निर्माण कार्य का शुभारंभ हुआ। यह भवन, आगंतुकों एवं साधकों के लिए सुविधा और सौहार्द का केंद्र बनेगा, तथा संस्था की सेवा-संस्कृति को एक नई ऊँचाई प्रदान करेगा। योगक्षेम वर्ष 2026 के आलोक में यह निर्माण, आत्मीयता और समर्पण का सजीव प्रतीक है। शिलान्यास के इस अवसर पर कल्याण मित्र शासनसेवी श्री बुधमल जी दुगड़ परिवार की ओर से श्री सुरेन्द्र कुमार दुगड़ व श्री तुलसी कुमार दुगड़ व जैन विश्व भारती के पदाधिकारीगण भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। अनुदानदाता परिवार के प्रति जैन विश्व भारती परिवार की ओर से आभार।

बैद अतिथिगृह का शिलान्यास एवं निर्माण कार्य प्रगति पर

जैन विश्व भारती के मुख्य द्वार के समीप स्व. श्रीमती उषा बैद की पुण्य स्मृति में श्री विनोदजी बैद एवं श्री अरिहंत बैद (छापर-कोलकाता) के सहयोग और सौजन्य से बैद अतिथिगृह के निर्माण का शुभारंभ हुआ। जैन संस्कार विधि से भूमि शिलान्यास किया गया यह भवन, अध्यात्म-साधना हेतु आगंतुकों को शांतिपूर्ण एवं गरिमामय वातावरण प्रदान करेगा। यह शिलान्यास, स्मृति और सेवा का अनुपम संगम है, जो संस्था की आध्यात्मिक गरिमा को और प्रगाढ़ करेगा। इस अवसर पर श्री विनोदजी-अरिहंत बैद व जैन विश्व भारती के पदाधिकारीगण भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। अनुदानदाता परिवार के प्रति जैन विश्व भारती परिवार की ओर से आभार।

बीकानेर भवन का शिलान्यास एवं निर्माण कार्य प्रगति पर

जैन विश्व भारती में बीकानेर भवन का शिलान्यास केवल एक भवन निर्माण की शुरुआत नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक भावनात्मक संबंध की पुनः अभिव्यक्ति है। बीकानेर -जहाँ से आचार्यश्री तुलसी का आध्यात्मिक जीवन प्रारंभ हुआ, वही नगर जिसने तेरापंथ धर्मसंघ को सशक्त आधार प्रदान किया। जैन विश्व भारती में बीकानेर भवन के नाम से एक नवीन भवन का शिलान्यास होना, तेरापंथीय विरासत को स्थायी स्वरूप प्रदान करने का प्रयास है। यह भवन न केवल आगंतुकों व श्रावकों के लिए सुविधा का केन्द्र बनेगा, बल्कि बीकानेर के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक भी होगा। यह भवन होगा एक सेतु विगत गौरव और भविष्य की प्रेरणा के बीच। द्विमंजिला भवन का शिलान्यास स्व. श्री नथमलजी-तोलारामजी-सूरजमलजी, चांदमलजी, गणेशमलजी बोथरा परिवार बीकानेर के सौजन्य से श्री गणेशमलजी बोथरा द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्था के पदाधिकारीगण की उपस्थिति से आयोजन गौरवपूर्ण बना। अनुदानदाता परिवार के प्रति जैन विश्व भारती परिवार की ओर से आभार।

संवाद अतिथिगृह का पुनर्निर्माण

जैन विश्व भारती परिसर में संवाद अतिथिगृह पूर्व से निर्मित था परन्तु युगानुकूलता की दृष्टि से उस भवन को पूर्णतः नवीन रूप में बनाए जाने का निर्णय किया गया। जैन विश्व भारती के पावन परिसर में संवाद अतिथि ग्रह के निर्माण हेतु बच्छावत परिवार, चूरू-कोलकाता द्वारा जैन संस्कार विधि से किया गया। यह शिलान्यास न केवल संस्था की आध्यात्मिक-सांस्कृतिक प्रगति की दिशा में एक सशक्त कदम है, अपितु यह श्रद्धा, सेवा और समर्पण की अनुपम मिसाल भी है। यह भवन जैन विश्व भारती में विद्वानों, आगंतुकों व साधकों के लिए एक ऐसा संवाद-केन्द्र बनेगा जहाँ आत्मिक-चिंतन और वैचारिक समागम का अद्वितीय संगम होगा। श्री राजेन्द्र कुमारजी, सुरेन्द्र कुमारजी, महेन्द्र कुमारजी बच्छावत, चुरु-कोलकाता (बच्छावत ग्रुप) के सहयोग द्वारा निर्माण का शुभारंभ हुआ। अनुदानदाता परिवार के प्रति जैन विश्व भारती परिवार की ओर से आभार।

मनुहार शॉपिंग कॉम्प्लेक्स का शिलान्यास

संस्था के संघठन की सेवा भावना, और आर्थिक स्वावलंबन की भावना के साथ समन्वय प्रकल्प के रूप में मनुहार शॉपिंग कॉम्प्लेक्स का जैन संस्कार विधि से शिलान्यास भी विशेष उपलब्धि है। यह शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जैन विश्व भारती के मुख्य मार्ग पर स्थित होगा। वर्ष के दौरान आगंतुकों और श्रावकों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु यह केंद्र “मनुहार” अपने नाम को सार्थक करता हुआ सात्त्विक जीवनशैली और संघीय सेवा का संवाहक बनेगा। स्व. श्री हाथीमलजी- जसकरणजी बैंगाणी की पुण्य स्मृति में श्री जगतसिंहजी बैंगाणी परिवार (लाडनूं-कोलकाता) के सौजन्य से जैन संस्कार विधि से इसका निर्माण कार्य का शुभारंभ किया गया एवं निर्माण कार्य प्रगति पर है। अनुदानदाता परिवार के प्रति जैन विश्व भारती परिवार की ओर से आभार।

प्रेक्षा वाटिका का शिलान्यास - एक आध्यात्मिक एवं पर्यावरणीय जागरण की पहल

जैन विश्व भारती, लाडनूं के पावन परिसर में प्रेक्षा वाटिका के शिलान्यास का शुभ अवसर संस्था के आध्यात्मिक, मानसिक एवं पर्यावरणीय मूल्यों की दिशा में एक सशक्त और सार्थक कदम है। यह नवप्रस्तावित वाटिका न केवल प्राकृतिक सौंदर्य और हरियाली का केन्द्र बनेगी, अपितु आत्म-शुद्धि, आंतरिक शांति और साधना के इच्छुक साधकों के लिए यह एक आदर्श ध्यानस्थली के रूप में विकसित होगी। एक ऐसे वातावरण की सृष्टि जहाँ प्रकृति, ध्यान और आत्मिक साधना एक-दूसरे में समरस हो सकें। प्रेक्षाध्यान की अनुशासित परंपरा से अनुप्राणित यह स्थल साधना, चिंतन और आत्मिक उन्नयन का एक जीवंत केन्द्र बनकर उदित होगा। शांति, एकांत और सात्त्विक वातावरण में निर्मित यह प्रेक्षा वाटिका, ध्यान और योग के लिए विशेष रूप से अनुकूल सुविधाओं से सुसज्जित होगी। विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि यह प्रकल्प आधुनिकता के स्थान पर प्रकृति और परंपरा से जुड़ी स्थापत्य शैली को अपनाते हुए केलू की सामग्री से निर्मित, झोपड़ी रूपी ध्यान-कक्षों के रूप में आकार लेगा जो तप, साधना और आत्म-अन्वेषण के लिए अत्यंत उपयुक्त वातावरण प्रदान करेंगे। इस का शिलान्यास श्री सूरजमल-गीतादेवी सूर्या एवं श्री नानकचंद-शांतादेवी तनेजा परिवार (धुलिया, महाराष्ट्र) के द्वारा किया गया एवं विभिन्न अनुदानदाता परिवारों द्वारा भी सहयोग प्रदान किया गया है उनके प्रति जैन विश्व भारती परिवार की ओर से आभार।





जय तुलसी पाठशाला - आगम अध्ययन केंद्र का शिलान्यास

जैन विश्व भारती, लाडनूँ के पुण्यतम परिसर में आध्यात्मिक चेतना और आगमिक परंपरा के पुनरुत्थान की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल के रूप में “जय तुलसी पाठशाला - आगम अध्ययन केंद्र” की आधारशिला विधिवत रूप से रखी गई। यह केंद्र ‘योगक्षेम वर्ष - 2026’ के अंतर्गत संघ और समाज की ज्ञान-संवर्धन यात्रा का एक उज्ज्वल अध्याय बनेगा, जहाँ चारित्रात्माओं, विद्यार्थियों, शोधार्थियों और जिज्ञासु आत्माओं को आगमिक शास्त्रों का गहन अध्ययन, आत्मसाधना, और प्रायोगिक अनुप्रयोग की व्यापक सुविधा प्राप्त होगी। जय तुलसी पाठशाला का उद्देश्य केवल शास्त्रों का पठन-पाठन भर नहीं, अपितु आत्मविकास, चारित्र निर्माण और साधना की सुदृढ़ परंपरा को समकालीन संदर्भ में पुनर्जीवित करना है। यहाँ नियमित आगमिक कक्षाएं आयोजित होंगी, विद्यार्थियों हेतु श्रुत परीक्षाएं एवं विशिष्ट आगम शिविर संचालित होंगे, साधना शिविरों में आत्मानुशासन और ध्यान के विशेष सत्र होंगे तथा समय पर प्रवचन शृंखलाएं एवं विद्वान व्याख्यानमालाएं भी आयोजित की जाएंगी। इस आध्यात्मिक केंद्र के निर्माण हेतु उदार भाव से श्री जयंतीलालजी सुराणा -विजयसुराणा एवं सुयश सुराणा (बगड़ी-चेन्नई) परिवार ने अर्थ सहयोग प्रदान किया है। अनुदानदाता परिवार के प्रति जैन विश्व भारती परिवार की ओर से आभार।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ‘रोहिणी’ भवन का पुनर्निर्माण आरंभ

तेरापंथ की केंद्रीय संस्था अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का ‘रोहिणी’ भवन, अपने गौरवशाली इतिहास के साथ वर्षों से संगठनात्मक गतिविधियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और आवासीय सुविधाओं का केंद्र रहा है। इस भवन में कार्यालय के साथ-साथ महिला मंडल के सदस्य परिवारों के लिए आवासीय कक्ष, क्लासरूम हॉल एवं अन्य आवश्यक सुविधाएँ विद्यमान थीं। समय के साथ इसकी संरचना पुरानी हो जाने के कारण नवीन, सुदृढ़ और आधुनिक भवन निर्माण की आवश्यकता अनुभव की गई। नवनिर्मित होने वाला यह दो मंजिला भवन न केवल संगठन के प्रशासनिक कार्यों का केंद्र होगा, बल्कि इसमें अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त कार्यालय, आवासीय कक्ष, विशाल क्लासरूम हॉल, बैठक कक्ष और आवश्यक आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध होगा। यह भवन महिला मंडल की गतिविधियों को और भी सुदृढ़, संगठित और प्रभावशाली बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

इस परियोजना को साकार करने का सौभाग्य अनुदानदाताओं श्री दौलतजी-श्रीमती सरिता डागा, श्री प्रवीणजी- श्रीमती नीतू ओस्तवाल तथा श्री राकेशजी-श्रीमती आरती कठोतिया को प्राप्त हुआ। दिनांक 25 जुलाई 2025 को जैन संस्कार विधि के साथ शिलान्यास संपन्न हुआ, जिसमें महिला मंडल और जैन विश्व भारती के पदाधिकारी, स्थानीय गणमान्यजन एवं अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे। इस योगदान के लिए सम्पूर्ण जैन विश्व भारती परिवार, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल और अनुदानदाता परिवारों के प्रति हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता है।

अभ्युदय - उपासक भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर

जैन विश्व भारती परिसर में स्थित जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का कार्यालय अभ्युदय सदैव संगठनात्मक कार्यों और सामाजिक सेवा का केंद्र रहा है। इसी अभ्युदय की प्रेरणादायी छाया में एक नई परिकल्पना आकार ले रही है उपासक भवन। यह भवन न केवल उपासकों के ठहराव और साधना का स्थल होगा, बल्कि महासभा के कार्यालय का भी नवीन एवं सुव्यवस्थित केंद्र बनेगा, जहाँ से संगठनात्मक कार्य और भी प्रभावी रूप से संचालित हो सकेंगे। दिनांक 17 जुलाई 2024 को महासभा एवं जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति में, जैन संस्कार विधि से इस भवन का शिलान्यास संपन्न हुआ। वर्तमान में उपासक भवन का कार्य सुचारु एवं तीव्र गति से प्रगति कर रहा है। भवन की रूपरेखा में पारंपरिक वास्तुशैली की गरिमा और आधुनिक सुविधाओं का संयोजन किया गया है। इसमें उपासकों के लिए आरामदायक आवास, साधना एवं प्रवचन कक्ष, महासभा का सुव्यवस्थित कार्यालय, सभा एवं बैठक स्थल, स्वच्छता और जल सुविधाएं जैसी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं, ताकि आने वाले उपासकों को यहाँ आत्मिक शांति, सुविधा और संगठनात्मक सहयोग का पूर्ण अनुभव हो सके। इस परियोजना में योगदान देने वाले अनुदानदाता परिवार और जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा परिवार के प्रति जैन विश्व भारती परिवार की ओर से हृदय से आभार और अभिनंदन। अनुदानदाता श्री जयंतीलालजी-श्री विजय-श्री सुयश सुराणा, बगड़ी-चेन्नई के प्रति हार्दिक आभार।

विमल विद्या विहार - नवीन ऑडिटोरियम का निर्माण कार्य पूर्णता की ओर

विमल विद्या विहार के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ने जा रहा है। 4 जुलाई 2024 को जैन संस्कार विधि के साथ संपन्न हुए नवीन ऑडिटोरियम के शिलान्यास के बाद से निर्माण कार्य अद्वृत गति से प्रगति कर रहा है। आधुनिक तकनीकी मानकों और सौदर्यपूर्ण वास्तुकला का अनूठा संगम प्रस्तुत करता यह भव्य ऑडिटोरियम अब अपने अंतिम चरण में है और आगामी माह में पूर्ण होकर लोकार्पण के लिए तैयार होगा। संरचना का मुख्य ढांचा पूरी मजबूती के साथ साकार रूप प्राप्त कर चुका है। वर्तमान में विद्युत संयोजन, प्रकाश व्यवस्था एवं आंतरिक सज्जा के कार्य तीव्र गति से चल रहे हैं। दर्शकों के लिए आरामदायक बैठने की व्यवस्था, पर्याप्त रोशनी, और वातानुकूलन की सुविधा इसे हर मौसम में उपयोग के लिए आदर्श बनाएंगी। यह ऑडिटोरियम न केवल शैक्षणिक आयोजनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का केंद्र बनेगा, बल्कि विद्यार्थियों की प्रतिभा, कला और सृजनशीलता को एक भव्य मंच प्रदान करेगा। इस निर्माण कार्य को संभव बनाने में श्री कमलसिंह-डा. रत्ना बैद, जे.एल.सी. इलेक्ट्रोमेट, लाडनूँ-जयपुर का जो सहयोग और उदारता रही है, वह सराहनीय है। जैन विश्व भारती परिवार उनके इस योगदान के लिए हृदय से आभार व्यक्त करती है।





विमल विद्या विहार छात्रावास (हॉस्टल) का नवीनीकरण - संसाधनों के पुनरुत्थान की प्रेरक पहल

विमल विद्या विहार परिसर में पूर्व में संचालित छात्रावास (हॉस्टल) के नवीनीकरण एवं सौन्दर्यकरण कार्य का शुभारम्भ एक अत्यंत सराहनीय कार्य है। मंगलाचरण के विगत समय से यह भवन पुराना होने के कारण उपयोग में नहीं आ रहा था। इस भवन का पुनः जीवन्त उपयोग, न केवल संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग का श्रेष्ठ उदाहरण है, अपितु यह परिसर में अध्ययनरत विद्यार्थियों को एक अधिक अनुकूल, सुव्यवस्थित एवं प्रेरक वातावरण प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। यह पुनर्निर्माण, विमल विद्या विहार की शैक्षणिक यात्रा को नई दिशा, नवीन ऊर्जा और सुदृढ़ आधार प्रदान करेगा। साथ ही, भविष्य में छात्रावास व्यवस्था को पुनः प्रारंभ करने की संभावनाओं को भी यह सार्थक बल प्रदान करता है। यह समस्त कार्य श्री कमलसिंह-डॉ. रतना बैद (लाडनूं- जयपुर) (जे. एल. सी. इलेक्ट्रोमेट, जयपुर) के सहयोग से संभव हुआ है। जैन विश्व भारती परिवार उनके इस योगदान के लिए आभार व्यक्त करता है।

विमल विद्या विहार का नवीनीकरण एवं सौन्दर्यकरण - ज्ञान-दर्शन-चारित्र के मंदिर को नया स्वरूप

जैन विश्व भारती परिसर में स्थित विमल विद्या विहार शिक्षा, संस्कार और ज्ञान का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। वर्तमान में इस प्रतिष्ठित संस्था की दोनों विंग जय तुलसी विद्या विहार एवं सीनियर विंग में व्यापक नवीनीकरण और सौन्दर्यकरण का कार्य तीव्र गति से चल रहा है।

जय तुलसी विद्या विहार में नवीनीकरण के अंतर्गत अनेक आधुनिक सुविधाओं को जोड़ा गया है। नवीन कम्पोजिट लैब की स्थापना, नए कक्षों का निर्माण, नवीन आकर्षक द्वारों का स्थापन और आकर्षक नवीन फर्नीचर की व्यवस्था जैसे कार्य पूर्ण हो चुके हैं, जिससे विद्यार्थियों के अध्ययन और सह-पाठ्य गतिविधियों के लिए एक प्रेरणादायक वातावरण तैयार हुआ है। सीनियर विंग में नवीनीकरण कार्य अंतिम चरण में है और शीघ्र ही यह विंग भी अपने नए, सुसज्जित स्वरूप में विद्यार्थियों को उपलब्ध होगा। इस बहुपयोगी परिकल्पना को साकार करने का महत्वपूर्ण कार्य श्री कमलसिंह बैद - डॉ. रतना बैद (लाडनूं - जयपुर) जे.एल.सी. इलेक्ट्रोमेट, जयपुर द्वारा किया जा रहा है। जैन विश्व भारती परिवार उनके इस योगदान के लिए हृदय से आभार व्यक्त करती है।

सागर अतिथिगृह नवीनीकरण

जैन विश्व भारती के वीआईपी गेस्ट हाउस के नाम से प्रसिद्ध सागर गेस्ट हाउस का पूर्ण नवीनीकरण करवाया जा रहा है जिसके अन्तर्गत नवीन कमरों का निर्माण, नवीन खिड़की, दरवाजे आदि का कार्य करवाया गया है। अनुदानदाता लाडनूं निवासी मुम्बई प्रवासी श्रीमती माणकदेवी बरमेचा एवं श्री उमरावमल बरमेचा परिवार का हार्दिक आभार।







सांस्कृतिक चेतना एवं साधना को समर्पित प्रांगण - परंपरा और तकनीक का समन्वय

तुलसी कला दीर्घा - तकनीकी नवाचार के साथ सौंदर्यकरण की ओर एक नवीन यात्रा

तुलसी कला दीर्घा, जैन विश्व भारती की सांस्कृतिक चेतना, आध्यात्मिक गरिमा, और परंपरा की जीवंत धारा का प्रतीक है। जैन विश्व भारती के प्रांगण में स्थित “तुलसी कला दीर्घा” मात्र एक दीर्घा नहीं, अपितु तेरापंथ के आचार्यश्री तुलसी के जीवन-दर्शन, उनके मूल्य-आधारित आंदोलनों और तपोभूमि साधना की सृजनशील अभिव्यक्ति का सजीव प्रतीक है। यह स्थान साधु-साध्वियों द्वारा हस्तनिर्मित अमूल्य धरोहरों का संग्राहालय भी है, जो न केवल उनके कौशल और समर्पण को दर्शाता है, अपितु श्रम-साधना की वह संस्कृति भी सहेजता है, जो तेरापंथ धर्मसंघ की पहचान रही है। इन कृतियों के माध्यम से न केवल अध्यात्म का स्पर्श होता है, बल्कि वह आत्म-प्रेरणा भी जाग्रत होती है, जो किसी साधक को सेवा, स्वाध्याय और साधना के पथ पर अग्रसर करती है।

इस कला दीर्घा का सौंदर्यकरण व नवीनीकरण, आधुनिक तकनीक के साथ एक नवीन अध्याय का शुभारंभ है। अब यह दीर्घा केवल प्रदर्शनी स्थल न रहकर, एक अनुभूतिप्रक और आकर्षक अनुभव केंद्र के रूप में विकसित हो रही है कला, परंपरा और तकनीक का समन्वय, युवा पीढ़ी को संवादशील एवं भावनात्मक रूप से जोड़ने वाली व्यवस्था इस नवीनीकरण में एक विशेष आयाम और जोड़ा गया है - शासनमाता साध्वी प्रमुखाश्री जी के जीवन-दर्शन को चित्रात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाएगा, जो दर्शकों को साध्वी परंपरा की प्रेरक गाथा से साक्षात्कार कराएगा। इस विशिष्ट परियोजना में श्री हनुमानमलजी - महेन्द्र कुमारजी भूतोड़िया (लाडनू - कोलकाता) का सहयोग अत्यंत सराहनीय है। अनुदानदाता परिवार के प्रति जैन विश्व भारती परिवार की ओर से आभार ।

गौतम ज्ञानशाला -नवीनीकरण से निखरता आध्यात्मिक वैभव

गौतम ज्ञानशाला, जैन विश्व भारती के ऐतिहासिक एवं प्रतिष्ठित भवनों में से एक है, जो वर्षों से समर्णीकृद का प्रवास एवं साधना स्थली के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। यहाँ से न केवल अध्ययन और साधना की अनवरत धारा प्रवाहित होती रही है, बल्कि यह स्थल अध्यात्म और अनुशासन का जीवंत प्रतीक भी रहा है।

संस्थान की इस धरोहर को समय की आवश्यकताओं और आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित करने हेतु व्यापक नवीनीकरण कार्य संवेदनशीलता और सौंदर्यबोध के साथ सम्पन्न किया गया। इस प्रक्रिया में भवन की मूल आध्यात्मिक गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, इसकी संरचना को स्थायित्व, आकर्षण और सुगमता प्रदान की गई। नवीनीकरण के अंतर्गत वरिष्ठजन की सुविधा हेतु भवन में आधुनिक लिफ्ट का सफलतापूर्वक स्थापन किया गया। संपूर्ण परिसर में नवीन टाइल्स, परिष्कृत साज-सज्जा, सुदृढ़ विद्युत एवं जल व्यवस्था स्थापित की गई है। ध्यान, अध्ययन और दैनिक जीवन की सुचारूता के लिए आवश्यक सभी सुविधाएँ इस रूपांतरण में समाहित की गई हैं, जिससे यह गौतम ज्ञानशाला अब और भी अधिक कार्यक्षम, सौम्य और साधना-योग्य वातावरण प्रदान कर रही है। इस महत्वपूर्ण नवीनीकरण कार्य के लिए श्री सुरेन्द्रजी -सुमित्राजी कांकरिया (न्यूजर्सी) का विशिष्ट सहयोग प्राप्त हुआ, जिनकी उदार भावना और संस्थान के प्रति निष्ठा प्रशंसनीय है, अतएव आभार।

अमृतायन नवीनीकरण - चारित्रात्माओं एवं मुमुक्षु बहनों के लिए स्नेह और संवेदना का प्रतीक

जैन विश्व भारती परिसर स्थित “अमृतायन” पारमार्थिक शिक्षण संस्था की एक महत्वपूर्ण धरोहर है, जिसने वर्षों से चारित्रात्माओं एवं मुमुक्षु बहनों के प्रवास, साधना और सेवा के अनेक स्मरणीय क्षण संजोए हैं। समय के साथ इसकी संरचना में आवश्यक मरम्मत और आधुनिक सुविधाओं के समावेश की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए व्यापक नवीनीकरण कार्य प्रारंभ किया गया, जो अब पूर्णता की ओर अग्रसर है। अमृतायन तीन विंग में विभाजित है, इस नवीनीकरण में इनके दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को केंद्र में रखते हुए, भवन के आंतरिक और बाह्य दोनों स्वरूपों को सुसज्जित एवं सुदृढ़ किया गया है।

लंबे समय से अपेक्षित मरम्मत कार्य, छत की वाटरप्रूफिंग, फर्श का सुधार, नवीन एवं सुविधाजनक बाथरूमों रंगरोगन, विद्युत व्यवस्था का उन्नयन तथा अन्य आधारभूत ढाँचागत परिवर्तन इस परियोजना के अंतर्गत पूर्ण किए गए। पूरे परिसर में यह कार्य न केवल संरचना की मजबूती बढ़ाने वाला है, बल्कि सौंदर्य और शांतिपूर्ण वातावरण को भी निखारने वाला है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अंतर्गत यह नवीनीकरण कार्य करवाया जा रहा है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था परिवार के प्रति जैन विश्व भारती परिवार की ओर से आभार।

भिक्षु विहार भवन नवीनीकरण - परंपरा और आधुनिकता का अद्वितीय संगम

योगक्षेम वर्ष के शुभ अवसर पर, जैन विश्व भारती परिसर के गैरवशाली एवं ऐतिहासिक भिक्षु विहार का समुचित नवीनीकरण पूर्ण किया जा रहा है। यह भवन केवल ईंट-पत्थरों का ढाँचा नहीं, बल्कि संस्थान की आत्मा के साथ जुड़ी एक जीवंत धरोहर है। जैन विश्व भारती की स्थापना के समय निर्मित इस प्रथम भवन ने अनेक ऐतिहासिक क्षणों को संजोया है। यहाँ पर आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने कई चातुर्मास किए, जिनकी पावन स्मृतियाँ आज भी इसकी दीवारों में जीवंत हैं। यह स्थल केवल एक निवास स्थान नहीं, बल्कि जैन विश्व भारती की तप, साधना और अनुशासनमय परंपरा का प्रतीक है। नवीनीकरण कार्य के अंतर्गत भिक्षु विहार की मूल संरचना को ऐतिहासिक स्वरूप में संरक्षित रखते हुए इसे आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया गया है। साथ ही, मरम्मत कार्यों के साथ आवश्यक ढाँचागत सुधार किए गए हैं ताकि यह भवन आने वाले दशकों तक सुरक्षित और उपयोगी बना रहे। भिक्षु विहार नवीनीकरण कार्य हेतु सौजन्यकर्ता श्री प्रकाशजी-प्रमोदजी बैद, लाडनू -कोलकाता का हार्दिक आभार।





अहिंसा भवन - अहिंसा यात्रा की अमर स्मृतियों का संरक्षक

अहिंसा भवन, आचार्यश्री महाप्रज्ञनी की ऐतिहासिक अहिंसा यात्रा की जीवंत स्मृतियों को संजोए, जैन विश्व भारती परिसर में एक विशेष धरोहर के रूप में है। वर्तमान में यह भवन संतों और चारित्रात्माओं के प्रवास स्थल के रूप में उपयोग किया जा रहा है, जहाँ से वे समाज में नैतिक जागरण और आध्यात्मिक मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। भवन की वास्तुकला राजस्थानी संस्कृति की प्राचीन छटा को समेटे हुए है। प्राकृतिक प्रकाश और शुद्ध वायु के अधिकतम प्रवाह को ध्यान में रखते हुए किए गए बदलाव इस भवन को और अधिक सुखद, स्वास्थ्यवर्धक और साधनामय बनाते हैं। योगक्षेम वर्ष में हुए इस नवीनीकरण का उद्देश्य केवल संरचनात्मक सुधार नहीं, बल्कि चारित्रात्माओं के सुचारू प्रवास, तप, स्वाध्याय और समाज मार्गदर्शन के लिए एक उपयुक्त वातावरण का निर्माण करना है, जिससे वे पूर्ण आत्मिक तन्मयता के साथ अपने आध्यात्मिक दायित्वों का निर्वाह कर सकें।

अहिंसा भवन का मूल निर्माण पूर्व में श्री रणजीतसिंह-श्रीमती सायर कोठारी (टमकोर - कोलकाता) के सौजन्य से संपन्न हुआ था। वर्तमान नवीनीकरण भी उनके ही सहयोग से संभव हो सका है। इस योगदान के लिए जैन विश्व भारती परिवार हृदय से आभार व्यक्त करता है।

अर्हम स्तूप - आचार्यों की स्मृति और तेरापंथ की गौरवगाथा का प्रतीक

जैन विश्व भारती परिसर में प्रतिष्ठित अर्हम स्तूप आचार्यों को समर्पित संस्था के इतिहास, आदर्शों और मूल्यों का सार अपने भीतर संजोए हुए है। समय के साथ इसके पुनः नवीनीकरण और रूपांतरण का निर्णय लिया गया। प्रस्तावित नया स्वरूप मोर के कलात्मक आकार को समाहित करते हुए छः कोणों से युक्त होगा, जो सौंदर्य, संतुलन और प्रतीकात्मकता का अद्वितीय संगम प्रस्तुत करेगा। यह नवनिर्मित अर्हम स्तूप, जैन विश्व भारती की बहुआयामी प्रवृत्तियों और सतत प्रगतिशील दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करेगा। इस स्तूप का मूल निर्माण पूर्व में मित्र परिषद, कोलकाता के सौजन्य से संपन्न हुआ था। वर्तमान नवीनीकरण भी इसी संस्था के सहयोग और उदारता से संभव हो रहा है। इस योगदान के लिए जैन विश्व भारती परिवार हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता है।

साधक क्वार्टरस - आवासीय भवनों का नवीनीकरण - सुविधा और सौंदर्य का संगम

जैन विश्व भारती परिसर में समय पर निर्मित विभिन्न आवासीय भवन संस्थान के आगंतुकों, श्रद्धालुओं और साधकों के लिए सेवा एवं प्रवास का आधार रहे हैं। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण इकाई 27 साधक आवासीय क्वार्टरस लंबे समय से अपनी उपयोगिता सिद्ध करते आ रहे थे, किंतु कालांतर में भवनों की स्थिति जर्जर हो गई थी। अतः उनके संपूर्ण नवीनीकरण और सौन्दर्यकरण की आवश्यकता स्पष्ट रूप से अनुभव की जा रही थी। इस नवीनीकरण परियोजना के अंतर्गत प्रत्येक आवासीय इकाई में आधुनिक सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए व्यापक सुधार किए गए हैं। इसमें नवीन विद्युत वायरिंग, उच्च गुणवत्ता की प्लम्बिंग, दरवाजों और खिडकियों का प्रतिस्थापन, फर्श का नवीनीकरण, तथा आंतरिक सज्जा का परिष्कृत स्वरूप शामिल है। इस संपूर्ण नवीनीकरण कार्य को जैन विश्व भारती की वर्तमान टीम के सहयोग और समर्पण से संपन्न किया जा रहा है, जो संस्थान की सेवा भावना और संगठनात्मक एकता का उत्तम उदाहरण है।

आवासीय मल्टी स्टोरी बिल्डिंग - नवीनीकरण एवं सौंदर्यकरण

जैन विश्व भारती परिसर में समय पर विभिन्न आवासीय भवनों का निर्माण संस्थान के स्थायी सहयोगियों, श्रद्धालुओं और आगंतुकों के प्रवास हेतु किया गया है। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण इकाई - आवासीय मल्टी स्टोरी बिल्डिंग- वर्षों से अनेक परिवारों के लिए सुखद निवास और आध्यात्मिक वातावरण का केंद्र रही है। समय के साथ यह भवन पुराना और जर्जर हो चला था, जिससे नवीनीकरण की आवश्यकता अत्यंत स्पष्ट थी। संस्था द्वारा इस भवन का पूर्ण नवीनीकरण एवं सौन्दर्यकरण कार्य व्यापक स्तर पर संपन्न किया जा रहा है। इस परियोजना के अंतर्गत नवीन विद्युत वायरिंग, उच्च गुणवत्ता की प्लम्बिंग, दरवाजों और खिडकियों का प्रतिस्थापन, फर्श का नवीनीकरण, रंगरोगन, और भवन के आंतरिक एवं बाहरी स्वरूप का संपूर्ण सुधार किया जा रहा है। आगामी योगक्षेम वर्ष के दौरान यह नवीनीकरण न केवल वर्तमान में निवास करने वाले परिवारों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, बल्कि यहाँ ठहरने आने वाले आगंतुक श्रद्धालु और श्रावकजन भी सेवा-दर्शन का अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केंद्र - नवीनीकरण एवं सौंदर्यकरण कार्य का शुभारंभ

जैन विश्व भारती संस्था की अमूल्य धरोहर आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केंद्र सदैव से आत्मिक शांति, ध्यान साधना और आध्यात्मिक उन्नति का प्रेरणास्रोत रहा है। समय की धारा में इस केंद्र के ऐतिहासिक महव और सौंदर्य को और अधिक निखारने के उद्देश्य से इसका व्यापक नवीनीकरण एवं सौंदर्यकरण कार्य प्रारंभ किया गया है।

इस परियोजना के अंतर्गत केंद्र की संरचना को नवीन रूप में सुसज्जित किया जाएगा, जिसमें आधुनिक सुविधाओं का समावेश करते हुए उसकी आध्यात्मिक गरिमा को अक्षुण्ण रखा जाएगा। प्रेक्षाध्यान कक्षों का नवीनीकरण, ध्यानार्थियों के लिए सुगम व्यवस्था, परिसर में सौंदर्यवर्धन हेतु हरित क्षेत्र का विस्तार, प्रकाश व्यवस्था का आधुनिकीकरण तथा आवश्यक मरम्मत कार्य किए जाएंगे। ओपन एयर थिएटर का भी निर्माण करवाया जा रहा है। जैन विश्व भारती परिवार के सकारात्मक चिंतन से प्रेक्षा कल्याण वर्ष में नवीनीकरण का कार्य करवाया जा रहा है।













सेवा के प्रकल्प का विस्तार

जैन विश्व भारती चिकित्सालय का शिलान्यास

जैन विश्व भारती की सेवा की प्रवृत्ति में एक नया स्वर्णिम अध्याय तब जुड़ गया, जब राजस्थान के माननीय राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागडे जी के पावन कर-कमलों द्वारा जैन विश्व भारती चिकित्सालय का विधिवत शिलान्यास सम्पन्न हुआ। नवीन चिकित्सालय का यह प्रकल्प न केवल स्थानीय जनसमुदाय के लिए वरदान सिद्ध होगा, बल्कि जैन विश्व भारती की मूल भावना साधना के साथ सेवा को भी नई दिशा और व्यापक विस्तार प्रदान करेगा। योगक्षेम वर्ष 2026 के अंतर्गत इस चिकित्सालय को आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं से सुसज्जित कर, इसे साधु-साध्वियों, विद्यार्थियों एवं श्रावकजनों के लिए सुलभ, संवेदनशील और सहज स्वास्थ्यसेवा का आधार केंद्र बनाया जाएगा। यह चिकित्सालय न केवल रोगों के उपचार का स्थान होगा, अपितु सेवा, संवेदना और समर्पण के आदर्शों का मूर्तरूप होगा जहाँ तन की पीड़ा के साथ मन की शांति भी उपचार का हिस्सा होगी। इस परियोजना को साकार करने हेतु छापर निवासी एवं कोलकाता प्रवासी, श्री माणकचंद नाहटा बुच्चा परिवार का उदार आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ, हार्दिक आभार।

जैन विश्व भारती ऑडिटोरियम का शिलान्यास - विचार, साधना और संस्कृति की अनुपम धरोहर

जैन विश्व भारती, लाडनूँ में योगक्षेम वर्ष 2026 के शुभ अवसर पर पर एक ऐतिहासिक पहल के अंतर्गत एक अत्याधुनिक और बहुपयोगी ऑडिटोरियम के शिलान्यास का शुभ कार्य संपन्न हुआ। यह बहुआयामी आध्यात्मिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को एक नया आयाम देने वाला विचार मंच होगा। यह भव्य ऑडिटोरियम प्रवचन, संगोष्ठी, कार्यशाला, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों एवं अंतर्राष्ट्रीय संवादों जैसे विविध आयोजनों का केंद्र बनेगा। योगक्षेम वर्ष में जब पूरा परिसर नवाचार और सौंदर्य के रंगों से सज रहा है, तब यह ऑडिटोरियम उस युगांतरकारी विकास यात्रा का एक उज्ज्वल प्रतीक बनकर उभरेगा। यहाँ होने वाले विचार-मंथन, साधना-संवाद और रचनात्मक आयोजनों के माध्यम से यह स्थल आने वाली पीढ़ीयों के लिए प्रेरणा, स्मृति और गौरव का केन्द्र बनेगा। योगक्षेम वर्ष की यह उपलब्धि आने वाले समय में विचार, संस्कार और सेवा की त्रिवेणी का क्षेत्र सिद्ध होगी।

वेलकम लॉन्ज का शिलान्यास - योगक्षेम सत्कार की गरिमामयी पहल

जैन विश्व भारती, लाडनूँ की सांस्कृतिक गरिमा, आध्यात्मिक वातावरण और शैक्षणिक चेतना को सहज भाव से अनुभव कराने हेतु, योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत एक अभिनव योजना “वेलकम लॉन्ज” का शिलान्यास संपन्न हुआ। वेलकम लॉन्ज केवल एक स्वागत कक्ष नहीं, अपितु संस्था की मेजबानी, सेवा-संस्कार और सुव्यवस्थित प्रणाली का सजीव प्रतीक होगा। यह लॉन्ज उन समस्त आगंतुकों, श्रद्धालुओं, पर्यटकों, शोधार्थियों एवं नवागत विद्यार्थियों के लिए प्रथम संपर्क बिंदु बनेगा, जो जैन विश्व भारती के विशाल परिसर में प्रवेश करते ही यहाँ की गरिमा को आत्मसात करना चाहें। इसमें सुंदर एवं शांत वातावरण में बैठने की उत्तम व्यवस्था, परिसर का डिजिटल नक्शा एवं संस्थागत निर्देशिका, पंजीकरण एवं स्वागत काउंटर, आवश्यक सूचना प्रदर्शक, तथा प्राथमिक विश्राम एवं मार्गदर्शन की व्यवस्था होगी। इस परियोजना को साकार करने हेतु श्री सुभाषचंद, श्री विमलचंदजी, श्री सम्यक रूनवाल एवं श्रीमती चंदा रूनवाल (जयसिंहपुर, महाराष्ट्र) का सहयोग प्राप्त हुआ है। उनकी इस उदारता के प्रति आभार व्यक्त प्रकट करते हैं।

पर्यावरणीय संतुलन और हरित परिसर की दिशा में नवीन पहल

अष्ट मंगल पार्क का शुभारंभ- आध्यात्मिक चिंतन, सांस्कृतिक चेतना और सौंदर्यबोध का समन्वय

जैन विश्व भारती परिसर में एक नवीन पहल के रूप में अष्ट मंगल पार्क का निर्माण कार्य आरंभ हो चुका है। “अष्ट मंगल” जैन संस्कृति में शुभता, दिव्यता, समृद्धि और आध्यात्मिक ऊर्जा के प्रतिनिधि इन आठ मंगल प्रतीकों को समर्पित यह पार्क आचार्यश्री तुलसी स्मारक के समीप विकसित किया जा रहा है। यह न केवल परिसर की हरियाली को संवर्धित करेगा, बल्कि आगंतुकों के लिए आत्मचिंतन, साधना एवं शांतिपूर्ण समय व्यतीकरणे हेतु एक आदर्श स्थल का रूप लेगा।

पार्क में स्थापित किए जा रहे अष्ट मंगल चिह्न यथा स्वस्तिक, श्रीवत्स, नंद्यावर्त, वर्दमानक भद्रासन, कल्पवृक्ष, मीनयुगल, दर्पण का सांस्कृतिक एवं दार्शनिक महत्व भी अत्यंत विशेष है। इन प्रतीकों की स्थापत्य शैली और उनके संदेश पार्क को केवल एक भौतिक संरचना नहीं, अपितु एक जीवंत सांस्कृतिक अनुभव बनाएंगे। इस नवीन पहल को साकार रूप देने में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है। इस उदारता के प्रति आभार व्यक्त प्रकट करते हैं।

नवग्रह पार्क का शिलान्यास - आध्यात्मिक ऊर्जा और वास्तु चेतना का समन्वय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ - जहाँ सतत भौतिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक चेतना का विस्तार भी निरंतर गतिमान है ऐसे पवित्र परिसर में नवग्रह पार्क की परिकल्पना और शिलान्यास एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहल है। वास्तुशास्त्र एवं आध्यात्मिक सिद्धांतों पर आधारित यह पार्क, जैन विश्व भारती को एक विशिष्ट आध्यात्मिक पहचान प्रदान करेगा।





इस विशेष पार्क में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु, इन नवग्रहों के मंत्रों और प्रतीकों की स्थापना की जा रही है, जिससे साधक उनके स्वरूप, ऊर्जा और प्रभाव को प्रत्यक्ष अनुभव कर सकें। हर व्यक्ति, अपनी ग्रह शांति और आत्मिक संतुलन हेतु यहाँ आकर मंत्र साधना, ध्यान और आत्मचिंतन कर सकेगा। लाल बलुआ पत्थर से निर्मित विशेष आकार की बेंचें, जो ग्रहों की अनुकूलता और ऊर्जाओं को ध्यान में रखकर स्थापित की गई हैं। मंत्रमय वातावरण जो साधना और आंतरिक ऊर्जा के जागरण के लिए उपयुक्त आधार प्रदान करता है। यह स्थल ध्यानात्मक भ्रमण, ग्रह चेतना और ज्योतिषीय प्रतीकवाद को आत्मसात करने का एक सशक्त माध्यम होगा। यह नवग्रह पार्क एक ऐसा दुर्लभ आध्यात्मिक परिसर होगा, जो देशभर में बहुत ही कम स्थानों पर देखने को मिलता है। इस परियोजना के निर्माण में श्री चैथमलजी - कन्हैयालाल सेठिया चैरिटेबल ट्रस्ट, छापर का महवपूर्ण योगदान मिल रहा है, उनकी इस उदारता के प्रति आभार व्यक्त प्रकट करते हैं।

जय कुंजर पार्क का शिलान्यास - एक समृद्ध परंपरा की पावन प्रस्तुति

जैन विश्व भारती परिसर, लाडनूँ में जय कुंजर पार्क का शिलान्यास केवल एक भौतिक संरचना की नींव नहीं है, अपितु यह आयोजन संघीय चेतना, सांस्कृतिक विरासत और पर्यावरणीय चेतना का एक प्रेरणादायी संगम है। यह पार्क, जहाँ एक ओर हरियाली और नैसर्गिक सौंदर्य को समर्पित होगा, वहीं दूसरी ओर यह आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा जैन विश्व भारती के लिए दी गई जयकुंजर उपमा का सजीव प्रतीक बनेगा। यह उपवन जीवन में हरियाली, संतुलन और आंतरिक समृद्धि का भी संदेश देगा। इस प्रयास के सौजन्यकर्ता श्री रतनलाल जी सेखानी, श्री आनंदजी-निधिजी सेखानी तथा अमितजी-नेहाजी सेखानी परिवार, बीदासर-सूरत हैं, जिनके उदार सहयोग से यह परियोजना साकार रूप प्राप्त कर रही है। जैन विश्व भारती परिवार इस योगदान हेतु आपके प्रति आभार ज्ञापित करता है।

जैन विश्व भारती परिसर में संपूर्ण सड़क एवं रोड लाइट परियोजना का शिलान्यास विकास की एक नई उज्ज्वल दिशा

जैन विश्व भारती, लाडनूँ के सतत अधोमुखी विकास क्रम में एक और ऐतिहासिक अध्याय जुड़ गया है। परिसर के संपूर्ण सड़क एवं रोड लाइट प्रोजेक्ट का विधिवत शिलान्यास एक ऐसी पहल है, जो न केवल भौतिक संरचना को उन्नत बनाएगी, अपितु परिसर की सौंदर्य, सुरक्षा और सुविधा की दृष्टि से भी एक नया मानक स्थापित करेगी। इस उपयोगी पहल के माध्यम से जैन विश्व भारती परिसर में एक ऐसा वातावरण निर्मित हो रहा है जो आधुनिकता और अध्यात्म, संरचना और संस्कृति, तथा प्रगति और परंपरा - इन तीनों के समन्वय का जीवंत उदाहरण बनेगा।

इस महवाकांक्षी परियोजना के अंतर्गत पूरे परिसर में उच्च गुणवत्ता वाली, टिकाऊ और समतल सड़कों का निर्माण किया जाएगा, जिससे न केवल आगंतुकों को सहज आवागमन की सुविधा मिलेगी, बल्कि वाहन संचालन भी सुचारू रूप से संभव हो सकेगा। साथ ही, आधुनिक तकनीक से युक्त ऊर्जा-संवेदनशील स्ट्रीट लाइट्स की स्थापना की जाएगी, जो रात्रिकालीन समय में समूचे परिसर को प्रकाशित एवं सुरक्षित बनाए रखेंगी। आगामी योगक्षेत्र वर्ष 2026 के उपलक्ष्य में यह परियोजना एक विशेषज्ञ दृष्टिकोण और समर्पित व्यवस्थापन का प्रतीक है, जो परिसर के सर्वांगीण विकास की दिशा में मील का पत्थर बनेगी। इस विकास योजना को साकार रूप देने हेतु श्रीमती माणकदेवीजी बरमेचा एवं श्री शांतिलालजी बरमेचा (लाडनूँ - मुंबई) द्वारा उदार सहयोग प्राप्त हुआ अतएव हार्दिक आभार।

नवीन पहल - केन्द्रीय संस्थाओं के बढ़ते कदमजैन विश्व भारती में विभिन्न केन्द्रीय संस्थाओं के कार्यालय पूर्व से अवस्थित थे, इस दिशा में अनुकृत विश्व भारती सोसायटी व तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा भी परिसर में कार्यालय स्थापित किया जा रहा है। दोनों संस्थाओं को शुभकामनाएं।





गतिमान परियोजनाएं

गत वर्ष के मंत्री प्रतिवेदन में उन विविध योजनाओं एवं विकासात्मक परियोजनाओं का उल्लेख किया गया था, जिनका शिलान्यास अथवा निर्माण कार्य उस कार्यकाल में प्रारंभ हुआ था। अब, इस प्रतिवेदन के माध्यम से हम इन गतिमान योजनाओं की अद्यतन स्थिति का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें वे सभी परियोजनाएँ भी सम्मिलित की गई हैं, जिनका शिलान्यास या निर्माण-प्रारंभ आलोच्य अवधि में किया गया है और जो वर्तमान में प्रगति पर हैं। यह व्यवस्थित विवरण प्रत्येक योजना की वर्तमान स्थिति, निर्माण की गति, आंशिक या पूर्ण रूप से पूर्णता, उपयोग में लाने की स्थिति आदि का समावेश करता है, जिससे एक समग्र दृष्टिकोण प्राप्त हो सके।

नवीन प्रशासनिक भवन सचिवालय - सुदृढ़ प्रशासन की ओर एक प्रभावशाली पहल

जैन विश्व भारती, लाडनूं के प्रगतिशील विकास में एक महवपूर्ण उपक्रम के रूप में प्रारंभ हुआ है-, नवीन प्रशासनिक भवन सचिवालय का निर्माण कार्य दिनांक 19 मई 2023 को विधिवत् रूप से आरंभ हुआ। प्रारंभ से ही यह परियोजना द्रुत गति से गतिमान रही और अब यह अपने अंतिम चरण में पहुँच चुकी है। निकट भविष्य में यह भवन पूर्ण रूप से उपयोग हेतु तैयार होकर संस्था के प्रशासनिक ढांचे को नया स्वरूप प्रदान इसकी संकल्पना आधुनिक कार्य-प्रणाली, पारंपरिक जैन जीवन-मूल्यों और स्थापत्य सौंदर्य का समन्वित प्रतिबिंब है। लगभग 3000 वर्गफुट निर्मित क्षेत्र में फैले इस भवन में प्रशासनिक कार्यों को सुचारा रूप से संचालित करने के लिए बहुविध व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। इसमें प्रमुख रूप से कुशल कार्यालयीन संचालन हेतु सुव्यवस्थित प्रशासनिक कक्ष, नीति-निर्माण और संवाद हेतु आधुनिक बैठक कक्ष, अभिलेखों के दीर्घकालिक संरक्षण हेतु डिजिटलीकृत अभिलेखागार, सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित डाटा प्रबंधन तंत्र, तथा आगंतुकों के स्वागत और मार्गदर्शन हेतु गरिमामय स्वागत कक्ष आदि सम्मिलित हैं। इस बहुउपयोगी परियोजना के यथार्थ रूप में देने हेतु श्री बी. रमेशचंद्रजी- श्रीमती उषा बोहरा (मुसालिया-चेन्नई) का अनुदान विशेष रूप से सराहनीय है। संस्था परिवार की ओर से इस सेवाभाव के लिए उनका हार्दिक आभार।

चित्त समाधि केन्द्र आध्यात्मिक शांति और एकाग्रता की महवपूर्ण पहल

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की प्रेरणादायी दृष्टि के आलोक में जैन विश्व भारती को यह इंगित प्राप्त हुआ था कि संस्था परिसर में चित्त समाधि केन्द्र की स्थापना की जाए, जिससे आध्यात्मिक साधना एवं मानसिक स्थिरता को समर्पित एक शांतिपूर्ण एवं सुदृढ़ वातावरण साकार हो सके। उसी निर्देश के अंतर्गत इस विशेष केंद्र का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ, जो अब पूर्णता के समीप है। चित्त समाधि केन्द्र का उद्देश्य केवल निवास प्रदान करना नहीं है, अपितु यह केंद्र साधकों को एकाग्रता, साधना और आत्मचिंतन के लिए एक समर्पित वातावरण उपलब्ध कराएगा। योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत इस केंद्र में आने वाले साधक, चारित्रात्माएँ, आगंतुक एवं अभ्यासकर्ता मानसिक शांति के साथ अपने आध्यात्मिक अभ्यास को साध सकेंगे।

यह दो मंजिला भवन कुल 20 सु-सज्जित 2 रूम, हॉल एवं किचन युक्त आवासीय फ्लैट से युक्त है। वर्तमान में भवन में आवश्यक फर्नीचर, इंटीरियर और उपयोगी व्यवस्थाओं का कार्य तीव्र गति से संपन्न हो रहा है। इस आध्यात्मिक परियोजना के सफल क्रियान्वयन के लिए श्रीमती चन्द्रदेवी सुराणा द्वारा स्व. श्री उत्तमचंद जी सुराणा (पुत्र स्व श्री गोकुलचंद जी सुराणा, राजगढ़) की पुण्य स्मृति में उदार अनुदान प्रदान किया गया। संस्था परिवार की ओर से इस उदारता, श्रद्धा और आध्यात्मिक संवेदना से पूर्ण योगदान हेतु हार्दिक आभार।

प्रज्ञा केन्द्र का निर्माण कार्य पूर्णता की ओर -ज्ञान, साधना और चिंतन का नवाध्याय

जैन विश्व भारती लाडनूं के सतत विकास की दिशा में एक और महवपूर्ण उपलब्धि के रूप में प्रज्ञा केन्द्र का निर्माण अब अपने अंतिम चरण में है। जैन विश्व भारती एक ऐसा आध्यात्मिक स्थल है, जहाँ वर्षभर चारित्रात्माओं का प्रवास बना रहता है और समाजीवंद तथा मुकुम्शु बहनों की सेवाओं से साधकों को सतत लाभ प्राप्त होता है। इन्हीं सेवाओं को अधिक संगठित, सुसज्जित और प्रभावी स्वरूप प्रदान करने की दृष्टि से एक ऐसे समर्पित परिसर की आवश्यकता अनुभव की गई, जहाँ अध्ययन साधना और प्रशिक्षण के कार्य व्यवस्थित रूप से संचालित किए जा सकें। इस प्रेरणास्पद परियोजना का बीजारोपण उस समय हुआ जब ह्यूस्टन (यू.एस.ए.) में प्रवासित श्री स्वतंत्रजी -श्रीमती विमलाजी जैन जैन विश्व भारती के पावन परिसर में पधारे। चर्चा के दौरान उन्होंने इस प्रज्ञा केन्द्र के निर्माण का संकल्प लिया और उदारतापूर्वक इस परियोजना का दायित्व स्वीकार किया। निर्माण कार्य तेज गति से प्रगति पर है, जिसमें प्रारंभिक ढांचा पूर्ण हो चुका है और आंतरिक साज-सज्जा अंतिम चरण में है। जैन विश्व भारती की ज्ञान-साधना और मूल्यनिष्ठ शिक्षण परंपरा को सशक्त आधार देने हेतु प्रज्ञा केन्द्र की परिकल्पना की गई, जिसका शिलान्यास 5 नवम्बर 2023 को संपन्न हुआ। यह केन्द्र न केवल एक भवन है, अपितु एक ऐसा मंच है जहाँ ज्ञान, विवेक और जीवन-मूल्य आधारित शिक्षा का समन्वय होगा। कुल 44000 वर्ग फीट में निर्मित यह दो मंजिला भवन आधुनिक वास्तुशिल्प और आध्यात्मिक गरिमा का अनुपम संगम है। भवन की संरचना में आधुनिक वास्तुशिल्प की सुंदरता के साथ-साथ आध्यात्मिक गरिमा का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। प्रशिक्षण कक्ष, सभा हॉल, ध्यान-कक्ष और आंतरिक साज-सज्जा जैसे सभी प्रमुख कार्य लगभग पूर्ण हो चुके इस महवपूर्ण परियोजना के निर्माण में श्री स्वतंत्रजी- श्रीमती विमलाजी जैन (ह्यूस्टन, यू.एस.ए.) का उदारमना सहयोग प्राप्त हुआ, जैन विश्व भारती परिवार की ओर से हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता।







योगक्षेम भवन 1-2-3 निर्माण परियोजना का अंतिम चरण

19 मई 2023 को प्रारम्भ हुई योगक्षेम भवन 1 से 3 की महत्वाकांक्षी निर्माण परियोजना अब अपने अंतिम चरण में है। इस भव्य योजना के अंतर्गत, योगक्षेम भवन-1 में कुल 44 स्टूडियो आवास का निर्माण कार्य सुव्यवस्थित ढंग से प्रगति पर है। इन आवासों को श्रावक समाज द्वारा योगक्षेम वर्ष के पावन अवसर पर उपयोग हेतु पूर्व-आवंटित भी किया जा चुका है, जिससे निर्माण कार्य के प्रति समाज के विश्वास और उत्साह का परिचय मिलता है।

योगक्षेम भवन-2 एवं 3 में टू-बी-एचके के कुल 40 आवास निर्मित किए जा रहे हैं। ये आवास न केवल आकार में सुविधाजनक हैं, बल्कि आधुनिक सुविधाओं, स्वच्छता और सादगीपूर्ण वास्तुकला का आदर्श मिश्रण प्रस्तुत करते हैं। योगक्षेम वर्ष के दौरान ये आवास श्रावक समाज के सेवा-दर्शन हेतु एक सुंदर और व्यवस्थित निवास व्यवस्था के रूप में उपलब्ध होंगे।

इन भवनों का उद्देश्य जैन विश्व भारती परिसर में आने वाले साधकों, आगंतुक श्रद्धालुओं, विद्वानों और समाज के विभिन्न वर्गों को आरामदायक, सुरक्षित और प्रेरणादायी प्रवास उपलब्ध कराना है। सभी आवासीय इकाइयों में प्राकृतिक प्रकाश और वायु संचार का विशेष ध्यान रखा गया है, ताकि यहाँ ठहरने वाले व्यक्ति को आंतरिक शांति और ऊर्जा का अनुभव हो। अंतिम चरण में रंग-रोगन, आंतरिक सज्जा (इंटीरियर डेकोरेशन) तथा परिदृश्य सौंदर्योंकरण (लैंडस्केपिंग) का कार्य तीव्र गति से जारी है। इस आवासीय परियोजना को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी अनुदानदाताओं और शुभचिंतकों के प्रति जैन विश्व भारती परिवार हृदय से आभार व्यक्त करता है।

विमल विद्या विहार - धर्म किरण स्पोर्ट्स एरीना का निर्माण कार्य पूर्ण

विमल विद्या विहार विद्यालय के विद्यार्थियों और खेल प्रेमियों की लंबे समय से प्रतीक्षित इच्छा अब पूर्ण हो चुकी है, विद्यालय में धर्म किरण स्पोर्ट्स एरीना का भव्य निर्माण संपन्न हो गया है। यह परियोजना खेल सुविधाओं के उन्नयन और विद्यार्थियों में शारीरिक, मानसिक तथा टीम भावना के विकास की दिशा में एक महवपूर्ण कदम है। इस एरीना के निर्माण का दायित्व श्रीदुंगरगढ़ निवासी एवं कोलकाता प्रवासी श्री भीकमचन्दजी पुगलिया एवं श्रीमती सुशीला पुगलिया ने सहर्ष स्वीकार किया। उनके सहयोग और उदारता से विद्यालय को एक अत्याधुनिक एवं सुव्यवस्थित खेल परिसर प्राप्त हुआ है, जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में दीर्घकाल तक योगदान देगा।

वर्तमान में यह स्पोर्ट्स एरीना क्रिकेट, वॉलीबॉल, खो-खो, कबड्डी जैसे प्रमुख खेलों के लिए पूर्ण रूप से विकसित हो चुका है। हरे-भरे लॉन, समतल व सुरक्षित खेल मैदान, और व्यवस्थित सीमा रेखाएं (Meditive) इसकी सुंदरता और उपयोगिता को और भी बढ़ाते हैं। उद्घाटन के बाद से ही यह एरीना खेल गतिविधियों का केंद्र बन चुका है। यहाँ अब तक तीन दिवसीय क्रिकेट लीग और राज्य स्तरीय वॉलीबॉल क्लस्टर प्रतियोगिता जैसे आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हो चुके हैं, जिन्होंने विद्यालय की खेल परंपरा में एक नया इतिहास रचा है। विद्यालय परिवार श्री भीकमचन्दजी व श्रीमती सुशीलाजी पुगलिया के इस योगदान के प्रति आभार व्यक्त करता है।

सुधर्मा सभा - प्रवचन पण्डाल का कार्य गतिमान

योगक्षेम वर्ष की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक थी - एक विशाल, सुसज्जित और बहुउपयोगी प्रवचन पण्डाल का निर्माण, जो आध्यात्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए दीर्घकाल तक उपयोगी सिद्ध हो। इस दिशा में लम्बे समय से चिंतन और मनन होता रहा, और अंततः इस भव्य परियोजना के निर्माण का बीड़ा उठाया जैन विश्व भारती के परामर्शक- श्री भागचंद बरड़िया परिवार ने, जिन्होंने अपनी उदारता और समर्पण से इस स्वप्न को साकार करने की ठानी। सुधर्मा सभा पंडाल का निर्माण न केवल आकार में विशाल है, बल्कि इसकी डिजाइन में पारंपरिक जैन स्थापत्य सौंदर्य और आधुनिक सुविधाओं का अद्वितीय संगम किया गया है। यहाँ आयोजित प्रवचन, धर्मसभा, शिक्षण शिविर और सांस्कृतिक कार्यक्रम एक विशेष गरिमा के साथ संपन्न हो सकेंगे। इसका विस्तृत प्रांगण, सुव्यवस्थित बैठक व्यवस्था और बहु-आयामी उपयोगिता इसे वर्ष भर में विभिन्न ऐतिहासिक आयोजनों का प्रमुख साक्षी बनाएंगी।

निकट भविष्य में इसके लोकारपण के साथ ही योगक्षेम वर्ष का यह स्वप्न साकार होगा और सुधर्मा सभा प्रवचन पण्डाल जैन विश्व भारती परिसर की गरिमा में एक नया स्वर्णिम अध्याय जोड़ेगा। इस कार्य में सहयोग प्रदान करने वाले अनुदानदाता श्रीमती प्रेमदेवी, श्री भागचंद - श्री प्रवीण बरड़िया का जैन विश्व भारती परिवार हृदय से आभार व्यक्त करता है।

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला ओपीडी - निर्माण पूर्णता की ओर

जैन विश्व भारती परिसर में निर्मित सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला अब पूर्ण रूप से तैयार हो चुकी है। भवन निर्माण, औषधि निर्माण इकाई, आवश्यक प्रयोगशालाएं और संग्रहण स्थल का कार्य सफलतापूर्वक पूरा हो चुका है। यहाँ तैयार होने वाली आयुर्वेदिक औषधियां अब सुव्यवस्थित तरीके से जरूरतमंदों तक पहुँचाने की दिशा में कदम बढ़ाया जा रहा है, ताकि इनका लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग को मिल सके। यह ओपीडी केंद्र न केवल रोगों के उपचार का स्थान होगा, बल्कि सेवा, सहानुभूति और स्वास्थ्य संवर्धन का एक जीवंत प्रतीक भी बनेगा। यहाँ सामान्य रोगों के उपचार, निवारक स्वास्थ्य सेवाओं और जीवनशैली सुधार पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। रोगियों की सुविधा के लिए विस्तृत वेटिंग एरिया, फार्मेसी, रजिस्ट्रेशन काउंटर और सुव्यवस्थित चिकित्सा कक्ष का निर्माण लगभग पूर्ण हो चुका है। भवन का बाहरी एवं आंतरिक कार्य भी अंतिम रूप ले रहा इस परियोजना की नींव मुसालिया निवासी, चेन्नई एवं दुर्बिं प्रवासी श्री राकेश - श्रीमती रचना बोहरा द्वारा, जैन संस्कार विधि से दिनांक 17 जुलाई 2024 को रखी गई थी। जैन विश्व भारती परिवार, अनुदानदाता के प्रति अपनी गहन कृतज्ञता व्यक्त करता है।





वृद्ध साध्वी सेवा केंद्र का नवीनीकरण - इतिहास में नया अध्याय

लाडनूं क्षेत्र की अमूल्य धरोहर, वृद्ध साध्वी सेवा केंद्र, जो एक सौ पचास वर्षों के गैरवमयी इतिहास का साक्षी है, अपने आप में एक अनूठी विरासत है। यह केवल एक भवन नहीं, बल्कि साध्वी वृद्ध की सेवा, त्यग और साधना का जीता-जागता प्रतीक है। समय के साथ इसकी संरचना में आवश्यक मरम्मत और सौंदर्य संवर्धन की आवश्यकता महसूस की गई। नवीनीकरण के अंतर्गत भवन में मूलभूत सुविधाओं का सृजन, संरचनात्मक मरम्मत, आंतरिक साज-सज्जा और बाहरी सौंदर्यीकरण का कार्य किया गया। इन सुधारों के बाद भवन अब अपनी एक नई, भव्य और प्रेरणादायी छवि के साथ सभी के सम्मुख है। इस कार्य ने न केवल अतीत की स्मृतियों को संजोया है, बल्कि आने वाली पीढ़ीयों के लिए इसे और भी उपयोगी व सुरक्षित बना दिया है। जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों ने अनुदानदाता परिवार, राजलदेसर के बैद परिवार के प्रतिनिधि श्री गणेशमलजी-छत्तरमलजी बैद से संपर्क किया। परिवार ने इस ऐतिहासिक धरोहर के नवीनीकरण हेतु सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। इस योगदान के लिए अनुदानदाता बैद परिवार के प्रति जैन विश्व भारती परिवार हार्दिक आभार प्रकट करता है।

जैन विश्व भारती में जलापूर्ति परियोजना का कार्य पूर्ण

योगक्षेम वर्ष के पावन अवसर पर जैन विश्व भारती परिसर में पेयजल एवं समुचित जलापूर्ति की दीर्घकालीन आवश्यकता को पूर्ण करने हेतु एक महवपूर्ण परियोजना का सफल समापन हुआ है। वर्षों से अनुभव की जा रही जलापूर्ति संबंधी चुनौतियों का समाधान अब एक सुव्यवस्थित, आधुनिक और दीर्घकालीन व्यवस्था के रूप में उपलब्ध है। इस परियोजना के अंतर्गत आधुनिक तकनीकों के साथ नवीन भूमिगत जलटैक का निर्माण, ओवरहेड टैक का सुदृढ़ निर्माण तथा तीन बड़े भूमिगत टैकों की स्थापना संपन्न हुई है। साथ ही, परिसर के विभिन्न हिस्सों तक जल की निर्बाध आपूर्ति के लिए नवीन पाइपलाइन नेटवर्क बिछाया गया है, जिससे पानी की गुणवत्ता और दबाव दोनों में सुधार होगा। यह योजना लंबे समय तक चले विचार-विमर्श और सूक्ष्म योजना का परिणाम है, जिसका उद्देश्य केवल वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करना ही नहीं, बल्कि आने वाले कई वर्षों तक परिसर में निवासरत साधकों, आगंतुक श्रद्धालुओं, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों के लिए सतत जल उपलब्धता सुनिश्चित करना है। परियोजना की परिपूर्णता के साथ ही योगक्षेम वर्ष में जलापूर्ति की समस्या का स्थायी समाधान संभव हो गया है। इस उपलब्धि में सहयोग और उदारता प्रदान करने वाले अनुदानदाता श्री अजितसिंहजी चौरड़िया (लाडनूं - सूरत) का जैन विश्व भारती परिवार हृदय से आभार व्यक्त करता है।

परिसर सौन्दर्यकरण के अन्तर्गत बगीचों का नवीनीकरण और आकर्षण में वृद्धि

जैन विश्व भारती परिसर की प्राकृतिक सुंदरता सदैव ही आगंतुकों को मोह लेती है। यहाँ का शांत वातावरण, हरी-भरी छटा और सुसज्जित उद्यान न केवल नेत्रों को आनंदित करते हैं, बल्कि मन को भी अद्भुत शांति प्रदान करते हैं। इसी सौन्दर्य को और नवीनता व आकर्षण से संपन्न करने के उद्देश्य से परिसर के विभिन्न उद्यानों के नवीनीकरण और सौन्दर्यकरण का महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ किया गया। इस परियोजना के अंतर्गत नेहरू पार्क, कामधेनु पार्क और शुभम अतिथिगृह पार्क को पूर्णतः नया रूप प्रदान किया गया। पार्कों में सघन हरियाली, सुव्यवस्थित पुष्पवाटिकाएँ, कलात्मक पाथवे और मनमोहक लैंडस्केपिंग ने परिसर की भव्यता को कई गुना बढ़ा दिया है। साथ ही, स्वास्थ्य और फिटनेस के दृष्टिकोण से ओपन एयर जिम के आधुनिक उपकरण भी स्थापित किए गए हैं, जो आगंतुकों और निवासियों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बन रहे हैं। कामधेनु पार्क में मोरों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए एक विशेष सुरक्षित क्षेत्र निर्धारित किया गया है, जिससे परिसर की जैव विविधता और भी संरक्षित रहेगी। वहीं शुभम अतिथिगृह के सामने स्थित पार्क में निर्मित हो रहा सुंदर गजेबो न केवल बैठने व विश्राम का स्थान है, बल्कि पार्क की कलात्मकता को भी निखार रहा है। रात्रिकालीन सौन्दर्य को और मनमोहक बनाने के लिए पार्कों में आधुनिक लाइट पोल, रंगीन रोशनी और विशेष प्रकाश व्यवस्था की गई है, जो रात में एक अद्भुत नयनाभिराम दृश्य प्रस्तुत करती है। इस सौन्दर्यकरण कार्य के लिए अनुदानदाता चंदनतारा फाउंडेशन - श्री मनोजजी एवं श्री राजेशजी दगड (लाडनु-वापी-हैदराबाद) का जैन विश्व भारती परिवार आभार व्यक्त करता है।

अन्य परियोजनाएं

जैन विश्व भारती का सुनहरा विस्तार और विकास की ओर अग्रसर जयपुर, टमकोर, लुधियाना एवं बैंगलुरु की नव परियोजनाएँ जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय एवं जैन विश्व भारती महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर और टमकोर एवं संबद्ध संस्थाओं (शुभ संस्कार फाउंडेशन, लुधियाना एवं आचार्य श्री तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केंद्र, बैंगलुरु) द्वारा शिक्षा, अधोसंरचना और विकास के क्षेत्र में अनेक नवीन परियोजनाएँ सतत गतिमान हैं। इन योजनाओं के अंतर्गत -

जैन विश्व भारती संस्थान की आचार्य महाश्रमण कॉलोनी में 20 नवीन स्टाफ-क्वार्टर्स का निर्माण कार्य पूर्ण

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के सतत विकास और सुव्यवस्थित आवासीय व्यवस्था की दिशा में एक महनीय कदम के रूप में आचार्य महाश्रमण कॉलोनी में 20 नवीन स्टाफ-क्वार्टर्स का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है। आधुनिक सुविधाओं से युक्त ये आवासीय इकाइयाँ विश्वविद्यालय के शिक्षकों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं अन्य स्टाफ सदस्यों के लिए एक सुसज्जित और आरामदायक निवास प्रदान करेंगी। मातृ-संस्था द्वारा पूर्व में उपलब्ध करवाए गए संबंधित आवास को पुनः मातृ-संस्था को सुपुर्द कर दिया गया है, जिससे आवासीय संसाधनों का अधिकतम और संतुलित उपयोग सुनिश्चित हो सके। जैन विश्व भारती संस्थान के अन्तर्गत करवाये जा रहे कार्यों हेतु संस्थान को साध्वाद।





जैन विश्व भारती संस्थान की आचार्य महाश्रमण कॉलोनी में नवीन कुण्ड, सीवरेज लाइन एवं आधारभूत संरचना का विकास

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के आवासीय क्षेत्र आचार्य महाश्रमण कॉलोनी में आधारभूत सुविधाओं के विस्तार और उन्नयन के तहत एक महवपूर्ण विकास कार्य संपन्न हुआ है। कॉलोनी में 1 लाख लीटर क्षमता वाले नवीन कुण्ड का निर्माण पूर्ण हो गया है, जो स्वच्छ एवं निरंतर जलापूर्ति सुनिश्चित करने में सहायक होगा। इसके साथ ही, सीवरेज लाइन एवं वर्षा जल निकासी हेतु सुदृढ़ नालियों का निर्माण भी पूर्ण कर लिया गया है, जिससे कॉलोनी में जल-जमाव जैसी समस्याओं से स्थायी रूप से निजात मिल सकेगी। जैन विश्व भारती संस्थान के अन्तर्गत करवाये जा रहे कार्यों हेतु संस्थान को साधुवाद।

संस्थान के अकादमिक भवन एवं अतिथि-गृह का नवीनीकरण एवं सौन्दर्य-वृद्धि

जैन विश्व भारती संस्थान में आधुनिक, सुसज्जित एवं प्रेरणादायी परिसर के निर्माण की दिशा में एक महवपूर्ण कदम के रूप में, अकादमिक भवन के विभिन्न कार्यालयों, बरामदों एवं शैक्षालयों के नवीनीकरण एवं सौन्दर्यकरण का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है और शीघ्र ही सुपुर्दगी के लिए तैयार है। इसके साथ ही, अतिथि-गृह के 6 कक्षों और कैट्टीन के डाइनिंग हॉल का भी नवीनीकरण एवं सौन्दर्य-वृद्धि की दिशा में कार्य सम्पन्न होने के अंतिम चरण में है। अतिथि-गृह के ये कक्ष अब और भी आरामदायक, सुन्दर एवं स्वागतयोग्य रूप में अतिथियों का अभिनन्दन करने के लिए तैयार होंगे। साथ ही, विद्यार्थियों एवं स्टाफ के सामूहिक संवाद और सौहार्दपूर्ण बैठकों के लिए हॉल को नए स्वरूप में विकसित करने का कार्य भी प्रारम्भ हो चुका है। जैन विश्व भारती संस्थान के अन्तर्गत करवाये जा रहे कार्यों हेतु संस्थान को साधुवाद।

आचार्य महाप्रज्ञ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र में नवीन स्टाफ-क्वार्टर एवं गेस्ट-रूम निर्माण कार्य पूर्णता के निकट

जैन विश्व भारती संस्थान के आचार्य महाप्रज्ञ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र में अधोसंरचना के विस्तार एवं आधुनिक सुविधाओं के सृजन की दिशा में एक महवपूर्ण उपलब्धि के रूप में, 14 नवीन स्टाफ-क्वार्टरों एवं 14 नवीन गेस्ट-रूमों का निर्माण कार्य अब अपने अंतिम चरण में पहुँच चुका है और शीघ्र ही सुपुर्दगी हेतु तैयार है। ये स्टाफ-क्वार्टर चिकित्सा केन्द्र के कार्यरत कर्मियों के लिए आरामदायक, सुव्यवस्थित एवं सुविधासंपन्न आवास उपलब्ध करवाएँगे, जिससे वे अपने दायित्वों का निर्वहन और भी उत्साह एवं समर्पण से कर सकेंगे। जैन विश्व भारती संस्थान के अन्तर्गत करवाये जा रहे कार्यों हेतु संस्थान को साधुवाद।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं अत्याधुनिक लिफ्ट स्थापना कार्य प्रारंभ

जैन विश्व भारती संस्थान में अधोसंरचना के आधुनिकीकरण और सुविधा विस्तार की दिशा में एक और महवपूर्ण कदम उठाया गया है। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं अतिथिगृह के प्रथम तल तक निर्बाध पहुँच सुनिश्चित करने हेतु 6 व्यक्तियों की क्षमता वाली अत्याधुनिक लिफ्ट लगाए जाने का कार्य विधिवत प्रारंभ हो चुका है। इस लिफ्ट की स्थापना से न केवल छात्राओं, आगंतुकों और अतिथियों को सीढ़ियों के बिना सहज एवं सुरक्षित आवागमन की सुविधा प्राप्त होगी, विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों, दिव्यांगजनों और भारी सापान के साथ आने वालों के लिए यह सुविधा अत्यंत सहायक सिद्ध होगी। जैन विश्व भारती संस्थान के अन्तर्गत करवाये जा रहे कार्यों हेतु संस्थान को साधुवाद।

आवास नवीनीकरण एवं विशाल जल-संग्रहण कुण्ड निर्माण कार्य प्रगति पर

जैन विश्व भारती संस्थान में बुनियादी ढांचे के सुदृढीकरण और सुविधाओं के विस्तार की दिशा में कार्य निरंतर गति पकड़ रहा है। संस्थान के पूर्व में निर्मित समस्त आवासों का व्यापक नवीनीकरण तेजी से किया जा रहा है, जिससे इन आवासों को अधिक आरामदायक, आकर्षक और आधुनिक सुविधाओं से युक्त रूप में परिवर्तित किया जा सके। इसके साथ ही, पानी भंडारण की दीर्घकालिक आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए तीन लाख लीटर क्षमता वाले विशाल कुण्ड का निर्माण कार्य भी पूर्ण उत्साह और तत्परता के साथ प्रगति पर है। जैन विश्व भारती संस्थान के अन्तर्गत करवाये जा रहे कार्यों हेतु संस्थान को साधुवाद।

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, लुधियाना - श्रृंखला विस्तार की ओर एक सशक्त कदम

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल की शैक्षणिक श्रृंखला के गौरवपूर्ण विस्तार के अंतर्गत, शुभ संस्कार फाउण्डेशन, लुधियाना द्वारा स्थापित की जाने वाली नवीन शैक्षणिक इकाई हेतु, विद्यालय के नामोपयोग और जैन विश्व भारती संस्थान से औपचारिक संबद्धता के लिए एक पारस्परिक समझौता प्रपत्र पर हस्ताक्षर किए गए। विगत समझौते के पश्चात, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, लुधियाना का निर्माण कार्य इस वर्ष निरंतर प्रगति पथ पर गतिमान है। अत्याधुनिक सुविधाओं, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के मानकों और संस्कारयुक्त वातावरण को ध्यान में रखते हुए, यह शैक्षणिक परिसर लुधियाना एवं आस-पास के क्षेत्रों में शिक्षा के नए आयाम स्थापित करेगा।

संस्थान को पूर्ण विश्वास है कि यह पहल न केवल महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल की श्रृंखला को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगी, बल्कि जैन विश्व भारती की शिक्षण परंपरा को राष्ट्रीय स्तर पर और अधिक सशक्त व प्रभावी बनाएगी। जैन विश्व भारती संस्थान की ओर से हार्दिक मंगलकामना की जाती है कि उसके अंतर्गत आने वाली सभी शैक्षणिक इकाइयाँ ज्ञान, संस्कार और उत्कृष्टता के पथ पर निरंतर अग्रसर हों तथा शिक्षा जगत में नवाचार और प्रगति के उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत करें।

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, बैंगलुरु - श्रृंखला विस्तार की दिशा में नया अध्याय

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल की गौरवशाली श्रृंखला के विस्तार हेतु एक और महवपूर्ण कदम के रूप में, आचार्य श्री तुलसी महाप्रज्ञ चेतन केंद्र, बैंगलुरु द्वारा स्थापित की जाने वाली नवीन शैक्षणिक इकाई के लिए एक पारस्परिक समझौता प्रपत्र पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता विद्यालय





के नामोपयोग एवं जैन विश्व भारती से औपचारिक संबद्धता प्रदान करने का सशक्त दस्तावेज है, जो शिक्षा और संस्कार के प्रसार के लिए संस्थान के सतत प्रयासों का परिचायक है। इस ऐतिहासिक समझौते के पश्चात, बैंगलुरु में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल के भव्य शैक्षणिक परिसर के निर्माण कार्य का शुभारंभ शीघ्र ही होने वाला है। आगामी निर्माण में अन्याधुनिक अधिगम सुविधाएँ, संस्कृति-संवर्धन के लिए अनुकूल वातावरण तथा नवीनतम शैक्षणिक अवसंरचना शामिल होगी, जिससे यह विद्यालय दक्षिण भारत में संस्कारयुक्त आधुनिक शिक्षा का एक आदर्श केंद्र बन सके।

जैन विश्व भारती को विश्वास है कि यह नई इकाई न केवल विद्यालय की श्रृंखला में एक और उज्ज्वल सितारा जोड़ेगी बल्कि महाप्रज्ञीय शिक्षा दर्शन को देश के विभिन्न कोनों में फैलाने में भी मील का पथर सिद्ध होगी। संस्था की ओर से हार्दिक मंगलकामनाएँ कि महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, बैंगलुरु शिक्षा, संस्कार और उत्कृष्टता की नई ऊँचाइयाँ को प्राप्त करे तथा भावी पीढ़ीयों के उज्ज्वल भविष्य का सशक्त आधार बने।

परिसर में सौन्दर्यकरण के अन्तर्गत चार सर्किल का निर्माण

सुचारु आवागमन व सौन्दर्यकरण की दृष्टि से परिसर में चार सुन्दर व ज्ञानवर्धक सर्किल का निर्माण करवाया जा रहा है। योग व ध्यान को समर्पित तथा पर्यावरण संरक्षण को समर्पित ये सर्किल चंदनतारा दुगड़ फांउडेशन, श्री राजेश-मनोज दुगड़, लाडनूं-वापी-हैदराबाद व एडवोकेट आलम अली, नूर फाउडेशन, लाडनूं, श्री विजयराज आंचलिया, चेन्नई व श्री विकास-मनीष बोथरा, इस्लामपुर के सहयोग से किया जा रहा है। सभी के प्रति हार्दिक आभार।

भावी योजनाएँ

परिसर में वाटर साप्टनर प्लान्ट का स्थापन

जैन विश्व भारती परिसर में आगामी योगक्षेम वर्ष को दृष्टिगत रखते हुए वाटर साप्टनर प्लान्ट की अपेक्षा थी। उक्त प्लान्ट के सम्पूर्ण स्थापन सहयोगी के रूप में श्री सुरेन्द्र घोसल, लाडनूं-दिल्ली द्वारा अनुदान की घोषणा की गई, अतएव हार्दिक आभार। आगामी समय में शीघ्र ही कार्य पूर्ण कर लिया जाएगा।

वृद्ध साध्वी सेवाकेन्द्र में नवनिर्माण एवं नवीनीकरण

जैन विश्व भारती के अन्तर्गत वृद्ध साध्वी सेवाकेन्द्र जो कि हमारी ऐतिहासिक विरासत है, के पीछे के भूभाग पर नवीन भवन का निर्माण कार्य अपेक्षित था एवं मुख्य भवन का नवीनीकरण भी आवश्यक था। उक्त परियोजना के सौजन्यकर्ता के रूप में श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुम्बई व श्री छतरमल बैद, राजलदेसर-चेन्नई द्वारा घोषणा की गई है।

परिसर चारदीवारी का नवीनीकरण

जैन विश्व भारती के विशाल भू-भाग की सुरक्षा हेतु सुदृढ़ चारदीवारी की अपेक्षा को अनुभव किया गया एवं सूरत निवासी श्री अनिल चिंडालिया परिवार द्वारा उक्त कार्य को पूर्ण करवाये जाने की घोषणा की गई, अतएव हार्दिक आभार।

मालूजी महाराज समाधि नवीनीकरण

जैन विश्व भारती की पावन भूमि पर स्थित मालू जी महाराज के समाधिस्थल का नवीनीकरण श्रद्धा के प्रतीक के रूप में आवश्यक था। चेन्नई निवासी श्री ललित दुगड़ द्वारा उक्त समाधि स्थल के नवीनीकरण हेतु आवश्यक अर्थ सहयोग की घोषणा की गई है।

उक्त नवीन परियोजनाओं के नामकरण प्रचलित भाषा अनुसार है, कालान्तर में पूज्यप्रवर के इंगित अनुसार नामकरण किया जा सकेगा।

सदस्य परिवार के बढ़ते कदम -समृद्धि की ओर

जैन विश्व भारती का सदस्य परिवार सतत विकास और समृद्धि की ओर अग्रसर है। वर्तमान में हमारे साथ 1 संस्थापक सदस्य 2 अतिविशिष्ट सदस्य 145 विशिष्ट सदस्य 1313 आजीवन सदस्य गर्व और गौरव के साथ जुड़े हुए हैं। इस विशाल परिवार के निरंतर विस्तार और प्रगति की हार्दिक कामना करते हैं। यह हर्ष का विषय है कि हाल ही में हमारे परिवार में 29 नवीन विशिष्ट सदस्य 28 नवीन आजीवन सदस्य का स्नेहपूर्ण और उत्साहभरा स्वागत हुआ है। इन नये साथियों के आगमन से हमारी सामूहिक शक्ति उत्साह और सेवाभाव में नई ऊर्जा का संचार हुआ है।

अचिन्तनीय और अकल्पनीय कार्यों की सफल पूर्णता ने यह सिद्ध कर दिया है कि जहाँ गुरु-दृष्टि का पावन आशीर्वाद और मार्गदर्शन प्राप्त हो, वहाँ कोई भी लक्ष्य दूर या असंभव नहीं रहता। योगक्षेम वर्ष की दृष्टि से यदि हम अवलोकन करें तो परिसर में संचालित विकास कार्यों के अंतर्गत जैन विश्व भारती ने अनेक ऐतिहासिक उपलब्धियाँ अर्जित की हैं, जिनका विस्तृत विवरण “परिसर विस्तार” खंड में प्रस्तुत किया जा चुका है। अब समय है, संस्था के प्राण “विशेष सप्त सकार” के अंतर्गत संपन्न किए गए विविध कार्यों की विस्तृत एवं प्रेरणादायक रिपोर्ट आपके समक्ष रखने का। ये सप्त सकार-शिक्षा, सेवा, शोध, साहित्य, साधना, समन्वय और संस्कृति-संस्था के जीवन-धारा हैं, जिनमें निहित प्रत्येक प्रयास समाज, राष्ट्र और सम्पूर्ण मानवता के उत्थान हेतु समर्पित है। यह सप्त सकार न केवल संस्था की पहचान है, बल्कि समाज और मानवता के लिए उसके योगदान का मापदंड भी हैं। बीते वर्ष में इन सातों क्षेत्रों में अनेक उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न हुए, जिनमें संकल्प की दृढ़ता, संसाधनों का सदुपयोग और सामूहिक भागीदारी का सुंदर संगम देखने को मिला। समग्र रूप से, यह वर्ष सप्त सकार के क्षेत्र में सृजनात्मक, प्रेरणादायक और मील के पथर जैसी उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा। यह प्रमाण है कि जब लक्ष्य स्पष्ट हों, संकल्प अडिग हो और गुरु-कृपा साथ हो, तो हर कठिनाई सफलता के मार्ग में एक सीढ़ी मात्र बन जाती है।





शिक्षा - (सर्वांग शिक्षा के विकास के उपक्रम)

जैन विश्व भारती-सकार

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)

जैन विश्व भारती संस्थान अपने अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के महनीय मार्गदर्शन एवं मातृ संस्था जैन विश्व भारती के संरक्षण में मूल्यप्रक उच्च शिक्षा एवं महिला शिक्षा को समर्पित यह विश्वविद्यालय अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रहा है। नैक की टीम द्वारा प्राप्त ए ग्रेड के साथ यह विश्वविद्यालय देश के चुनिंदा विश्वविद्यालयों में सम्मिलित हो चुका है। पुरातन ज्ञान एवं आधुनिक शिक्षा के समन्वय में संस्थान का विशिष्ट महव है।



श्री अर्जुनराम मेघवाल



प्रो. ब्रजराज दुग्गल

संस्थान में वर्तमान में सात स्नातकोत्तर विभाग एवं एक आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय संचालित हैं जिनके अन्तर्गत कुल 32 स्नातक 7 स्नातकोत्तर एवं प्रमाण-पत्र नियमित पाठ्यक्रम तथा दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कुल 6 स्नातकोत्तर एवं 2 स्नातक स्तरीय पत्राचार पाठ्यक्रम संचालित हैं। इनमें मुख्यतः जैन विद्या प्राकृत संस्कृत हिन्दी, अंग्रेजी, अहिंसा एवं शांति, राजनीति विज्ञान, योग एवं जीवन-विज्ञान, समाज-कार्य तथा सात प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम भी संचालित किए जा रहे हैं। शिक्षा विभाग के अन्तर्गत एम.एड., बी.एड., बीए-बीएड. एवं बीएससी-बीएड. आदि शिक्षक-शिक्षा संबंधी पाठ्यक्रम संचालित हैं, वहीं स्नातक स्तर पर कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के पाठ्यक्रम संचालित हैं।

संस्थान का वर्ष 2024-2025 का प्रगति विवरण निम्न प्रकार है

विद्यार्थी संख्या

- | | |
|----------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------|
| 1. नियमित विद्यार्थी - 1089 | 2. पत्राचार के माध्यम से विद्यार्थी - कुल 11140 |
| 3. कुल शोध जारी 21 शोध पूर्ण किए गए एवं 170 शोधार्थी विभिन्न विभागों में अध्ययनरत हैं। | |

आचार्य महाप्रज्ञ नैचुरोपैथी चिकित्सा केन्द्र का संचालन

संस्थान की नवीनतम उपलब्धि के रूप में इस केन्द्र का सफल संचालन किया जा रहा है। केन्द्र में अनुभवी चिकित्सकों, अत्याधुनिक उपकरणों एवं उत्कृष्ट सुविधाओं के साथ प्राकृतिक चिकित्सा जैसे कोलन थेरेपी, हाइड्रो थेरेपी, मड थेरेपी, स्टीम बाथ, मसाज आदि पद्धतियों के माध्यम से विभिन्न शारीरिक व्याधियों का सफल उपचार किया जा रहा है। प्रतिमाह दस दिवसीय दो शिविरों का आयोजन किया जा रहा है।

योग एवं नैचुरोपैथी स्नातक पाठ्यक्रम को स्वीकृति

संस्थान की नवीनतम उपलब्धि के रूप में योग एवं नैचुरोपैथी के 4-5 वर्षीय पाठ्यक्रम को राज्य सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा मान्यता प्रदान की गई है। इस सत्र से प्रवेश प्रारंभ कर दिया गया है। संस्थान की इस अभिन्न उपलब्धि हेतु संस्थान की टीम को साधुवाद।

35वें स्थापना दिवस समारोह का आयोजन

राजस्थान राज्य के राज्यपाल महामहिम श्री हरिभाउजी बागडे के मुख्य आतिथ्य में 35वें स्थापना दिवस का आयोजन संपोषणम हॉल में किया गया, जिसमें जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति प्रो. ब्रजराजजी दुग्गल, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री अमरचंदजी लुंकड, न्यासी श्री सुभाषचंदजी नाहर, श्री राजेशजी दुग्गल, परिसर संयोजक श्री धरमचंदजी लुंकड की उपस्थिति रही।

सूरत में 15वें दीक्षान्त समारोह का आयोजन

जैन विश्व भारती संस्थान का 15वां दीक्षान्त समारोह अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि एवं केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्रजी प्रधान की अध्यक्षता में सूरत, गुजरात में आयोजित किया गया, जिसमें माननीय कुलाधिपति अर्जुनरामजी मेघवाल की वर्चुअल उपस्थिति रही। कार्यक्रम में सुप्रीम कोर्ट के पूर्व-जज जस्टिस दिनेश माहेश्वरी को डी.लिट. की मानद उपाधि प्रदान की गई (11 नवम्बर, 2024)। जैन विश्व भारती मातृ संस्था के पदाधिकारियों की भी उपस्थिति रही।

संस्थान की शैक्षणिक उपलब्धियां

- संस्थान के अन्तर्गत आचार्यश्री महाप्रज्ञ नैचुरोपैथी चिकित्सा केन्द्र का शुभारंभ कराकर मरीजों का सफल इलाज जारी है। यहाँ मेडिकल ग्रेजुएशन कोर्स 'बीएनवाईएस' के तहत प्रवेश प्रारंभ किया जा चुका है।
- संस्थान में स्थापित नेशनल मैन्युस्क्रिप्ट सेंटर में अब तक कुल 6655 महवपूर्ण पांडुलिपियों का संरक्षण किया जा चुका है। उक्त प्रक्रिया पूर्णतः वैज्ञानिक रूप से संचालित है।
- संस्थान का देश-विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के साथ एमओयू हुआ है।
- संस्थान को यूजीसी द्वारा सेक्शन 12बी की स्वीकृति प्राप्त है तथा ओ.डी.एल. यानी ओपन डिस्टेंस लर्निंग की स्वीकृति भी प्राप्त है। राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम द्वारा प्रायोजित योग, ध्यान एवं प्राकृति चिकित्सा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।







- संस्थान के समस्त पाठ्यक्रमों में नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 के अंतर्गत परिवर्तन किए गए हैं।
- आगामी सत्र में विभिन्न ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को प्रारंभ करने एवं वीडियो रिकॉर्डिंग प्रक्रिया प्रारंभ करने की योजना है।

अन्य प्रमुख उपलब्धियाँ

- भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, संस्कृति मंत्रालय आदि के द्वारा विभिन्न नवीन प्रोजेक्ट एवं अनुदान आवंटित किए गए हैं।
- प्रो. बनवारी लाल जैन एवं डॉ. अमिता जैन द्वारा विकसित डिजाइन 'Pedagogy Device for Online Teaching Learning' का राष्ट्रीय पेटेंट प्राप्त।
- डॉ. लिपि जैन, डॉ. रविन्द्रसिंह राठौड़ एवं डॉ. बलबीर सिंह द्वारा विकसित 'Novel Behavioral Training System' का राष्ट्रीय पेटेंट।
- प्रो. बनवारीलाल जैन एवं डॉ. अमिता जैन द्वारा विकसित पद्धति 'A System and Method for Innovative Teaching Strategies for Enhancing Student Engagement in the Digital Classroom' का राष्ट्रीय पेटेंट।
- डॉ. आभासिंह, डॉ. विष्णु कुमार एवं डॉ. गिरधारीलाल शर्मा द्वारा विकसित डिजाइन Ai - Based Digital Education Device का नवीन राष्ट्रीय पेटेंट।
- Florida International University, Miami, USA, नैर्थ टेक्सास विश्वविद्यालय, अमेरिका, संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग तथा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गुजरात एवं शांति अध्ययन विभाग के मध्य नवीन द्विपक्षीय समझौते का निष्पादन।
- अकादमिक परिषद् द्वारा साधु-साध्वियों के लिए पीएच.डी. में प्रवेश हेतु रीट परीक्षा में उत्तीर्णता की अनिवार्यता के स्थान पर संस्थान स्तर पर आयोजित Research Eligibility Test RET परीक्षा के माध्यम से प्रवेश प्रदान किये जाने हेतु स्वीकृति प्राप्त।
- वर्ष भर में सौ से अधिक विविध कार्यशालाओं, व्याख्यान मालाओं एवं सेमिनारों का आयोजन।
- World Institutional Ranking Organisation, Mumbai द्वारा आयोजित MHW Ranking 2024 सर्वे में संस्थान द्वारा शैक्षणिक सदस्यों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को प्रदान की जा रही उत्कृष्ट सुविधाओं के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान व पुरस्कार प्रदान किया गया।

आधारभूत संरचनाओं का विकास

- आचार्य महाश्रमण कॉलोनी में 20 नवीन स्टाफ-क्वार्टर्स का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ। जैन विश्व भारती में आवासित संस्थान सदस्यों का इन नवनिर्मित स्टाफ-क्वार्टर्स में स्थानांतरण कर मातृ-संस्थान द्वारा पूर्व में किराये पर उपलब्ध कराए गए संबंधित आवास पुनः मातृ-संस्थान को सुपुर्द कर दिए गए।
- आचार्य-महाश्रमण कॉलोनी में 1 लाख लीटर क्षमता के नवीन कुण्ड, सीवरेज लाइन एवं पानी-निकासी हेतु नालियों का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ तथा नवीन सड़क, चारदीवारी एवं मुख्य द्वार निर्माण का कार्य प्रारंभ हो चुका है।
- संस्थान के अकादमिक भवन के विभिन्न कार्यालयों, बरामदों एवं शौचालयों तथा अतिथि-गृह के 6 कक्षों एवं कैटीन के डाइनिंग हॉल के नवीनीकरण, सौंदर्यकरण का कार्य लगभग पूर्ण होकर शीघ्र सुपुर्दगी हेतु तैयार है तथा विद्यार्थियों एवं स्टाफ की बैठक हेतु कैटीन हॉल के नवीनीकरण ध्यानदर्शकरण का कार्य प्रारंभ किया गया है।
- आचार्य महाप्रज्ञ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र में 14 स्टाफ-क्वार्टरों एवं 14 नवीन गेस्ट-रूम का निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है और शीघ्र सुपुर्दगी हेतु तैयार है।
- आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं अतिथिगृह के प्रथम तल तक पहुंचने हेतु 6 व्यक्तियों की क्षमता वाली लिफ्ट लगाने का कार्य प्रारंभ किया गया है।
- आचार्य महाश्रमण कॉलोनी में भूतल व प्रथम तल पर 16 नवीन स्टाफ क्वार्टरों के निर्माण का कार्य पूर्ण होकर अंतिम चरण में है।
- इसके अतिरिक्त पूर्व में बने हुए समस्त आवासों के नवीनीकरण का कार्य भी गतिशील है तथा पानी भंडारण के लिए तीन लाख लीटर क्षमता के कुण्ड का निर्माण कार्य भी प्रगति पर है।

कृतज्ञता - आभार

जैन विश्व भारती संस्थान को अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी का निरंतर आध्यात्मिक संरक्षण प्राप्त हो रहा है, आचार्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। गुरु सम्बोधि कार्यक्रम में आचार्यप्रवर द्वारा पावन पाथेय प्रदान किया गया, हम इसके लिए कृतज्ञ हैं, पूज्य गुरुदेव के प्रति। आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमारश्रमणजी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। कुलाधिपति श्री अर्जुनरामजी मेघवाल द्वारा संस्थान को प्रदत्त कुशल मार्गदर्शन हेतु हार्दिक आभार। कुलपति डॉ. बच्छराज दुग्ध की सेवाओं हेतु साधुवाद। संस्थान को प्रदत्त अनुदान हेतु सभी सहयोगी महानुभावों एवं परिवारों के प्रति हार्दिक आभार। संस्थान के प्रबंध मंडल, शिष्ट परिषद् एवं वित्त समिति के सदस्यों की सेवाओं हेतु साधुवाद। सभी प्रशासनिक अधिकारीगण, प्राध्यापकगण एवं गैर-शैक्षणिक कर्मीगणों को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत कर्मठ युवा विद्यार्थियों के प्रति आभार।





विमल विद्या विहार सीनियर सेकेंडरी स्कूल



श्री गौरव जैन मांडोत

विमल विद्या विहार जैन विश्व भारती लाडनूँ के ज्ञानदीप में एक विशिष्ट और अनूठा प्रकल्प है जिसकी स्थापना शिक्षा, संस्कार एवं नैतिक मूल्यों के समन्वय हेतु की गई है। यह विद्यालय आचार्य तुलसी की दूरदर्शी सोच पावन प्रेरणा एवं युगदृष्टि का जीवंत रूप है। उनका मानना था कि केवल ज्ञान ही नहीं, अपितु जीवन मूल्यों और चरित्र निर्माण की शिक्षा ही सच्चा शिक्षण कहलाता है। विमल विद्या विहार इसी दृष्टिकोण पर आधारित एक शैक्षणिक ईकाई है, जहाँ आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक जागरूकता, नैतिक अनुशासन और मानवीयता का समुचित विकास होता है।

विद्यालय का वातावरण आध्यात्मिकता और सादगी से पूर्ण है। यहाँ के विद्यार्थी न केवल विषयविज्ञान में, बल्कि आत्मविज्ञान की ओर भी अग्रसर होते हैं। योग, प्रेक्षाध्यान जैन दर्शन एवं संस्कारों को शिक्षा में समाहित कर यह संस्था बालकों को संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में प्रोत्साहित करती है।

गणाधिपति तुलसी ने विमल विद्या विहार के सन्दर्भ में कहा था, यह विद्यालय केवल शिक्षा देने का केन्द्र नहीं बल्कि एक संस्कारशाला है जहाँ आत्मा का जागरण होता है। शिक्षा का उद्देश्य मात्र जीविका नहीं, अपितु जीवन को सही दिशा देना होना चाहिए और विमल विद्या विहार इसी उद्देश्य की पूर्ति कर रहा है। उन्होंने इस विद्यालय को चरित्र निर्माण की प्रयोगशाला भी कहा था। 1024 विद्यार्थियों के साथ सीबीएसई से संबद्ध यह विद्यालय न केवल शिक्षा के क्षेत्र में सरमार है अपितु अपनी अनूठी गतिविधियों के कारण आसपास के क्षेत्रों में विशिष्ट पहचान भी रखता है।

शैक्षणिक सत्र 2024 - 25 की विद्यालय की विशिष्ट उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं -

1. उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम एवं केन्द्रीय बोर्ड परीक्षाओं का केन्द्र
2. विद्यालय का सत्र 2024-25 का दसवीं एवं बारहवीं बोर्ड परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। छात्रों ने उच्चतम अंक प्राप्त कर सुजलाचंद क्षेत्र में वरियता प्राप्त की।
3. विद्यालय की कक्षा नवारी से आठवीं तक का परिणाम शत-प्रतिशत रहा तथा कक्षा 9 एवं 11 का परिणाम 98 प्रतिशत रहा।

विद्यालय में चार दिवसीय बॉलिवाल क्लस्टर एवं तीन दिवसीय क्रिकेट लीग का आयोजन

विमल विद्या विहार में प्रथम बार सीबीएसई द्वारा संचालित राज्यस्तरीय बॉलिवाल क्लस्टर का आयोजन धर्म-किरण स्पोर्ट्स एरिना में संपन्न हुआ, जिसमें पूरे राज्य से 300 बालिकाओं ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र में नागौर जिला परिषद के सीईओ श्री रविन्द्र कुमार, संरक्षक श्री भागचंद बरड़िया आदि उपस्थित थे। समापन सत्र में सीबीएसई क्षेत्रीय प्रभारी श्री श्याम कपूर की उपस्थिति रही।

इसी प्रकार तीन दिवसीय क्रिकेट लीग में 11 टीमों ने भाग लिया। इसका उद्घाटन जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री श्री नवीन बैंगाणी एवं परिसर संयोजक श्री धरमचंद लुंकड़ ने किया। समापन सत्र में आर.टी.एस. लाडनूँ के श्री अनिरुद्ध देव पाण्डेय ने विजेता टीम को सम्मानित किया।

विमल विद्या विहार का नवीनीकरण एवं सौंदर्यकरण

विमल विद्या विहार की दोनों विंग जय तुलसी विद्या विहार एवं सीनियर विंग में संपूर्ण नवीनीकरण एवं सौंदर्यकरण का कार्य सुचारू रूप से प्रगति पर है। जय तुलसी विद्या विहार में नवीनीकरण के अंतर्गत नवीन कम्पोजिट लैंब, नये कमरे तथा झूलों एवं नवीन फर्नीचर की स्थापना का कार्य पूर्ण हुआ है। सीनियर विंग का नवीनीकरण शीघ्र पूर्ण होने की ओर है।

छात्रावास के नवीनीकरण का कार्य भी प्रारंभ हो चुका है जिसमें प्रारंभिक चरण में 100 विद्यार्थियों की आवास व्यवस्था हेतु निर्माण कार्य जारी है। ये सभी कार्य श्री कमलसिंह- डॉ. रत्ना बैद एवं जे.एल.सी. इलेक्ट्रोमेट, लाडनूँ-जयपुर के आर्थिक सहयोग से सम्पन्न हो रहे हैं।

नवीन बाल वाहिनी का आगमन

विद्यालय में शुभकाम वेन्चर्स प्रा. लिमिटेड श्री राकेशजी कठोतिया, मुम्बई के आर्थिक सौजन्य से नवीन बाल वाहिनी की प्राप्ति हुई, जिसके लिए अनुदानदाता के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया जाता है।

शैक्षणिक नवाचार

गुडगांव की प्रतिष्ठित संस्था बन मोर स्कूल के साथ विद्यालय में शैक्षणिक सुधार एवं नवाचार की दृष्टि से दो वर्ष के लिए एमओयू निष्पादित किया गया है जिसमें प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रचार-प्रसार एवं शिक्षण तकनीकों की कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा।

प्रशासनिक जागरूकता

प्रशासनिक जागरूकता हेतु विद्यार्थियों ने कलेक्टर कार्यालय का भ्रमण किया एवं जिला कलेक्टर श्री पुखराज सेन से संवाद किया। इस अवसर पर संचालिका समिति सदस्य श्री धीरज धारीवाल उपस्थित रहे। साथ ही विद्यार्थियों ने लाडनूँ पुलिस थाना तथा डाकघर का भ्रमण कर उनकी कार्यप्रणाली का अवलोकन किया।

जैन विश्व भारती में पधारने पर राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागड़े से विद्यार्थियों का संवाद हुआ तथा रक्षा मंत्रालय सलाहकार श्रीमती रसिका चैबे के लाडनूँ आगमन पर भी एक विशेष संवाद आयोजित किया गया।





अन्य गतिविधियाँ

- मदर्स डे के अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा ऋषभद्वार, राहुगेट, आसोटा, पीएचएडी चैराहा एवं अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी कार्तिकयशाजी का पावन पाठ्य प्राप्त हुआ।
- त्रिदिवसीय दीवाली फेस्ट, अर्थ डे पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। पर्यावरण संरक्षण के संदेश के साथ होली का भी भव्य आयोजन किया गया।
- जैन समाज के महापर्व पर्युषण के अवसर पर आठ दिनों तक साध्वीवृन्द ने शासनगौरव साध्वी कल्पलताजी के सान्निध्य एवं साध्वी तेजस्वीप्रभा व रोहिणीप्रभा जी के मार्गदर्शन में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया।
- आचार्य महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस के अवसर पर शासनगौरव साध्वी कल्पलताजी के सान्निध्य में आयोजित आध्यात्मिक अनुष्ठान में विद्यार्थियों ने सहभागिता की।
- गुरुपूर्णिमा के अवसर पर जैन विश्व भारती में चतुर्मास हेतु विराजित मुनिश्री जयकुमारजी का पावन पाठ्य प्राप्त हुआ।

उपलब्धि

- विद्यालय के पांच पूर्व विद्यार्थियों का सीए परीक्षा में चयन हुआ तथा दो छात्राओं का एयरफोर्स में चयन भी हुआ।
- प्रतिभावान तेरापंथी विद्यार्थियों को अप्रवासी समुदाय विशेष रूप से दुर्बई से एवं अन्य श्रावक समाज द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की गई, जिसके लिए उदारमना श्रावक समाज के प्रति हार्दिक आभार।

शिक्षकगण एवं विद्यार्थियों द्वारा सेमीनार एवं कार्यशालाओं में प्रतिभागिता

शिक्षण की श्रेष्ठ तकनीकों के प्रशिक्षण ए शिक्षा कार्य में कौशल विकास हेतु सेमीनार एवं कार्यशालाओं में सक्रिय भागीदारी की गई। इस शृंखला में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव श्री आनंदराव वी. पाटिल द्वारा विद्यार्थियों को नवीन शिक्षा नीति के अन्तर्गत एक विशेष ऑनलाइन कार्यशाला में ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान की गई।

जैन विश्व भारती लंदन केंद्र पर विराजित समणी नीतिप्रज्ञाजी द्वारा स्टार स्टूडेंट्स के नाम से ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त सीबीएसई द्वारा आयोजित विभिन्न ऑनलाइन एवं ऑफलाइन कार्यशालाओं में भी सहभागिता हुई।

नवीन स्पोर्ट्स एरिना का निर्माण कार्य प्रारंभ

सह-शैक्षणिक गतिविधियों के विस्तार हेतु विद्यालय में नवीन स्पोर्ट्स ग्राउंड का निर्माण कार्य श्री भीखमचंद- सुशीलाजी पुगलिया, श्री ढूंगरगढ़-कोलकाता के सौजन्य से पूर्ण हुआ। आगामी विकास गतिविधि के तहत क्रिकेट प्रैक्टिस हेतु नेट का निर्माण कार्य भी चल रहा है।

कृतज्ञता एवं आभार

विद्यालय के संयोजक श्री गौरवजी जैन मांडोत एवं सह संयोजक श्री प्रवीण बरड़िया को समय पर मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु हार्दिक आभार। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती रचना बालानी एवं उप प्राचार्या श्रीमती चांदकिरण को निष्ठापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक साधुवाद। समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं कर्मचारीगणों को कुशलतापूर्वक कार्य संपादन हेतु धन्यवाद। विद्यालय के होनहार विद्यार्थियों का भी हार्दिक आभार।

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर



पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने विद्यालयों में केवल ज्ञान प्रदान करने की नहीं, बल्कि मूल्यों पर आधारित शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता पर विशेष बल दिया है। आचार्यश्री फरमाते हैं कि अहिंसा, संयम और मैत्रीभाव ही शिक्षा के मूल स्तंभ होने चाहिए और यही दृष्टिकोण महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल की समस्त कार्यप्रणाली में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

विद्यार्थियों को बाल्यकाल से ही अनुशासन, ध्यान तथा सदाचार की शिक्षा दी जाए तभी वे उत्तम नागरिक बन सकते हैं। इस स्कूल का उद्देश्य है -एक संस्कारित, आत्मनिर्भर एवं जागरूक नागरिक का निर्माण् अर्थात् यह विद्यालय केवल परीक्षा उत्तीर्ण कराने तक सीमित न रहकर व्यक्तित्व और चरित्र विकास को भी अपनी प्राथमिकता मानता है। यह स्पष्ट है कि महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मनियंत्रण तथा सामाजिक जिम्मेदारी के लिए भी प्रतिबद्ध है।

सन् 2006 में स्थापित इस विद्यालय ने जयपुर शहर के प्रतिष्ठित विद्यालयों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है, जहां प्रवेश के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा देखने को मिलती है। यह विद्यालय आधुनिक शिक्षा और नैतिकता के सुंदर संगम के रूप में विख्यात हो चुका है। वर्तमान में 1043 विद्यार्थियों के साथ संचालित इस विद्यालय के शैक्षणिक सत्र 2024-25 के उल्लेखनीय कार्य निम्नलिखित हैं।





उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम

विद्यालय का सत्र 2023-24 का दसवीं एवं बारहवीं बोर्ड परीक्षाओं का परिणाम शत-प्रतिशत रहा। विद्यालय की समस्त अन्य कक्षाओं का परीक्षा परिणाम भी शत-प्रतिशत रहा।

नवीन आवासीय ब्लॉक का शिलान्यास

जे.एल.सी. इलेक्ट्रोमेट्र प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर के सौजन्य से महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल में आवासीय खण्ड का जैन संस्कार विधि से विधिवत् शिलान्यास किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के संयोजक श्री गौरव जैन मांडोत सह-संयोजक श्री भंवरलाल गोठी तथा तेरापंथ युवक परिषद के प्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

प्रथमतः विद्यालय मेले - फन फिएस्टा का आयोजन

- विद्यालय में नवाचार के रूप में विभिन्न प्रदर्शनियों- संगीत, खेल और मनोरंजन आधारित विशेष मेले फन फिएस्टा का सफल आयोजन किया गया जिसमें 3000 से अधिक व्यक्तियों ने भाग लिया। यह प्रथम नवाचार के रूप में विशेष सफलतम कार्यक्रम रहा।
- विश्व नवकार दिवस उत्सव में विद्यालय की सक्रिय सहभागिता
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित विश्व नवकार दिवस के अवसर पर विद्यालय के विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में सहभागिता की एवं एक नया कीर्तिमान स्थापित करने में महवपूर्ण भूमिका निभाई।

अन्य गतिविधियाँ

- विद्यालय में अंतरस्कूली खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ जिसमें विद्यालय की टीम ने बॉलिवाल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सहयोग से विद्यालय में विशाल नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें विद्यार्थियों की नेत्र जांच की गई।

सहशैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन

आचार्य तुलसी महाप्रयाण दिवस, आचार्य महाप्रज्ञ जन्मोत्सव, आचार्य महाश्रमण जन्मोत्सव, दीवाली सेलिब्रेशन, मदर्स डे, गल्स एम्पावरमेंट डे, विश्व योग दिवस, गुरु पूर्णिमा, मकर संक्रान्ति, अर्थ डे आदि का भव्य और सुसंगत आयोजन किया गया।

विद्यालय में सप्तदिवसीय वन महोत्सव का आयोजन हुआ, जिसमें विद्यार्थियों द्वारा पौधारोपण किया गया।

निर्भया स्क्वाड जयपुर के निर्देशन में छात्राओं को आत्मरक्षा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इसके साथ ही रोड सेफ्टी अभियान भी संचालित किया गया।

शिक्षकगण एवं विद्यार्थियों द्वारा सेमीनार एवं कार्यशालाओं में सहभागिता

शिक्षकों द्वारा रोबोटिक कार्यशालाएं, नैचुरोपैथी कार्यशालाएं, वित्तीय साक्षरता एवं डिजिटल टूल्स के उपयोग स्वरूप जीवनशैली, एन.ई.पी. तथा तेज दिमाग के रहस्य पर विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिसमें सक्रिय भागीदारी रही।

इस श्रृंखला के अंतर्गत भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव श्री आनंदराव वी. पाटिल द्वारा विद्यार्थियों को नवीन शिक्षा नीति के अंतर्गत एक विशेष ऑनलाइन कार्यशाला में ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान की गई।

जैन विश्व भारती लंदन केंद्र पर विराजित समणी नीतिप्रज्ञाजी द्वारा स्टार स्टूडेंट्स के नाम से ऑनलाइन कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया।

कृतज्ञता एवं आभार

विद्यालय की सभी गतिविधियों में मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु संयोजक श्री गौरव जैन मांडोत, सह-संयोजक श्री भंवरलाल गोठी एवं श्रीमती चित्रा बैद का हार्दिक आभार। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती रश्मि परयानी को समर्पित सेवाओं के लिए हार्दिक साधुवाद। समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं कर्मचारीगणों को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद। विद्यालय के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को समग्र विकास एवं उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती संस्थान जैन विद्या के विश्व प्रसिद्ध केन्द्र हैं। जैन विश्व भारती के पास ज्ञान की विशाल राशि है। इसकी मिट्टी में सात संस्कारों के बीज हैं। आचार्यश्री तुलसी का तप तेजस्वी सूर्य है, जो इसकी उर्वरा को बढ़ाएगा। ज्ञान का स्रोत है, दर्शन का संरक्षण है, चरित्र की हवा है। जिससे यह बगीचा प्राच्य विद्याओं के फूलों की सुगंध को, सुवास को क्षितिज पर फैलाएगा। उस सुवास और सौभग्य से विश्व मानस पर प्रभावित हो, जीवन बोध पाएगा।

- आचार्य महाप्रज्ञ





महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल- टमकोर



श्री रणजीतसिंह कोठारी

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जन्म दिवस प्रज्ञा दिवस के पावन अवसर पर दिनांक 12 जुलाई 2007 को टमकोर में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल का विधिवत् शुभारंभ हुआ। इस विद्यालय का परम उद्देश्य है- कौशल, ज्ञान और प्रज्ञा का केंद्र बनकर विद्यार्थियों को सर्वांगीण विकास के लिए सजग एवं सशक्त बनाना। शिक्षा के साथ-साथ यहाँ जीवन विज्ञान, अहिंसा प्रशिक्षण, प्रेक्षाध्यान एवं योग आधारित नैतिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का उद्घोष था कि हम बच्चों को बुद्धिमान तो बना देते हैं पर यदि उन्हें संवेदनशील नहीं बना पाए तो शिक्षा अधूरी है। शिक्षा को चरित्र निर्माण से जोड़ना ही सच्चा शिक्षाकर्म है। ज्ञान अनुशासन और साधना इन तीनों का समन्वय ही संपूर्ण शिक्षा है। विद्यालय ऐसा हो जहाँ बालक पढ़े ही नहीं जीना भी सीखे।

उपर्युक्त विचारों को आत्मसात् करते हुए जैन विश्व भारती द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के बालकों को उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से यह विद्यालय संचालित है। वर्तमान में इस विद्यालय में टमकोर एवं आसपास के ग्रामों के लगभग 525 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं। विद्यालय का संचालन सीबीएसई से मान्यता प्राप्त नर्सरी से लेकर वरिष्ठ माध्यमिक तक अंग्रेजी माध्यम में गतिशील रूप से हो रहा है।

विद्यालय के शैक्षणिक सत्र 2024-25 की प्रमुख गतिविधियाँ इस प्रकार हैं-

उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम

विद्यालय का सत्र 2023-24 का वार्षिक परीक्षाओं का समग्र परिणाम एवं कक्षा 10वीं व 12वीं बोर्ड परीक्षाओं का परिणाम शत-प्रतिशत रहा। उत्कृष्ट प्रदर्शन के उपलक्ष्य में समस्त ग्रामवासियों द्वारा विजय जूलूस निकालकर हर्षोल्लास व्यक्त किया गया।

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर में नवीन कैन्टीन, स्टाफ क्वार्टर एवं तुलसी स्पोर्ट्स एकेडमी का भव्य लोकार्पण

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर के विकास यात्रा में एक और स्वर्णिम अध्याय जुड़ते हुए, विद्यालय के तीन महवपूर्ण उपक्रमों- नवीन कैन्टीन, आठ स्टाफ क्वार्टर एवं तुलसी स्पोर्ट्स एकेडमी का भव्य लोकार्पण इस वर्ष रामनवमी के शुभ अवसर पर संपन्न हुआ। नवीन कैन्टीन का नामकरण “सायर पाकशाला”, स्टाफ क्वार्टर को “महाश्रमण निलयम्” तथा स्पोर्ट्स एकेडमी को “तुलसी स्पोर्ट्स एकेडमी” के नाम से किया गया, जो संस्थान की संस्कृति, मूलयों और शिक्षा के प्रति समर्पण को प्रतिविंबित करते हैं। इन तीनों उपक्रमों का शुभारंभ न केवल विद्यालय की भौतिक संरचना को सुदृढ़ करेगा, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, खेलों में उत्कृष्टता तथा शिक्षकों एवं कर्मचारियों के लिए बेहतर आवासीय सुविधाओं की दिशा में एक ठोस और ऐतिहासिक कदम सिद्ध होगा। यह अवसर विद्यालय की प्रगति, नवाचार और उज्ज्वल भविष्य के संकल्प का प्रतीक बन गया।

विद्यालय के संयोजक श्री रणजीतसिंहजी कोठारी के दूरदर्शी एवं सकारात्मक चिंतन के परिणामस्वरूप, इन परियोजनाओं का शिलान्यास विगत वर्ष किया गया था। अत्यंत द्रुत गति से कार्य सम्पन्न कर इन्हें साकार रूप प्रदान किया गया, जिससे विद्यालय में सुविधाओं और गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक वातावरण की नई ऊर्जा का संचार हुआ। लोकार्पण समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्री श्री अर्जुनरामजी मेघवाल, राजस्थान सरकार के शिक्षा एवं पंचायती राज मंत्री श्री मदनजी दिलावर, हरियाणा राज्य भारतीय जनता पार्टी प्रभारी श्री सतीशजी पूनियां, पैरा ओलम्पिक संघ अध्यक्ष श्री देवेन्द्र झाझड़िया तथा अन्य प्रशासनिक वर्ग के गणमान्य जन एवं जैन विश्व भारती की ओर से पदाधिकारियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से समारोह को गौरवान्वित किया। विद्यालय के विकास की उक्त परियोजनाओं में सहयोग हेतु श्री रणजीतसिंह-सायर कोठारी, कोठारी मेटल्स प्रा. लि. कोलकाता का हार्दिक आभार।

विद्यालय में एनुअल स्पोर्ट्स मीट का आयोजन

दिसम्बर माह में विद्यालय में अंतरविद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें ग्रामवासियों की भी बड़ी संख्या में उपस्थिति रही।

सेमिनार एवं कार्यशालाओं का आयोजन

- 'Boost Your Memory - Train Your Brain' विषय पर ऑनलाइन कार्यशाला सफलतापूर्वक संपन्न हुई।
- श्रीमती स्मृतिबेन, शिकागो से विद्यालय में आर्ट एंड क्राफ्ट प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- त्रिदिवसीय टीचर्स ट्रेनिंग कोर्स के अंतर्गत प्रशिक्षकों द्वारा भौतिक रूप से शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया।
- भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव श्री आनंदराव वी. पाटिल द्वारा विद्यार्थियों के लिए नवीन शिक्षा नीति के अंतर्गत एक विशेष ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बारे में ज्ञानवर्धक जानकारी दी गई।
- जैन विश्व भारती लंदन केंद्र पर विराजित समणी नीतिप्रज्ञाजी द्वारा स्टार स्टूडेंट्स नामक ऑनलाइन कार्यशाला का सफल आयोजन हुआ।





सहशैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन

- आचार्य महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस, महावीर जयन्ती समारोह, आचार्यश्री महाश्रमण एवं आचार्य महाप्रज्ञ जन्मोत्सव, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती, मदर्से डे, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, वन महोत्सव सप्ताह, एक पेड़ मां के नाम, आचार्य भिक्षु जन्मोत्सव आदि का रचनात्मक और प्रभावशाली आयोजन किया गया।
- विज्ञान प्रदर्शनी, राष्ट्रीय बालिका दिवस, नेशनल ब्लैक डे, अणुव्रत स्थापना दिवस, इंटरनेशनल वुमन्स डे अर्थ डे, इंग्लिश एंड ब्रुक डे का आयोजन विद्यार्थियों को प्रेरक संदेश के साथ सम्पन्न किया गया।

उप-प्राचार्यों की नियुक्ति

इस सत्र में श्रीमती शानमुग्वल को उप-प्राचार्यों के रूप में नियुक्त किया गया। ज्ञातव्य है कि वे दक्षिण भारत से समागत हुई हैं।

अन्य गतिविधियाँ

- विद्यालय में समय पर चारित्रात्माओं का आगमन होता रहा जिनके सान्निध्य में आध्यात्मिक अनुष्ठान एवं नशामुक्ति के विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। चारित्रात्माओं के प्रति विद्यालय कृतज्ञता व्यक्त करता है।
- झूंझूनू व चुरु जिला प्रशासन तथा जन प्रतिनिधि श्री राजेन्द्र सिंह राठौड़ के प्रयास से टमकोर ग्राम व विद्यालय तक 6 किमी की सड़क का नवनिर्माण भी हुआ। प्रशासन व जनप्रतिनिधि का आभार।

प्रतिभावान एवं जरूरतमंद विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति

पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के ग्रामीण क्षेत्र में श्रेष्ठ शिक्षा के स्वप्न को साकार करते हुए विद्यालय प्रतिभावान एवं आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान कर रहा है। इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोगी जैन विश्व भारती सेंटर ह्यूस्टन के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया जाता है।

कृतज्ञता एवं आभार

विद्यालय हेतु समय पर मार्गदर्शन देने वाले संयोजक श्री रणजीतसिंहजी कोठारी एवं सह-संयोजक श्री सुदेशजी आंचलिया का हार्दिक आभार। विद्यालय के प्राचार्य श्री लोकेश तिवारी को उनके निष्ठापूर्ण दायित्व निर्वहन के लिए हार्दिक साधुवाद। समस्त अध्यापकगण अध्यापिकागण एवं कर्मचारीगण को उनके कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद। हमारे मेहनती एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के प्रति भी हार्दिक आभार एवं शुभकामनाएं।

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल लाडनूं-प्रगति की ओर

आचार्य महाप्रज्ञजी के जन्मशताब्दी वर्ष के पावन अवसर पर महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल की विस्तारित शृंखला की स्थापना पर गहन चिंतन हुआ। इस संदर्भ में आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी वर्ष के बअवसर पर आचार्यप्रवर का पावन पाथेय प्राप्त हुआ कि केवल मौजूदा शिक्षण संस्थानों तक सीमित न रहकर उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान करने वाले नए शिक्षण केन्द्रों की स्थापना पर भी विशेष ध्यान दिया जाए।

इस विचार को आत्मसात् करते हुए रत्नगढ़ निवासी एवं दिल्ली प्रवासी श्री शुभकरण-जोधराजजी-बुधमलजी बैद परिवार ने इस महत्वपूर्ण शिक्षा परियोजना हेतु अपनी स्वीकृति और उदारमना सहयोग प्रदान किया। उनके योगदान से जैन विश्व भारती लाडनूं परिसर में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल के निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ।

कुल 46000 वर्ग फुट क्षेत्रफल में निर्मित यह आधुनिक विद्यालय आगामी सत्र से कक्षा 6 से 12 तक संचालित होगा। विद्यालय में समस्त नवीनतम संसाधन उपलब्ध होंगे, जिनमें इंटरएक्टिव बोर्ड, अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ और शिक्षण-सुविधाएँ शामिल हैं। यह विद्यालय लाडनूं एवं आसपास के क्षेत्र के लिए एक उत्कृष्ट और उच्च स्तरीय शैक्षणिक संस्थान के रूप में प्रतिष्ठित होगा। निर्माण कार्य की पूर्णता आगामी माह तक सुनिश्चित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

इस महनीय शिक्षा परियोजना के लिए उदारमना सहयोग प्रदान करने वाले रत्नगढ़ निवासी बैद परिवार के प्रति हार्दिक कृतज्ञता एवं सादर आभार व्यक्त किया जाता है।





जय तुलसी एज्यूकेशन बोर्ड के अन्तर्गत विद्यालयों को संबद्धता

जैन विश्व भारती द्वारा लम्बे समय से शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना एवं संचालन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए जैन विश्व भारती के नाम से विद्यालयों को संबद्धता प्रदान करने की योजना बनाई गई है। आचार्यप्रवर के प्रेरक निर्देशानुसार तेरापंथ और तेरापंथ के आचार्यों तथा उनके सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों के नाम पर संचालित विद्यालयों को जैन विश्व भारती से संबद्ध करना अनिवार्य माना गया। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु जैन विश्व भारती के अन्तर्गत जय तुलसी एज्यूकेशन बोर्ड का गठन किया गया है। कल्याण परिषद् के निर्णयानुसार उपरोक्त वर्णित सभी शैक्षणिक संस्थाओं को इस बोर्ड की सदस्यता प्रदान करने का निर्णय लिया गया है। इस योजना के अंतर्गत वर्तमान में उदयपुर में स्थित तुलसी विद्या निकेतन आवासीय स्कूल को संबद्धता प्रदान की जा चुकी है।

इसी प्रकार महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल की श्रृंखला के विस्तार के क्रम में शुभ संस्कार फाउण्डेशन लुधियाना द्वारा स्थापित की जाने वाली शैक्षणिक इकाई को महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल के नाम का उपयोग करने तथा जैन विश्व भारती से संबद्धता प्राप्त करने हेतु पारस्परिक समझौता प्रपत्र हस्ताक्षरित किया गया है। वर्तमान में उक्त विद्यालय का निर्माण कार्य निरंतर गतिशील है।

साथ ही आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केन्द्र ट्रस्ट द्वारा प्रस्तावित महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल बैंगलोर को महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल के नामोपयोग एवं जैन विश्व भारती से संबद्धता हेतु समझौता प्रपत्र हस्ताक्षरित किया गया है तथा प्रस्तावित महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल बैंगलोर का निर्माण कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ होने की प्रबल संभावना है।

संस्था मंगलकामना प्रकट करती है कि जैन विश्व भारती के अन्तर्गत आने वाली समस्त शैक्षणिक संस्थाएँ सतत विकास की दिशा में अग्रसर हों तथा श्रेष्ठतम शिक्षा एवं संस्कार प्रदान करें।

महाप्रज्ञ ग्लोबल स्कूल - आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष की स्थायी परियोजना में ऐतिहासिक प्रगति

जैन विश्व भारती की स्थापना के मूल उद्देश्यों में शिक्षा का सदा से सर्वोच्च स्थान रहा है। इस पावन ध्येय की पूर्ति हेतु परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी समय पर अपने दिव्य पाथेय और दूरदर्शी मार्गदर्शन से प्रेरणा प्रदान करते रहे हैं। आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष की स्थायी परियोजना के रूप में महाप्रज्ञ ग्लोबल स्कूल का सपना साकार करने की दिशा में इस आलोच्य अवधि में एक अत्यंत महवपूर्ण मील का पत्थर स्थापित हुआ है। लंबे समय से प्रतीक्षित भूमि चयन का कार्य अब पूर्णता की ओर अग्रसर है। इस संदर्भ में अत्यंत हर्ष और गौरव के साथ यह घोषणा की गई कि श्री कन्हैयालालजी जैन पटावरी द्वारा जैन विश्व भारती को दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में स्थित 5 एकड़ भूमि महाप्रज्ञ ग्लोबल स्कूल की स्थापना हेतु प्रदान की जाएंगी। यह दानशीलता न केवल शिक्षा के प्रति उनकी निष्ठा का प्रतीक है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के उज्ज्वल निर्माण में अमूल्य योगदान भी है। शीघ्र ही उक्त भूमि के दानपत्र और संबंधित औपचारिकताएं पूर्ण कर ली जाएंगी। मोमासर प्रवासी एवं दिल्ली निवासी श्री कन्हैयालालजी जैन पटावरी परिवार के इस उदार एवं दूरदर्शी निर्णय के लिए जैन विश्व भारती परिवार की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया जाता है। विद्यालय की भूमि चयन प्रक्रिया को गति देने के लिए समिति द्वारा विभिन्न स्थलों का निरंतर निरीक्षण किया गया। इस महवपूर्ण कार्य में श्री धरमचंदजी लुंकड, श्री पन्नालालजी बैद, श्री सलिलजी लोढा, श्री राजेशजी कोठारी, श्री गौरवजी जैन मांडोत और श्री राजकुमारजी नाहटा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ, जिनके प्रति संस्था कृतज्ञता ज्ञापित करती है।

पूज्यप्रवर के आशीर्वाद और समर्पित टीम के अथक प्रयासों के साथ अब यह परियोजना तीव्र गति से विकास पथ पर अग्रसर होगी, और शीघ्र ही महाप्रज्ञ ग्लोबल स्कूल अपने उज्ज्वल शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक योगदान से समाज को समृद्ध करेगा।











समण संस्कृति संकाय



श्री मालचंद बैंगाणी

आचार्यश्री तुलसी कहा करते थे कि सांस्कृतिक एकता के बिना राष्ट्रीय एकता संभव नहीं है। समण संस्कृति का उद्देश्य विभिन्न धाराओं को जोड़कर एक ऐसी जीवनदृष्टि प्रदान करना है जो मानव को सच्चे अर्थों में मानवीय बनाए। यह संकाय भेद नहीं, समन्वय सिखाता है।

समण संस्कृति संकाय जैन विश्व भारती का एक विशिष्ट शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संवर्धन का उपक्रम है जिसकी स्थापना आचार्यश्री तुलसी के बहुआयामी दृष्टिकोण का सार्थक परिणाम है। आचार्यश्री तुलसी ने सांस्कृतिक समन्वय नैतिक शिक्षा तथा अहिंसा के प्रचार-प्रसार को केंद्र में रखकर इस संकाय की परिकल्पना की थी। सांस्कृतिक एकता के बिना राष्ट्रीय एकता संभव नहीं है। समण संस्कृति का लक्ष्य है विभिन्न धाराओं को मिलाकर मानवता के उच्चतम मूल्यों को स्थापित करना। वर्तमान में समण संस्कृति संकाय न केवल भारत के विभिन्न प्रदेशों में बल्कि विदेशों में भी अनेक केंद्रों के माध्यम से परीक्षाओं का संचालन कर रहा है। भारत के लगभग सभी राज्यों तथा नेपाल के विभिन्न स्थानों पर सैकड़ों स्थायी केंद्र स्थापित हो चुके हैं जिनकी संख्या अब 450 हो गई है। जैन विद्या का नववर्षीय पाठ्यक्रम निर्धारित है जिसके माध्यम से प्रतिवर्ष 450 से अधिक केंद्रों से हजारों प्रतिभागी संस्कार निर्माण की दिशा में अग्रसर होते हैं।

समण संस्कृति संकाय की प्रमुख गतिविधियाँ

- 1 जैन विद्या परीक्षा
- 2 आगम मंथन प्रतियोगिता
- 3 सम्प्रकृदर्शन कार्यशाला
- 4 साहित्य मंथन प्रतियोगिता (साहित्य विभाग)

जैन विद्या परीक्षाएं

- इस वर्ष कुल 12,262 आवेदन प्राप्त हुए।
- 450 केंद्रों पर आयोजित परीक्षाओं में 9,840 परीक्षार्थी उपस्थित रहे।
- 8,220 परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए जो 83.5 प्रतिशत परिणाम रहा।

परीक्षा आयोजन में संयोजक, सह-संयोजक, प्रभारी आंचलिक संयोजक, केंद्र व्यवस्थापक एवं निरीक्षकों का उत्कृष्ट सहयोग रहा, जिनके प्रति हार्दिक आभार।

क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन

त्रिविसीय क्षेत्रीय कार्यशाला राजस्थान में दिनांक 24 से 26 जून तक जैन विश्व भारती परिसर में संपन्न हुई जिसमें संकाय पदाधिकारी केंद्र व्यवस्थापक एवं विशेष अतिथियों सहित 27 प्रतिभागी उपस्थित थे।

देश-विदेश में क्षेत्रीय कार्यशालाएं

- जैन विद्या परीक्षा एवं आगम मंथन प्रतियोगिता हेतु भारत और नेपाल में लगभग 26 से अधिक कार्यशालाएं जूम मोबाइल ऐप के माध्यम से ऑनलाइन आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं में समस्त संयोजक सह-संयोजक, प्रभारी, आंचलिक संयोजक, केंद्र व्यवस्थापक आदि ने सक्रिय सहभागिता निभाई।
- कार्यशालाओं के दौरान जैन विश्व भारती के पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी द्वारा आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया गया, जिनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता।
- परीक्षा आयोजन संबंधी प्रशिक्षण हेतु जलगांव के श्री उमेशजी सेठिया का विशेष आभार।

आधुनिक तकनीकों के साथ ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली

- समण संस्कृति संकाय में परीक्षा हेतु आवेदन प्रक्रिया पूरी तरह ऑनलाइन कर दी गई है। सभी आवेदन ऑनलाइन प्राप्त हो रहे हैं और परीक्षार्थियों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है।
- ऑनलाइन पोर्टल पर पुस्तकें, हल प्रश्नपत्र, पुराने डेटा, सेम्पल प्रश्नपत्र आदि सभी सामग्री एकीकृत रूप में उपलब्ध है।
- अभ्यास प्रश्नमालाओं की शृंखला भी जैन विश्व भारती के ऐप संबोधि के माध्यम से उपलब्ध कराई गई है जिससे परीक्षार्थी उत्साहपूर्वक अभ्यास कर अपना स्वमूल्यांकन कर रहे हैं।
- इस वर्ष भाग 1 से 7 तक की परीक्षाएं ऑनलाइन आयोजित की गईं जिसमें भाग 5 से 7 तक की परीक्षाएं संबंधित केंद्रों पर उपस्थित होकर ऑनलाइन माध्यम से दी गईं।





आगम मंथन प्रतियोगिता

आगम अनुसंधान के क्षेत्र में समण संस्कृति संकाय द्वारा इस वर्ष उत्तरराज्ययणाणि अध्याय 21 से 28 पर ऑनलाइन एवं ऑफलाइन प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें कुल 2611 प्रतिभागियों ने भाग लिया। द्वितीय चरण में 861 परीक्षार्थी चयनित हुए जिनमें से 334 ने परीक्षा दी परिणामस्वरूप 58.6 प्रतिशत परिणाम रहा।

वर्ष 2025 की प्रतियोगिता अंतगडदसाओ नामक आगम पर ऑनलाइन एवं ऑफलाइन आयोजित की जा रही है। प्रश्न पुस्तिकाओं की प्राप्ति का कार्य प्रगति पर है। इस प्रतियोगिता के सौजन्यकर्ता के रूप में भंवरलाल रायकंवरी देवी जैन विद्या विकास निधि बैंगलोर के प्रतिनिधि श्री नवरत्नमल बच्छावत चाड़वास-संदूर का हार्दिक आभार। समणी मलयप्रज्ञाजी जो वर्तमान में जैन विश्व भारती लंदन केंद्र में विराजमान हैं द्वारा ऑनलाइन स्वाध्याय का आयोजन किया गया जिसमें 13 सत्रों में लगभग 2000 व्यक्तियों ने लाभ प्राप्त किया। समणीजी के प्रति कृतज्ञता।

जैन विद्या कोष की स्थापना

संकाय के अंतर्गत जैन विद्या से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों के सुचारु संचालन के लिए वर्ष 2015 में जैन विद्या कोष की स्थापना की गई जिसमें निम्न चार श्रेणियां हैं-

श्रेणी	श्रेणी का नाम	राशि रूपये में
प्रथम	जैन विद्या विशिष्ट संपोषक	5,00,000/-
द्वितीय	जैन विद्या संपोषक	1,00,000/-
तृतीय	जैन विद्या विशिष्ट सहयोगी	51,000/-
चतुर्थ	जैन विद्या सहयोगी	11,000/-

जैन विद्या संपोषक योजना में यूएई जैन संघ, श्रीमती विमला डागलिया, श्रीमती प्रेमलता सिसोदिया मुंबई, श्री रमेश डागलिया, श्रीमती भावना बैंगानी दिल्ली, श्री रोहित जैन मुंबई, श्रीमती सज्जनदेवी गिडिया दिल्ली श्रीमती शांति जैन बंगाईगांव, एवं श्रीमती सरिता बरडिया जयपुर के योगदान के प्रति हार्दिक आभार। अन्य सहयोगी अनुदानदाताओं का भी आभार।

ऑनलाइन स्वाध्याय

जैन विद्या के सभी भागों की तैयारी हेतु लगभग 30 व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से 55 प्रशिक्षकों द्वारा लगभग 12,000 ज्ञानार्थियों को स्वाध्याय करवाया जा रहा है। संयोजक श्री सुशील बाफना कोलकाता के प्रति हार्दिक आभार।

सम्यक दर्शन कार्यशाला

समण संस्कृति संकाय एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में सम्यक दर्शन कार्यशाला प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। इस वर्ष आचार्य भिक्षु पुस्तक का चयन किया गया है। आगमी 2 अक्टूबर को परीक्षा ऑनलाइन आयोजित की जाएगी। पिछले वर्ष 2024 में पुरुषोत्तम महावीर पुस्तक पर परीक्षा हुई जिसमें 4720 परीक्षार्थी पंजीकृत हुए और 3857 उत्तीर्ण हुए। संयोजक श्री पुखराज डागा, सह संयोजक श्री राजेश दुग्गड तथा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के पदाधिकारी एवं संयोजकों के प्रति हार्दिक आभार। कार्यशाला के लिए मुनिश्री योगेशकुमारजी के मार्गदर्शन हेतु कृतज्ञता।

साहित्य मंथन प्रतियोगिता

आदर्श साहित्य विभाग के साथ संयुक्त रूप से आयोजित साहित्य मंथन प्रतियोगिता में पिछले वर्ष Manage your emotions नामक अंग्रेजी पुस्तक का चयन किया गया जिसमें कुल 68 परीक्षार्थी सम्मिलित हुए।

जानें तेरापंथ का इतिहास प्रतियोगिता

इतिहास एवं संस्कृति को पहचानने के उद्देश्य से यह प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है, जिसमें लगभग 3800 सदस्य जुड़ चुके हैं। पंजीकरण की संख्या अब तक 372 है। संयोजक श्री संदीप भंडारी, जयपुर एवं श्रीमती सुनिता नाहटा, भिवानी सह-संयोजक को हार्दिक आभार।

दीक्षांत समारोह

समण संस्कृति संकाय का वर्ष 2025 का दीक्षांत समारोह 28 से 30 जुलाई तक पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में अहमदाबाद में संपन्न हुआ। समारोह में कुल 560 प्रतिभागी क्रमशः 278 विज्ञ उपाधि धारकों, 68 वरीयता प्राप्त प्रतिभागियों, 7 आगम मंथन प्रतियोगिता तथा 22 सम्यक दर्शन कार्यशाला के विजेताओं को सम्मानित किया गया। पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने प्रतिभागियों और संकाय की टीम को विशेष पाठ्य प्रदान किया। आदरणीय साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, मुख्यमुनि मुनिश्री महावीरकुमारजी, मुनिश्री कीर्तिकुमारजी व मुनिश्री योगेशकुमारजी, मुनिश्री मननकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि नमन, मुनि विनम्र, मुनि नम्र, मुनि केशी व मुनि ध्यानमूर्ति से प्रेरक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। पूज्यप्रवर के पावन पाठ्य तथा समस्त चारित्रात्माओं के मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। समारोह में कोलकाता प्रभारी डॉ. राजकुमारी सुराणा को गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार से सम्मानित किया गया उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं। दीक्षांत समारोह सहयोगी भंवरलाल रायकंवरी देवी जैन विद्या विकास निधि, बैंगलोर के प्रतिनिधि श्री नवरत्नमल बच्छावत चाड़वास-संदूर का आभार।





जीव-अजीव कार्यशाला

पूज्य गुरुदेव ने नववर्ष के अवसर पर श्रावक समाज को 25 बोल कंठस्थ करने तथा जीव-अजीव पुस्तक का स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। इसी निर्देशानुसार संकाय द्वारा जीव-अजीव कार्यशाला 2025 का आयोजन किया गया जिसमें 1996 प्रतिभागियों ने पंजीयन किया और 1319 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विजेताओं को सम्मानित किया जाएगा। प्रतियोगिता के प्रायोजक डॉ. सुनील आंचलिया यू.एस.ए. से प्रशिक्षक श्री राजेन्द्र बैंगानी, श्रीमत जया बोथरा, श्री राजेन्द्र बोथरा एवं श्रीमती प्रेम सेखानी के प्रति हार्दिक आभार।

कृतज्ञता एवं आभार

समण संस्कृति संकाय के विकास में जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी का महनीय मार्गदर्शन एवं कार्यशालाओं में सान्निध्य समय पर प्राप्त होता रहा है, जिसके लिए हार्दिक कृतज्ञता। अनेक चारित्रात्माओं एवं समणीवृद्ध के निरंतर दिशानिर्देशन के लिए आभार। संकाय के विभागाध्यक्ष श्री मालचंद बेगानी के सतत मार्गदर्शन हेतु हार्दिक धन्यवाद। इस वर्ष सह-विभागाध्यक्ष पद का सृजन किया गया व श्री हनुमाचंद लुंकड़ को मनोनीत किया गया, प्राप्त सेवाओं हेतु हार्दिक आभार। जैन विद्या परीक्षाओं के संयोजक डॉ. विजय संचेती, जैन विद्या कार्यशाला संयोजक श्री पुखराज डागा, सह संयोजक श्री राजेश दुगड़, आगम मंथन प्रतियोगिता संयोजक श्री गौतमचंद डागा, सह संयोजक श्रीमती मंगला कुण्डलिया, श्रीमती हेमलता नाहटा, प्रभारी स्नेहलता चौरड़िया, जैन विद्या परीक्षा सह संयोजक श्रीमती प्रेमलता सिसोदिया, श्रीमती सुशीला गोलछा, श्रीमती ललिता धारीवाल व श्रीमती विमला कोठारी का हार्दिक आभार। केंद्र व्यवस्थापकों ने अपनी संपूर्ण जिम्मेदारी और सजगता से अध्ययन- अध्यापन एवं परीक्षा संबंधी स्थानीय व्यवस्थाओं का सफलतापूर्वक निर्वहन किया इसके लिए आभार। समण संस्कृति संकाय को विशिष्ट मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु श्री उमेशजी सेठिया का हार्दिक धन्यवाद। जैन विद्या परीक्षाओं के आयोजन में स्थानीय संघीय संस्थाओं, आंचलिक संयोजकों एवं कार्यकर्ताओं के सहयोग एवं परिश्रम के लिए हार्दिक साधुवाद। समण संस्कृति संकाय, लाडनुं कार्यालय प्रभारी श्रीमती संगीता कोठारी, सहयोगी सुश्री पूजा शर्मा, सुश्री अनु रतावा, सुश्री कोमल बैद एवं श्री विमल प्रजापति के कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद। जैन विश्व भारती सचिवालय द्वारा प्रदत्त सहयोग हेतु हार्दिक आभार। आदर्श साहित्य विभाग से सहयोग हेतु श्री विजयराज आंचलिया व टीम का आभार।





सेवा

जैन विश्व भारती-सकार



श्री मूलचंद नाहर

शिक्षा के साथ-साथ सेवा के क्षेत्र में भी जैन विश्व भारती अग्रणी भूमिका निभा रहा है। जैन विश्व भारती परिसर में सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला तथा बीदासर में श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र के अंतर्गत विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा केंद्र सुचारू रूप से संचालित हैं।

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

राष्ट्र संत युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी की सद्प्रेरणा से उनके अग्रज एवं प्रेरणास्रोत सेवाभावी मुनिश्री चम्पालालजी की स्मृति में सन 1978 में जैन विश्व भारती में सेवा की एक विशिष्ट इकाई के रूप में सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला का शुभारंभ हुआ। परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं आचार्यश्री महाश्रमणजी के आशीर्वाद से यह रसायनशाला विगत लगभग 43 वर्षों से जनसामान्य की चिकित्सा सेवा में निरंतर संलग्न है।

इस रसायनशाला को राज्य सरकार के आयुर्वेद विभाग से ड्रग मेन्यूफैक्चरिंग लाइसेंस नं. 692-डी प्राप्त है, जिसके अंतर्गत 345 प्रकार की शास्त्रीय एवं 37 प्रकार की प्रोपराइटरी अनुभूत औषधियों का निर्माण किया जाता है। सभी औषधियाँ कुशल वैद्यों के निर्देशन में उच्च गुणवत्ता नियंत्रण पद्धति द्वारा निर्मित की जाती हैं। साथ ही रसायनशाला को जीएमपी प्रमाणपत्र विशुद्ध औषध निर्माण पद्धति हेतु प्राप्त है। इस वर्ष एफएसएसआई द्वारा आगामी तीन वर्षों के लिए निर्माण संबंधी अनुशिष्टा भी प्रदान की गई है।

रसायनशाला का दृष्टिकोण कभी व्यवसायिक नहीं रहा, अतः गुणवत्ता के साथ किसी प्रकार का समझौता किए बिना सर्वोत्तम औषधियों का निर्माण ही इसका प्रमुख लक्ष्य रहा है।

आलोच्य वर्ष की प्रमुख प्रगति

निःशुल्क परामर्श एवं चिकित्सा सेवा-

सेवा के महान लक्ष्य के साथ इस अवधि में कुल 2472 रोगियों को निःशुल्क सेवा प्रदान की गई। सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला में प्रतिदिन सुबह 9.00 बजे से सां�्य 5.00 बजे तक ओपीडी केंद्र संचालित होता है।

नवीन ओपीडी केंद्र का निर्माण

आगामी योगक्षेम वर्ष की परिकल्पना के अनुरूप एक आधुनिक और सुसज्जित ओपीडी केंद्र की आवश्यकता थी। जहां न केवल श्रावक समाज बल्कि चारित्रात्माओं को भी समुचित सेवा उपलब्ध हो सके। चेन्नई प्रवासी मुसालिया निवासी श्री राकेश बोहरा ने इस दायित्व को सहर्ष स्वीकार किया और दिनांक 17 जुलाई 2024 को शुभ मुहूर्त में शिलान्यास किया गया। यह कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर है तथा आगामी माह में लोकार्पित किया जाएगा।

विदेशी धरती पर स्टॉल

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला की स्टॉल दुबई के ग्रांड एक्सलियर होटल में आयोजित कार्यक्रम में स्थापित की गई। इस आयोजन में न्यासी श्रीमती माला पितलिया एवं श्रीमती रचना बोहरा की उल्लेखनीय सेवाएं रही।

चिकित्सा शिविरों का आयोजन

- दिनांक 16-23 अक्टूबर 2024 को हैदराबाद के तेरापंथ भवन में चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया गया जिसमें 125 रोगियों को उपचार प्रदान किया गया।
- आचार्य महाश्रमणजी के प्रवास स्थल सूरत में चतुर्मास काल के दौरान स्टॉल का सफल संचालन हुआ।
- दिनांक 03-17 फरवरी 2025 को भुज-कच्छ में चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया गया जिसमें 125 रोगियों को सेवा दी गई।
- कोलकाता में आयोजित श्री उत्सव के दौरान दिनांक 16-21 मार्च 2025 तक स्टॉल का संचालन किया गया।
- आचार्य तुलसी महाप्रयाण दिवस के अवसर पर आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, गंगाशहर में शिविर का आयोजन किया गया।
- आचार्य महाश्रमणजी के प्रवास स्थल अहमदाबाद में चतुर्मास काल के दौरान 14 जुलाई से स्टॉल संचालन प्रारंभ हुआ, जो आगामी चार माह तक निरंतर जारी रहेगा।
- हैदराबाद शिविर में श्री मुकेश सुराणा निवासी लाडनूं से आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ तथा गंगाशहर शिविर में आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के प्रबंधन का सहयोग प्राप्त रहा।









न्यास मंडल विस्तार

रसायनशाला के विकास की दृष्टि से नवीन न्यासियों को न्यास मंडल में सम्मिलित करने का प्रयास जारी है। अब तक 82 महानुभावों ने सदस्यता हेतु आवेदन प्रस्तुत किए हैं, जिनके प्रति हार्दिक आभार। रसायनशाला की परियोजनाओं के चिंतन एवं प्रेरक सहयोगी के रूप में श्री मूलचंद नाहर एवं श्री धर्मचंद लुंकड़ को विशेष सादर आभार।

आभार

रसायनशाला के विकास हेतु मुख्य न्यासी श्री मूलचंद नाहर तथा न्यासी श्री अभयराज बैंगानी के दैनिक प्रशासनिक कार्यों में निरंतर मार्गदर्शन सहयोग एवं सेवाओं के लिए हार्दिक कृतज्ञता। अन्य न्यासीगण श्री आलोक भंसाली वाराणसी, श्री विजयसिंह सेठिया छापर, श्री हसमुख भाई मेहता मुंबई, श्री धरमचंद लुंकड़ चेन्नई, श्री मुकेश नाहर बैंगलोर, श्री भेरुलाल चौपड़ा, श्री आलोक घोड़ावत को समय पर प्रदान किए गए मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए धन्यवाद। आयुर्वेद के अनुभवी वैद्य श्री ओमप्रकाश शर्मा तथा कनिष्ठ वैद्य श्री पंकज लाटा की सेवाओं हेतु साधुवाद। सभी कर्मचारीगण को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन के लिए हार्दिक धन्यवाद।

श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र, बीदासर

प्राकृतिक चिकित्सा एक्यूप्रेशर एवं फिजियोथेरेपी पद्धतियों द्वारा रोगियों की चिकित्सा हेतु श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र की स्थापना जैन विश्व भारती की एक महवपूर्ण इकाई के रूप में बीदासर में की गई है।

वर्तमान में इस केन्द्र के अंतर्गत विद्युत चुम्बक चिकित्सा केन्द्र संचालित है। मुनिश्री जयकुमारजी के पावन मंगलपाठ के साथ बीदासर में इस चिकित्सा केन्द्र का शुभारंभ हुआ। यहाँ विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा पद्धति द्वारा लकवा पोलियो स्लिप डिस्क, स्पॉडिलाइटिस, रीढ़ की हड्डी के रोग, दमा, उच्च रक्तचाप जैसे जटिल रोगों का प्रभावशाली और सुगम उपचार किया जाता है। बीदासर के स्थानीय जनमानस के साथ-साथ आसपास के दूरदराज क्षेत्रों से भी लोग स्वास्थ्य लाभ हेतु इस केन्द्र में आते हैं। आलोच्य अवधि में कुल 550 रोगियों को इस चिकित्सा सेवा से लाभान्वित किया गया।

वर्तमान में डॉ. हिमांशु मालपुरी चिकित्सक के रूप में कार्यरत हैं जिन्हें उनके कुशल और समर्पित दायित्व निर्वहन के लिए हार्दिक धन्यवाद एवं शुभकामनाएं।

भिक्षु विहार सेवा केन्द्र में एवं अन्य स्थानों पर चारित्रिकात्माओं का पावन प्रवास

तेरापंथ धर्मसंघ में सेवा को एक विशिष्ट और परम पूज्य स्थान प्राप्त है। जैन विश्व भारती परिसर में स्थापित स्थायी सेवा केन्द्र का सुचारू संचालन वर्षों से निरंतर जारी है, जो हमारे लिए एक महान सौभाग्य और पुण्यकारी अवसर सिद्ध हो रहा है। इस सेवा केन्द्र के माध्यम से विराजित चारित्रिकात्माओं को चित्त समाधि युक्त स्थान प्रवास हेतु प्रदान कर जैन विश्व भारती स्वयं को सौभाग्यशाली होने का अनुभव कर रही है।

विशेषतः वृद्ध साधु सेवा केन्द्र के समुचित संचालन में जैन विश्व भारती पूरी सजगता और निष्ठा के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही है। हमारा परम उद्देश्य है कि यहाँ आने वाले समस्त चारित्रिकात्मा निरोग एवं निरामय रहें तथा उनका मानसिक और आध्यात्मिक विकास निरंतर प्रगति पर हो। वर्तमान में महाश्रमण विहार सेवा केन्द्र की संपूर्ण व्यवस्थापन मुनि विजयकुमारजी एवं मुनि रमणीयकुमारजी के कुशल नेतृत्व में हो रही है। इस केन्द्र में मुनिश्री विजयकुमारजी एवं मुनिश्री जयकुमारजी का पावन प्रवास जारी है, जिनके सान्निध्य में नियमित रूप से आध्यात्मिक अनुष्ठान, ध्यान साधना और शांति प्रवर्धक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन आयोजनों के माध्यम से परिसर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह निरंतर बना रहता है जो सभी धर्मभक्तों एवं सेवाभावियों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है।

इस वर्ष पूज्यप्रवर की अनुकूल्या से हमें पुनः शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी एवं सहवर्तिनी साध्वी वृन्द का भी पावन प्रवास प्राप्त हुआ, वर्तमान में साध्वीश्री अमृतायन में विराजित है। जैन विश्व भारती की ओर से सदैव प्रयास किया जाएगा कि इन साध्वीवृन्द को परिसर में पूर्णतः सुखद सुसंयोजित एवं सात्त्विक प्रवास का लाभ मिल, जिससे उनकी सेवा एवं मार्गदर्शन का लाभ अधिकतम रूप से समाज को मिल सके।





समणी केन्द्र व्यवस्था एवं समणीवृद्ध का विशिष्ट मार्गदर्शन

तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में समणी श्रेणी का विशेष स्थान है। एक प्रसंग वि.संवत् 2015 में कानपुर चतुर्मास के पूर्व आचार्यश्री तुलसी के लखनऊ प्रवास से जुड़ा है, जब साध्वी हर्षकुमारी एवं अन्य साधिवियों ने ज्योतिषी से आचार्यश्री की विदेश यात्रा के विषय में प्रश्न किया। ज्योतिषी ने कहा कि आचार्यश्री स्वयं विदेश नहीं जाएंगे, परन्तु उनकी पुतलियां विदेश जाएंगी। उस समय यह कथन समझ में नहीं आया, परंतु बाद में ईस्वी सन् 1980 में समणी श्रेणी की स्थापना ने जैन धर्म को विदेशों तक पहुंचाने का मार्ग प्रशस्त किया। वर्ष 1983 में समणी स्मितप्रज्ञा एवं समणी मधुरप्रज्ञा ने लंदन की प्रथम यात्रा आरंभ की, जिसके बाद से यह यात्रा एवं प्रवास का क्रम निरंतर जारी है।

प्रारंभ से ही समणी श्रेणी की व्यवस्था का दायित्व निर्वहन करते हुए जैन विश्व भारती ने अपने आप को गौरवान्वित महसूस किया है। जैन विश्व भारती परिसर में स्थित गौतम ज्ञानशाला में समणीवृद्ध का सतत प्रवास रहता है। जैन विश्व भारती की समस्त गतिविधियों में समणी श्रेणी की सक्रिय भूमिका होती है। विदेश यात्रा हेतु आवश्यक पासपोर्ट, वीजा, कानूनी दस्तावेजों की व्यवस्था तथा देश-विदेश में यात्रा कर रहे समणीवृद्ध के विभिन्न वर्गों से समन्वय कर अपेक्षित कार्यों का निर्वहन जैन विश्व भारती की महवपूर्ण भूमिका है। इसके अतिरिक्त समणी श्रेणी की भारत एवं विदेश यात्राओं से संबंधित समस्त व्यवस्थाओं का समन्वय भी जैन विश्व भारती द्वारा पूर्ण कुशलता से किया जाता है। समणी नियोजिकाजी के रूप में नियुक्ति पर समणी मधुरप्रज्ञाजी को आध्यात्मिक शुभकामनाएं। पूर्व समणी नियोजिका समणी अमलप्रज्ञाजी को पारमार्थिक शिक्षण संस्था निर्देशिका के रूप मनोनयन पर आध्यात्मिक शुभकामनाएं।

विदेशों में वर्ष 2024-25 के दौरान निम्नलिखित समणीवृद्ध स्थायी रूप से विभिन्न केंद्रों में प्रवासित रहे-

- 1 समणी मलयप्रज्ञा एवं समणी नीतिप्रज्ञा, लंदन
- 2 समणी सन्मतिप्रज्ञा एवं समणी जयन्तप्रज्ञा, ऑरलैंडो
- 3 समणी कमलप्रज्ञा एवं समणी क्षांतिप्रज्ञा, फ्लोरिडा
- 4 समणी आजर्वप्रज्ञा एवं समणी स्वातिप्रज्ञा, न्यूजर्सी
- 5 समणी प्रतिभाप्रज्ञा एवं समणी पुण्यप्रज्ञा, हूस्टन

उपरोक्त केंद्रों एवं यात्राओं के दौरान समणीवृद्ध ने प्रेक्षाध्यान जीवन विज्ञान अणुव्रत अहिंसा प्रशिक्षण एवं जैन धर्म दर्शन जैसे महवपूर्ण विषयों पर व्याख्यान सेमिनार शिविर और कार्यशालाओं का सफल आयोजन किया। इससे प्रवासी समुदाय को जैन धर्म के गूढ़ संस्कारों से संपृक्त करने का अनुपम अवसर प्राप्त हुआ।

जैना इंटरनेशनल कांफ्रेंस में जैन विश्व भारती की प्रतिभागिता

वर्ष 2025 में आयोजित जैना इंटरनेशनल कांफ्रेंस में जैन विश्व भारती को प्रतिनिधित्व समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी एवं समणी पुण्यप्रज्ञाजी द्वारा विशेष मार्गदर्शन से प्राप्त हुआ। इस दौरान जैन विश्व भारती की पहचान को दर्शाने वाला वीडियो प्रस्तुति के माध्यम से समस्त उपस्थित सदस्यों को प्रदर्शित किया गया। कांफ्रेंस में समणी स्वातिप्रज्ञा एवं समणी आजर्वप्रज्ञा ने भी सक्रिय सहभागिता दी। जैन विश्व भारती की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री पन्नालालजी बैद ने भी प्रतिनिधित्व किया। जैना कांफ्रेंस में एक महत्वपूर्ण घोषणा हुई कि जैन विश्व भारती को जैन तीर्थ के रूप में सूचीबद्ध किया जाए।

जैन विश्व भारती में आयोजित कार्यक्रमों एवं अन्य महवपूर्ण कार्यों में समणीवृद्ध का मार्गदर्शन सदैव प्राप्त होता रहा है। विदेशों में स्थित केंद्रों पर भी समणीवृद्ध प्रवासी समाज को जैनत्व के संस्कारों, जीवन मूल्य एवं धार्मिक अनुशासन से परिपेक्षित करते हैं। समणीवृद्ध द्वारा संचालित बन्न प्रज्ञावान प्रतियोगिता, आगम अर्पण योजना आदि अनेक गतिविधियों में भी समय पर पावन प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जाता रहा है। इस प्रकार समणी श्रेणी एवं समणीवृद्ध का जैन विश्व भारती के साथ परस्पर सहयोग एवं सहभागिता जैन धर्म के वैश्विक प्रसार एवं धर्म, संस्कृति के संरक्षण में अतुलनीय योगदान है।

समणीवृद्ध के इस महनीय कार्य एवं समर्पित सेवा हेतु जैन विश्व भारती विशेष कृतज्ञता व्यक्त करती है और उनकी दी गई पावन प्रेरणा एवं समय के लिए हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है। यह अनवरत सहयोग एवं मार्गदर्शन जैन धर्म को समृद्ध करने में सदैव प्रेरणा स्रोत रहेगा।





साधना

जैन विश्व भारती-सकार



श्री अशोक चण्डालिया

प्रेक्षा फाउंडेशन का साधना क्रम

ईस्वी सन् 1962 में उदयपुर में आचार्यश्री तुलसी के चतुर्मास के दौरान उत्तराध्ययन के संपादन कार्य में जब ध्यान विषयक अनेक महत्वपूर्ण सामग्री विकीर्ण रूप में सामने आई तो आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने इसे एक विशेष संदेश माना। उन्होंने आचार्यश्री तुलसी को अवगत कराया कि जैन परंपरा में प्राचीनकाल में ध्यान की एक सुव्यवस्थित समृद्ध पद्धति विद्यमान थी, जो किन्हीं कारणों से विछिन्न हो गई थी। आचार्यश्री तुलसी ने इस शाश्वत ध्यान पद्धति को पुनः स्थापित करने का महत्व समझा और इसे जीवन का अंग बनाते हुए वर्ष 1975 में जयपुर में इस परिष्कृत तकनीक को प्रेक्षाध्यान नाम दिया। अब प्रेक्षाध्यान की स्वर्ण जयंती पूर्ण हो चुकी है जिसे आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के रूप में घोषित किया गया है।

साधना का स्वरूप एवं प्रेक्षाध्यान की विशिष्टता

मनुष्य जीवन का सार एवं उद्देश्य साधना है। विश्वभर में अनेक साधना एवं ध्यान की पद्धतियां प्रचलित हैं परंतु जैन साधना पद्धति की विशिष्टता यह है कि इसमें अध्यात्म और विज्ञान दोनों का समावेश है। अध्यात्म के बिना जीवन दिशाहीन होता है वहीं विज्ञान के अभाव में जीवन विकासहीन। इसलिए जैन साधना को सर्वश्रेष्ठ एवं आदर्श माना गया है। आयारो नामक प्राचीन आगम में वर्णित और पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा प्रणीत प्रेक्षाध्यान विधि आज भी अध्यात्म एवं विज्ञान का अद्वितीय समागम प्रस्तुत करती है। साधकों को समर्पित सुविधाएं एवं साधना के लिए एक समृद्ध वातावरण प्रदान करने हेतु आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र का निर्माण हुआ है।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण की मंगल सन्निधि में प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष का भव्य शुभारंभ

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सत्रिधि में 30 सितंबर 2024 को प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष का भव्य एवं आध्यात्मिक शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में नेपाल के प्रथम पूर्व राष्ट्रपति डॉ. रामबरण यादव भी उपस्थित हुए। प्रेक्षाध्यान के पचासवें वर्ष के प्रारम्भ के अवसर पर आचार्यश्री की प्रेरणा से प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष का डायमण्ड व सिल्क सिटि सूरत के महावीर समवसरण से प्रारम्भ होकर वर्ष 2025 के 30 सितम्बर तक चलेगा, आचार्यश्री के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। साध्वीवृद्ध ने प्रेक्षा गीत का संगान किया। सूरत चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री संजय सुराणा, अध्यात्म साधना केन्द्र के डायरेक्टर श्री केसी जैन, प्रेक्षा इण्टरनेशनल के अयध्यक्ष श्री अरविंद संचेती, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री अमरचंद लुंकड़ ने अपनी-अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष शुभारम्भ के अवसर पर उपस्थित जनता को प्रेक्षाध्यान के विषय में प्रेरणा प्रदान की। नेपाल के पूर्व प्रथम राष्ट्रपति डॉ. रामबरण यादव ने

अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन करने अवसर प्राप्त हो रहा है। अभी पूरा विश्व धृणा के भावों को दूर करने के लिए संघर्ष कर रही है, ऐसी स्थिति में आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महान संत की परम आवश्यकता है। मैं इस पावन अवसर पर मैं शुभकामना देता हूं कि भगवान महावीर की कृपा सभी पर बना रहे। मैं आचार्यश्री के विचारों से प्रभावित हूं और उनके दर्शन करने यहां आया हूं। आप जैसे विभूति ही हमें राह दिखा सकते हैं। प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कुमारश्रमणजी ने इस वर्ष के शुभारम्भ के संदर्भ में आचार्यश्री द्वारा प्रदान किए आशीर्वचनों का वाचन किया। तदुपरान्त युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी ने उपस्थित विशाल जनमेदिनी को पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए कहा कि आयारो आगम में बताया गया है कि अध्यात्म की साधना में शरीर के प्रति ममत्व भी छोड़ने की बात होती है। आदमी का ममत्व पदार्थों से होता है तो उससे भी ज्यादा ममत्व आदमी का अपने शरीर से भी हो सकता है। इसलिए अध्यात्म की साधना में अपने शरीर के प्रति ममत्व नहीं रखना, उच्च कोटि की साधना होती है। अध्यात्म की साधना में अहंकार और ममकार का भाव त्याज्य माना गया है। प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के आगाज के साथ ही पूरे वर्षभर विभिन्न काग्रक्रमों यथा- आवासीय शिविरों, कार्यशालाओं, आनलाइन कार्यशालाओं का वृहद् स्तरीय आयोजन हुआ जिसमें सम्पूर्ण देशभर से बड़ी संख्या में व्यक्ति प्रेक्षाध्यान के लाभों से लाभान्वित हुए।

आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र

जैन विश्व भारती के सप्त सकारों में साधना को विशिष्ट स्थान प्राप्त है जिसमें आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र एक महवपूर्ण स्तम्भ है। यह केन्द्र साधकों के लिए साधना का कल्पवृक्ष सिद्ध हुआ है जहां वे अपने आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु साधना कर सकते हैं। यहाँ मंत्र प्रेक्षा कायोत्सर्सं संबोधि ध्यान कक्ष एवं वातानुकूलित सभागार सहित योग के लिए हरियाली से धिरा विशेष योगस्थल उपलब्ध है। साधकों के आवास के लिए आनंद निलय अतिथिगृह वातानुकूलित और सामान्य आवासीय विकल्प प्रदान करता है। साथ ही सात्त्विक एवं पारंपरिक भोजन व्यवस्था हेतु ऐषणा भोजनशाला संचालित है। मंत्रप्रेक्षा हेतु निर्मित पांच रंगों वाले मिनी पिरामिड भी साधना को अधिक प्रभावकारी बनाते हैं। इस केन्द्र को साधना का तीर्थ कहें तो अतिशयोक्ति न होगी।

प्रेक्षाध्यान शिविर एवं कार्यशालाएँ

प्रेक्षा फाउंडेशन निरंतर प्रेक्षाध्यान शिविरों का आयोजन करता है, जिनमें हजारों साधकों ने भाग लेकर लाभ प्राप्त किया है। देश के विभिन्न भागों जैसे लाडनूं, बैंगलोर, चेन्नई, कोलकाता, सूरत, सिरियारी आदि में नियमित रूप से आवासीय एवं गैर-आवासीय शिविर एवं कार्यशालाएँ आयोजित होती हैं। आलोच्य अवधि में प्रतिमाह 9 आवासीय शिविरों के साथ-साथ प्रेक्षाध्यान लेवल-2 और लेवल-3 के विशेष शिविर भी लाडनूं में सम्पन्न हुए। इन शिविरों में सम्पन्नी नियोजिका मधुप्रज्ञाजी, पूर्व नियोजिका अमलप्रज्ञाजी, सम्पन्नी ऋजुप्रज्ञाजी, सम्पन्नी श्रेयसप्रज्ञाजी, साध्वी शशिप्रभाजी एवं साध्वी तेजस्वीप्रभाजी के मार्गदर्शन एवं सहयोग का विशेष योगदान रहा।





प्रशिक्षकों के रूप में श्री बिमल गुनेचा श्री गौतम गादिया, श्री विनोद राठौड़, श्रीमती मीना साबद्र, श्रीमती विजया छल्लाणी, श्रीमती प्रतिभा चोपड़ा, श्रीमती सविता जैन, श्रीमती चन्दा चोपड़ा, श्रीमती संध्या रायसोनी, श्रीमती रेणु नाहटा, श्रीमती राज गुनेचा आदि ने अपनी उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान कीं, जिनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया जाता है।

प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के अवसर पर लाडनूँ में शिविरों में विशेष प्रबंध कर एक पंजीयन के आधार पर परिवार के अन्य सदस्य भी निःशुल्क सहभागिता कर पाए। यह सुविधा साधकों एवं उनके परिवार के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुई।

देशभर में प्रेक्षाध्यान का प्रसार - कार्यशालाओं के द्वारा

बैंगलोर, चेन्नई, कोलकाता, सिरियारी, नागपुर, पुणे, हैदराबाद गंगाशहर, हरियाणा आदि स्थानों में प्रेक्षाध्यान शिविरों एवं कार्यशालाओं का आयोजन निरंतर जारी है। प्रशिक्षिका श्रीमती रेणु नाहटा के योगदान को विशेष रूप से सराहा गया। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन प्रेक्षाध्यान कार्यशालाओं की संख्या भी लगातार बढ़ रही है, जिससे दूरदराज के क्षेत्रों के हजारों साधक लाभान्वित हो रहे हैं।

योगोत्सव एवं अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित योगोत्सव काउंटडान का प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा समर्णी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी एवं समर्णी अमलप्रज्ञाजी के मार्गदर्शन में सफल आयोजन किया गया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक हिमांशु शर्मा मुख्य अतिथि रहे। योगोत्सव में नगर की विविध संस्थाओं एवं विद्यार्थियों ने सक्रिय भागीदारी की।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का भी 21 जून को देश के 16 प्रांतों में 129 स्थानों पर प्रोटोकॉल अनुसार सफल आयोजन हुआ। जिसमें दीर्घश्वास प्रेक्षा का अभ्यास भी कराया गया। आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र में भी नगर की संघीय संस्थाओं की उपस्थिति में योग दिवस समारोह हुआ।

प्रेक्षावाहिनी एवं प्रशिक्षक वर्ग का सशक्तिकरण

विगत वर्ष हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र सहित कई राज्यों में नई प्रेक्षावाहिनीयों का गठन किया गया वर्तमान में देशभर में कुल 124 प्रेक्षावाहिनीयां संचालित हैं जिनमें लगभग 5400 साधक सक्रिय रूप से जुड़ चुके हैं। मासिक बैठकों के माध्यम से वाहिनीयों की गति-प्रगति का मूल्यांकन और दिशा-निर्देशन होता है। प्रेक्षावाहिनीयों के संगठन में श्रीमती उषा धारेवा का उल्लेखनीय योगदान है।

प्रेक्षा प्रशिक्षक लेवल -1 एवं लेवल-2 के त्रैमासिक प्रशिक्षण कक्षाओं का आयोजन भी नियमित रूप से किया जा रहा है। इसमें श्री राजेन्द्र मोदी, श्री मनोज सुराणा, श्री बिमल गुनेचा जैसे अनुभवी प्रशिक्षकों का महवपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है।

प्रेक्षाध्यान केन्द्रों की व्यापक संबद्धता

देश के विभिन्न प्रांतों में कुल 87 प्रेक्षाध्यान केन्द्र संबद्ध होकर प्रेक्षाध्यान के प्रचार-'प्रसार में सक्रिय हैं। इनके विस्तार में श्री विकास जैन, मुंबई का विशेष योगदान रहा है।

प्रेक्षा सम्मेलन का आयोजन

सूरत में आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में दो दिवसीय प्रेक्षा सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 220 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में प्रेक्षा फाउंडेशन, प्रेक्षा इंटरनेशनल, अध्यात्म साधना केन्द्र एवं प्रेक्षा विश्व भारती ने संयुक्त रूप से सक्रिय भागीदारी की। मुनिश्री कुमारश्रमणजी का मार्गदर्शन एवं आचार्यप्रवर का पावन सान्निध्य सम्मेलन की सफलता में सहायक रहा।

प्रेक्षा कार्ड योजना एवं मीडिया प्रचार

प्रेक्षा कार्ड योजना के अंतर्गत इस अवधि में आठ महानुभावों ने सिल्वर कार्ड, दो ने गोल्ड कार्ड और एक ने प्लेटिनम कार्ड की सदस्यता ग्रहण की। नवीन कार्ड धारकों को हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रेक्षाध्यान के प्रचार हेतु सोशल मीडिया पर आडियो-वीडियो एवं विलिंग का प्रसारण सात वर्षों से लगातार जारी है, जिसमें प्रतिदिन लगभग 1.50 लाख व्यक्ति जुड़े रहते हैं। इस प्रचार कार्य में श्री विमल घीया अहमदाबाद का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है।

प्रेक्षाध्यान पत्रिका का निरंतर प्रकाशन

प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक प्रेक्षाध्यान पत्रिका का पुनः प्रकाशन प्रारंभ हुआ है। संपादक श्री लूणकरण छाजेड़ गंगाशहर द्वारा इस पत्रिका में प्रेक्षाध्यान की विभिन्न गतिविधियों और सूचनाओं को प्रभावी ढंग से पाठकों तक पहुंचाया जा रहा है, जिसके लिए संपादक महोदय को हार्दिक धन्यवाद।

कृतज्ञता एवं आभार

प्रेक्षाध्यान प्रवृत्ति के विकास में आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमारश्रमणजी का अमूल्य मार्गदर्शन निरंतर प्राप्त होता रहा है। गुरुकुलवास में आयोजित शिविरों एवं कार्यशालाओं में मुनिप्रवर एवं मुनिश्री कीर्तिकुमारजी के सान्निध्य एवं पाथेय के लिए हार्दिक कृतज्ञता। लाडनूँ में प्रवासित मुनिश्री जयकुमारजी के प्रति सादर कृतज्ञता। समर्णी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी, पूर्व नियोजिका अमलप्रज्ञाजी एवं समर्णी श्रेयसप्रज्ञाजी के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन से शिविर संचालन सुचारू संचालित रहे, जिसके लिए उनका विशेष कृतज्ञता।

प्रेक्षा फाउंडेशन विभागाध्यक्ष श्री अशोक कुमार चण्डालिया, सह संयोजक श्री अरूण संचेती, श्री अमित जैन, श्री बिमल गुनेचा, प्रशिक्षक संयोजक श्री राजेन्द्र मोदी, इंदौर द्वारा समय पर प्रदत्त सहयोग हेतु हार्दिक धन्यवाद। तकनीकी सहायता हेतु बैंगलोर के श्री विनोद पावेचा को भी विशेष आभार। प्रेक्षा प्रशिक्षकों, प्रेक्षावाहिनी संचालकों तथा अन्य सहयोगियों की सेवाओं के लिए समस्त संस्था परिवार आभार व्यक्त करता है। प्रेक्षा फाउंडेशन की व्यवस्थाओं में डॉ. विजयश्री शर्मा, श्री जयदीप सिंह, श्री आशीष गुर्जर, श्री दीपक ज्याणी द्वारा किए गए कार्यों के लिए विशेष धन्यवाद।

प्रेक्षा फाउंडेशन ने साधना के क्षेत्र में अध्यात्म विज्ञान और समाजसेवा को सम्मिलित करते हुए प्रेक्षाध्यान के माध्यम से हजारों साधकों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया है। प्रेक्षा फाउंडेशन की यह यात्रा निरंतर प्रगति पर है, जो जैन धर्म के अद्भुत साधना पथ को विश्वव्यापी स्तर पर स्थापित करने में संकल्पित है।







मीडिया एवं प्रचार प्रसार विभाग

जैन विश्व भारती के समृद्ध एवं गतिशील विकास में वर्तमान तकनीकी युग के अनुकूल मीडिया एवं प्रचार प्रसार विभाग का अत्यंत महवपूर्ण स्थान है। यह विभाग जैन विश्व भारती के व्यापक आयामों इसकी विविध गतिविधियों, नवाचारों और आध्यात्मिक संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने में एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य करता है।

इस विभाग ने न केवल जैन विश्व भारती के पारंपरिक कार्यक्रमों और प्रवृत्तियों को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया है बल्कि प्रेक्षा फाउंडेशन, समण संस्कृति संकाय, आदर्श साहित्य विभाग, सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला एवं संबोधि ई-लाइब्रेरी जैसे नवाचारों के प्रचार-प्रसार में भी विशेष योगदान दिया है।

चाहे नवप्रकाशित साहित्य हो या पुनः प्रकाशित ग्रंथ चाहे भिक्षु वाणी, जानें तेरापंथ का इतिहास या प्रत्येक संवाद इन सभी को लाखों लोगों तक पहुँचाने में इस विभाग ने अपनी जागरूकता और समर्पण के साथ महवपूर्ण भूमिका निभाई है।

विशेष रूप से प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा प्रतिदिन प्रसारित की जाने वाली प्रेक्षाध्यान क्लिपिंग्स ऑडियो वीडियो शिविर सूचनाएं एवं अनुभव सोशल मीडिया के माध्यम से प्रभावी रूप से जन-जन तक पहुँचाने में मीडिया एवं प्रचार प्रसार विभाग के कर्मठ कार्यकर्ता निरंतर सक्रिय हैं। उनके अथक प्रयासों के कारण जैन विश्व भारती की प्रत्येक प्रवृत्ति, प्रत्येक संदेश, हर आध्यात्मिक व शैक्षिक पहल घर-घर तक पहुँच रही है।

मीडिया एवं प्रचार प्रसार विभाग के सभी सदस्यों का समर्पित प्रयास ही जैन विश्व भारती के उपक्रमों को वैश्वक स्तर पर मान्यता दिलाने में सहायक हुआ है। विभाग के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने न केवल पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य किया बल्कि प्रत्येक चुनौती का सामना उत्साह एवं नवीनता के साथ किया है। इस दौरान विभाग को जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों, न्यासीगणों एवं समस्त प्रबुद्ध मार्गदर्शकों का निरंतर मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त हुई, जिसने विभाग की कार्यकुशलता को और बढ़ावा दिया।

हमारे विशिष्ट कार्य सहयोगी एवं संरक्षक श्री महावीर बी. सेमलानी, विभागाध्यक्ष श्री संजय वेदमेहता, संयोजक श्री मनोज बैद, सह संयोजक श्री संदीप मुथा, श्री विनोद डांगरा श्री अमित कांकरिया, सदस्य श्री रमेश डोडावाला, श्री धर्मेन्द्र डागलिया, श्री समकित पारख, जैन विश्व भारती कार्यालय सचिव डा. विजयश्री शर्मा तथा सुश्री मुस्कान चोपड़ा सहित समस्त टीम को उनके अथक परिश्रम निरंतर समर्पण एवं उच्चतम गुणवत्ता वाली सेवा के लिए हार्दिक आभार।

इसके अतिरिक्त हमारे प्रमुख कार्य सहयोगी जैसे जैन तेरापंथ न्यूज, अमर रहेगा धर्म हमारा, संघ संवाद एमएमबीजी एवं अन्य मीडिया सहयोगियों का विशेष समर्थन एवं सक्रिय भागीदारी विभाग के सफल कार्यान्वयन में अभिन्न रही है जिनके प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

यह विभाग अपने विशिष्ट एवं समर्पित प्रयासों के माध्यम से, जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संदेशों को समस्त विश्व तक पहुँचाने का सशक्त स्तम्भ बना हुआ है और आगे भी इसी प्रकार निष्ठा एवं उत्कृष्टता के साथ सेवा करते रहने का संकल्पित है।









साहित्य

जैन विश्व भारती-सकार



ज्ञान का प्रतिबिंब और संस्कृति विद्या का स्रोत

साहित्य सदैव अपने युग का सजीव आईना होता है जिसमें उस समय की सभ्यता संस्कृति, इतिहास, दर्शन, सामाजिक एवं राजनीतिक परिवेश के साथ-साथ प्रकृति और समसामयिक परिस्थितियां सहज एवं प्रभावशाली रूप में प्रतिबिंबित होती हैं। जैन विश्व भारती के साहित्य में भी यह समृद्ध प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई देता है जो हमें अतीत के गौरवशाली इतिहास के झरोखे से उस महान विरासत का दर्शन कराता है, जिससे हमें हमारी जड़ों का पता चलता है और हमारी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक समृद्धि की गहराई समझ में आती है।

ज्ञान का विशाल भण्डार

जैन विश्व भारती के साहित्य संग्रह की विशालता और गहनता अद्भुत है। यह संस्था ज्ञान का एक अथाह भण्डार है, जहाँ हजारों पाण्डुलिपियां, दुर्लभ प्राचीन प्रतियां एवं अनेकों ग्रंथों का संग्रह सुरक्षित है। यहां आगम वांझ्य प्रकाशन के माध्यम से भी प्राचीन जैन ग्रंथों का प्रकाशन किया जाता है। साथ ही व्याख्या साहित्य एवं शोध कार्यों के फलस्वरूप न केवल प्राचीन ज्ञान का संरक्षण हुआ है बल्कि उसकी व्याख्या एवं वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता भी सुनिश्चित की गई है। जैन विश्व भारती का यह साहित्य संसार ज्ञान के प्रेमियों के लिए अनमोल निधि है।

साहित्य का स्वाध्याय, चिंतन, मनन तथा अनुप्रेक्षा करना ज्ञान की समृद्धि का मूल आधार है। इसी दृष्टि से जैन विश्व भारती में साहित्य प्रकाशन एक महत्वपूर्ण एवं सतत् क्रियाशील गतिविधि रही है।

साहित्य प्रकाशन - चार दशकों से निरंतर समर्पण

पिछले 49 वर्षों से जैन विश्व भारती द्वारा आगम, जैन विद्या, प्रेक्षाध्यान एवं अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर साहित्य का प्रकाशन सतत् जारी है। साथ ही पूज्यवरों, चारित्रात्माओं, समण-समणी वृद्ध एवं शोधार्थीयों द्वारा लिखित और संपादित अनमोल ग्रंथों का भी प्रकाशन हुआ है, जिससे जैन दर्शन एवं संस्कृति के अध्ययन को व्यापक रूप मिला है।

आदर्श साहित्य विभाग का नवयुगीन योगदान

साहित्य सदनम् के अंतर्गत संचालित आदर्श साहित्य विभाग निरंतर नये आयाम स्थापित कर रहा है। विभाग के प्रकाशन कार्यों में इस आलोच्य अवधि में निम्नलिखित उपलब्धियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं-

1 नवीन प्रकाशन

हिंदी शीर्षकों की संख्या 20, कुल प्रतियां, 9157 प्रतियां

अंग्रेजी शीर्षक 2, कुल प्रतियां 1082 प्रतियां

आगम प्रकाशन 2 कुल प्रतियां - 80

आगम मंथन प्रश्न पुस्तिका 4,500 प्रतियां

2. पुनर्मुद्रण

हिंदी शीर्षक 73 कुल प्रतियां 1,05,918

अंग्रेजी शीर्षक- 8, कुल प्रतियां, 5347

आगम -1 कुल प्रतियां -3000

जय तिथि पत्रक एवं कैलेण्डर

आलोच्य अवधि में 10,000 जय तिथि पत्रक का सफल प्रकाशन हुआ। मुनिश्री उदितकुमारजी के संपादन में प्रकाशित इस पत्रक के लिए उनकी उत्कृष्ट सेवा के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। इसके अतिरिक्त आमजन को साहित्य से परिचित कराने हेतु 3000 कैलेण्डरों का भी प्रकाशन हुआ।

संबोधि ईलाइब्रेरी डिजिटल युग का साहित्यिक स्रोत

संबोधि ईलाइब्रेरी आज जैन साहित्यिक जगत का एक चिरपरिचित नाम बन चुकी है। पाठकों की आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर इस ऐप में नवीन फीर्चर्स जोड़े जा रहे हैं जिससे पुस्तकें सरलता एवं सहजता से अध्ययन के लिए उपलब्ध हों। वर्तमान में इसमें कुल 1099 पुस्तकें अपलोड की गई हैं। इस ऐप को अब तक लगभग व्यक्तियों द्वारा डाउनलोड किया जा चुका है।

संबोधि ईलाइब्रेरी ऐप पर उपलब्ध पुस्तकें व साहित्य

- 237 ऑडियो बुक्स
- 27 आगम ग्रंथ
- 285 आलेख व आर्टिकल
- 8 गुजराती पुस्तकें

सुपररीड के अंतर्गत 32 पुस्तकें

संबोधि ऐप समण संस्कृति संकाय के अंतर्गत आयोजित जैन विद्या परीक्षाओं, आगम मंथन प्रतियोगिता, सम्यक दर्शन कार्यशालाओं, जीव-अजीव कार्यशाला और साहित्य मंथन प्रतियोगिताओं के लिए भी एक सशक्त माध्यम बन चुका है। इस माध्यम से अब तक 1 लाख से अधिक प्रतिभागी विभिन्न परीक्षाओं में भाग ले चुके हैं। इस ऐप के तकनीकी विकास में श्री उमेशजी सेठिया जलगांव का विशेष सहयोग रहा है, अतएव हार्दिक आभार।

वेब पोर्टल एवं ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर साहित्य की उपलब्धता

साहित्य के वेब पोर्टल पर वर्तमान में 1698 शीर्षकों की पुस्तकें ऑनलाइन विक्रय हेतु उपलब्ध हैं जबकि 350 पुस्तकें अध्ययन हेतु भी उपलब्ध हैं। घर बैठे सहजता से पुस्तक खरीदने की सुविधा ने आम पाठकों को अत्यंत लाभान्वित किया है। वर्ष भर के विभिन्न अवसरों पर चलाए गए आकर्षक ऑफर्स को पाठकों द्वारा अत्यन्त उत्साहपूर्वक स्वीकार किया गया।

इसके अतिरिक्त अमेजन, फिलपक्ट और मीशो जैसी विश्वप्रसिद्ध ऑनलाइन शॉपिंग वेबसाइटों पर भी जैन विश्व भारती का साहित्य उपलब्ध है। अमेजन किंडल प्लेटफॉर्म पर 490 से अधिक अंग्रेजी और





हिंदी पुस्तकों जबकि फिलपकार्ट पर 225 पुस्तकों के लिए उपलब्ध हैं। महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल जयपुर द्वारा पिकअप सहयोग के लिए हार्दिक आभार।

विदेशी धरती पर आदर्श साहित्य विभाग की उपस्थिति

आदर्श साहित्य विभाग ने दुबई के ग्रैंड एक्सेलियर होटल में आयोजित एक महवपूर्ण सम्मेलन में अपना स्टॉल लगाया, जो दूसरी बार था। इस आयोजन में जैन विश्व भारती की विशिष्ट आजीवन सदस्य श्रीमती रचना बोहरा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

देशभर में साहित्य सहयोगियों की नियुक्ति एवं प्रचार-प्रसार

आदर्श साहित्य विभाग ने देशभर में तेरापंथ धर्मसंघ के श्रावक-श्राविकाओं को साहित्य सहयोगी के रूप में नियुक्त किया, जिससे साहित्य का प्रचार-प्रसार एवं उपलब्धता और व्यापक हुई। वर्तमान में देश के 213 विभिन्न स्थानों पर साहित्य सहयोगी सक्रिय हैं।

दिनांक 28 जुलाई 2025 को अहमदाबाद में प्रथम साहित्य सहयोगी अधिवेशन का आयोजन परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ, जिसमें 30 से अधिक सहयोगियों ने भाग लिया। यह आयोजन साहित्य प्रचार प्रसार में नवीन ऊर्जा और उत्साह का परिचायक था।

आगम अर्पण योजना के अन्तर्गत साहित्यिक सेट का वितरण

दीक्षा कल्याण महोत्सव के अवसर पर पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशानुसार शुभारम्भ की गई आगम अर्पण योजना के अंतर्गत इस अवधि में कुल 52 सेट जैनाचार्यों और शोधार्थियों को भेंट किए गए। इस कार्य में जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों ने स्वयं निवेदन कर इस कार्य की गरिमा बढ़ाई।

नवीन साहित्य वाहिनी की प्राप्ति - ज्ञान प्रसार एवं साहित्य विक्रय का आधुनिक माध्यम

जैन विश्व भारती में युगानुकूल प्रचार-प्रसार के लिए लंबे समय से एक आधुनिक एवं सुसज्जित साहित्य वाहिनी की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। यह साहित्य वाहिनी अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त है, इसमें एक आकर्षक डिस्प्ले यूनिट एवं एक बड़ी डिजिटल स्क्रीन स्थापित है, जिसके माध्यम से साहित्य, आध्यात्मिक विषयों, एवं संस्थान की गतिविधियों से संबंधित महवपूर्ण जानकारियाँ निरंतर प्रदर्शित होती रहेंगी।

विशेष उल्लेखनीय है कि पूज्यप्रवर की यात्रा के दौरान यह साहित्य वाहिनी, साहित्य के विक्रय एवं वितरण कार्य को अत्यंत सहज और सुव्यवस्थित बनाने में महवपूर्ण भूमिका निभाएगी, जिससे जिज्ञासुओं एवं साधकों तक वांछित साहित्य आसानी से पहुँच सकेगा। श्री प्रतापत्तमल सिंघी सुजानगढ़-ओडिशा परिवार के इस अमूल्य योगदान हेतु हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

विभिन्न क्षेत्रों में आदर्श साहित्य विभाग की सक्रियता

- चेन्नई में भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के दौरान दो दिवसीय साहित्य स्टॉल का संचालन जिसमें जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, साउकारपेट, चेन्नई का विशेष सहयोग रहा।

- आचार्य भिक्षु समाधि स्थल, सिरियारी में आचार्य भिक्षु जन्मोत्सव वर्ष के अवसर पर साहित्य स्टॉल का सफल आयोजन जिसमें श्री महेन्द्र जी जैन, झारसुगड़ा, ओडिशा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।
- तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस के अवसर पर आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, गंगाशहर में द्विदिवसीय स्टॉल का संचालन। स्टॉल की आयोजना में श्री दीपक आंचलिया का सहयोग प्राप्त हुआ।
- भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर सकल जैन समाज द्वारा आयोजित विशेष कार्यक्रम में कूचविहार (पश्चिम बंगाल) में आदर्श साहित्य विभाग की स्टॉल का आयोजन।
- अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर शिलौंग में तेरापंथ साहित्य सेवा गुवाहाटी द्वारा साहित्य विक्रय केन्द्र का संचालन किया गया।

विशेष उपक्रम- आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष की स्मृति में साहित्य स्वाध्याय का सप्रंसार

आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रेरणा व मार्गदर्शन से आचार्य भिक्षु साहित्य के स्वाध्याय हेतु एक विशेष सेट तैयार किया गया, जिसे प्रत्येक घर तक पहुंचाने का संकल्प आदर्श साहित्य विभाग ने लिया। इस सेट में छह विशेष पुस्तकों सम्मिलित हैं जिन्हें जन-जन तक पहुंचाने हेतु अनेक सहयोगी दाताओं का सहयोग प्राप्त हो रहा है। लक्ष्य है कि 5000 परिवारों तक यह सत्साहित्य पहुंचे।

संबोधि मोबाइल ऐप पर आयोजित ऑनलाइन प्रतियोगिताएं

- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी द्वारा रचित आधी दुनिया पुस्तक पर ऑनलाइन प्रतियोगिता जिसमें 354 प्रतिभागी शामिल हुए।
- महावीर जयंती पर आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा रचित महावीर का अर्थशास्त्र पुस्तक पर ऑनलाइन प्रतियोगिता जिसमें 265 प्रतिभागी शामिल हुए।
- आगामी साहित्य मंथन प्रतियोगिता के तहत ध्यान क्यों पुस्तक पर अगस्त में आयोजन होने वाला है जिसमें अब तक 490 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया है।

गुरुकुलवास में चल साहित्य विक्रय केन्द्र का निरंतर संचालन

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की अहिंसा यात्रा एवं चातुर्मासिक प्रवास के दौरान निरंतर चल साहित्य विक्रय केन्द्र संचालित हो रहा है, जिससे श्रावक समाज और पाठक वर्ग के लिए बहुप्रयोगी पुस्तकों की सुलभ उपलब्धता सुनिश्चित हो रही है। इस केन्द्र के प्रभारी श्री नंदराम सिमार, उनके सहयोगी श्री केशव, श्री मुकेश एवं श्री सोहनलाल के कुशल दायित्व निर्वहन के लिए हार्दिक आभार।

साहित्य विभाग से जुड़े समस्त सहयोगियों एवं मार्गदर्शकों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता





आगम संपादन, साहित्य लेखन व सृजन कार्य में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का समय पर प्रेरणादायी मार्गदर्शन प्राप्त होता है, एतदर्थ पूज्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। आचार्यप्रवर के निर्देशन में आगम संपादन एवं साहित्य संपादन के कार्य में साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री कुमारश्रमणजी, मुनिश्री जयकुमारजी, मुनिश्री योगेशकुमारजी, मुनिश्री कीर्तिकुमारजी, मुनिश्री विश्रुतकुमारजी, मुनिश्री जितेन्द्रकुमारजी, साध्वीश्री जिनप्रभाजी, साध्वीश्री विमलप्रज्ञाजी, साध्वीश्री मुदितयशाजी, साध्वी कल्पलताजी, साध्वीश्री श्रुतयशाजी, साध्वीश्री शुभ्रयशाजी, साध्वीश्री सुमतिप्रभाजी, प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञाजी आदि चारित्रात्माओं/समणीवृद का श्रम मुखर होता है, तदर्थ सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। साहित्य संबंधी कार्यों में संलग्न सभी चारित्रात्माओं एवं समणीवृद द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन हेतु कृतज्ञता। सभी विद्वान् लेखकगण के प्रति हार्दिक आभार। साहित्य मुद्रण संबंध कार्य में पायोराइट प्रिंट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर के श्री संजय कोठारी, पायोराइट प्रिंटर्स, जयपुर के श्री अनिल जैन, श्री बद्धमान प्रेस दिल्ली के श्री सम्यक जैन, एवं गिरिराज सांखला, प्रिंट मैजिक, उदयपुर के सहयोग हेतु हार्दिक साधुवाद। साहित्य डिपो के अन्तर्गत श्री गौरव जैन सूरत, श्रीमती सुनीता मालू, बैंगलौर, श्री बजरंग सुराणा, गुवाहाटी, श्री दिलीप दुग़ड़ गुवाहाटी, के सहयोग हेतु हार्दिक आभार। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य की वितरण व्यवस्था में श्री दिलीप दुग़ड़-गुवाहाटी, श्री सुखराज पितलिया-सिरियारी, श्री इन्द्र बैंगाणी-दिल्ली, श्री अशोक पारख-सिलीगुड़ी, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान-गंगाशहर, तेरापंथी सभा-दक्षिण दिल्ली, तेरापंथी सभा-शाहदरा, तेरापंथी सभा-रोहिणी, तेरापंथ युवक परिषद-जयपुर आदि के सहयोग व सेवाओं हेतु हार्दिक आभार। साहित्य के प्रचार-प्रसार में साहित्य सहयोगियों, स्थानीय संघीय संस्थाओं व कार्यकर्ताओं के सहयोग हेतु हार्दिक आभार। साहित्य हेतु उपयोग आने वाली समस्त स्टेशनरी की उपलब्धता करवाये जाने हेतु श्री आलोक घोड़ावत के प्रति आभार।

आदर्श साहित्य विभाग के कुशल संचालन हेतु विभागाध्यक्ष श्री विजयराज आचंलिया का हार्दिक आभार। संयोजक श्री बजरंग सेठिया, कार्यालय संयोजक श्री इन्द्र बैंगाणी, तकनीकी सहयोगी श्री उमेश सेठिया का भी हार्दिक आभार। जैन विश्व भारती साहित्य विभाग की प्रभारी श्रीमती प्रियंका बैद, विक्रय प्रभारी श्री मनोष भोजक, बृजमोहन शर्मा तथा आचार्यप्रवर के साथ यात्रा में संचालित साहित्य विक्रय केन्द्र के प्रभारी श्री नंदराम सिमार, डिजिटल विभाग से श्री दीपक महतो, सुश्री दीपिका सोनी, सुश्री मुस्कान चैपड़ा एवं अन्य कर्मचारियों द्वारा कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद। जैन विश्व भारती का साहित्य संसार न केवल हमारी परंपराओं धर्म और दर्शन का समृद्ध भण्डार है बल्कि आज के डिजिटल युग में भी यह निरंतर विकसित हो रहा है ताकि ज्ञान का प्रकाश विश्व के कोने-कोने तक पहुँचे। साहित्य की यह सेवा केवल लेखन-प्रकाशन तक सीमित नहीं बल्कि प्रचार-प्रसार डिजिटल सुलभता, प्रतियोगिताएं एवं पाठकों तक सशक्त संवाद के माध्यम से ज्ञान के सृजन और संवर्धन का अखण्ड प्रयत्न है। इस पावन कार्य में लगे समस्त सहयोगियों संरक्षकों और प्रबुद्ध मार्गदर्शकों को सादर आभार।





शोध एवं आगम संपादन -भगवान महावीर की वाणी का संरक्षण

जैन विश्व भारती-सकार

जैन विश्व भारती की स्थापना के मूलभूत उद्देश्यों में शोध कार्य को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। प्रारंभ से ही गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी ने इसे जैन धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म के क्षेत्र में एक उच्चस्तरीय शोध संस्थान के रूप में स्थापित करने की दूरदर्शी परिकल्पना की थी। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु यहां निरंतर समर्पित एवं गंभीर शोधकार्य चल रहा है जो जैन परंपरा की गहराइयों तक पहुंचने और उसे वर्तमान संदर्भ में सशक्त एवं प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत करने का माध्यम बना है।

आगम संपादन के आरंभिक शब्द- गुरुदेवश्री तुलसी का सान्निध्य

आगम संपादन के शुभारम्भ के समय उज्जैन में गुरुदेवश्री तुलसी ने अपने महान विचार व्यक्त करते हुए कहा था-आगम संपादन का कार्य अत्यंत दायित्वपूर्ण है। हमें इसे पूरी ईमानदारी, परिश्रम और अनुशासन के साथ करना है। आगम का जो मूल और शुद्ध अर्थ है उसे यथावत् और सटीक रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक है। यदि हमारा कोई अर्थ हमारी सांप्रदायिक परंपरा से भिन्न भी हो तो भी हमें आगम की मौलिकता और सच्चाई को कभी नहीं खोना चाहिए।

यह विचार इस महान कार्य की गंभीरता और उसकी पवित्रता को स्पष्ट करते हैं जो आज भी सम्पूर्ण संपादन प्रक्रिया का आधार है।

विशिष्ट प्रसंग- आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का सान्निध्य

एक प्रसंग अत्यंत प्रेरणादायक है, जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से आगम ग्रंथों के संपादन के कठिन कार्य के बारे में पूछा, तो आचार्यश्री ने उत्तर दिया -हमारे पास बाहरी साधन सीमित हो सकते हैं, लेकिन हमारे पास अंतर्दृष्टि और दृढ़ता की कोई कमी नहीं है। यही कारण है कि हमारा कार्य निरंतर गतिशील और फलदायक बना हुआ है। हम धन्य हैं कि हमें ऐसे आचार्यों का सान्निध्य प्राप्त हुआ है।

आगम संपादन, अनुवाद, भाष्य (या टिप्पण) आदि का कार्य इसी शोध-प्रवृत्ति के अंतर्गत जारी है। यह कार्य पूर्व में वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी एवं प्रधान संपादक विवेचक आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के निर्देशन में चला। वर्तमान में मूलतः समग्र आगम कार्य का प्रधान संपादन आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत आगमों के अनुवाद, टिप्पण, विभिन्न प्रकार के कोश निर्माण आदि की योजनाएं चल रही हैं। इसके प्रबंधन, मुद्रण, प्रचार-प्रसार आदि का सारा दायित्व जैन विश्व भारती द्वारा निर्वहन किया जा रहा है।

- ‘पण्णवणा’ के अनुवाद आदि का कार्य साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, साध्वीश्री मुदितयशाजी, साध्वीश्री श्रुतयशाजी एवं साध्वीश्री शुभ्रयशाजी आदि साध्वियों द्वारा गतिमान है।
- भगवई भाग-८ का कार्य पूर्ण एवं आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में सूरत में विमोचन किया गया।
- भगवई भाग-९ का कार्य डा.मुनि अभिजीतकुमारजी के मार्गदर्शन में गतिमान, कार्य पूर्णता की ओर।

- डॉ. मुनि अभिजीतकुमारजी, मुनि जागृतकुमारजी द्वारा भगवती भाष्य खण्ड तीन का आंगल भाषा में अनुवाद किया जा रहा है।
- आगम मनीषी बहुश्रुत प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी की देखरेख में गतिमान जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के अनुवाद, संस्कृत छाया आदि का कार्य था जो मुनि सिद्धकुमारजी द्वारा गतिमान है।
- बहुश्रुत मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री योगेशकुमारजी के निर्देशन में ‘जीवाजीवभिगम’ आगम का कार्य निरन्तर गतिमान। साध्वीश्री राजुलप्रभाजी द्वारा ‘ज्ञाताधर्म कथा’ के संस्कृत रूपान्तरण कार्य किया जा रहा है। मुनिश्री जितेन्द्रकुमारजी द्वारा सूर्यप्रज्ञप्ति एवं चन्द्रप्रज्ञप्ति आगमग्रंथ पर कार्य निरंतर गतिमान है।
- साध्वी ऋद्धिप्रभाजी दसवेआलियं और साध्वी वीरप्रभाजी द्वारा नायाधम्मकहाओ के अंग्रेजी अनुवाद का कार्य गतिशील है। मुनिश्री अक्षयप्रकाशजी द्वारा देववाद व नरकवाद पर कार्यगतिमान है।
- मुनि जागृतकुमार जी द्वारा ठांण नामक आगम के अंग्रेजी अनुवाद का कार्य किया जा रहा है इसी प्रकार मुनि कौशल कुमार जी द्वारा अंतगडदसाओ आगम एवं साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी द्वारा आवस्यं नामक आगम के अंग्रेजी अनुवाद का कार्य किया जा रहा है।
- समणी कुसुमप्रज्ञा जी द्वारा रचित प्रकीर्णन संचयन भाग-२ का प्रकाशन व विमोचन हो चुका है व प्रकीर्णन संचयन भाग-३ के प्रकाशन का कार्य गतिमान।
- बहुश्रुत मुनिश्री दिनेशकुमारजी द्वारा लोकवाद आगम का कार्य संपूर्णता की ओर है।
- भिक्खु दृष्टांत का अंग्रेजी अनुवाद कार्य मुनिश्री योगेशकुमारजी व मुनि ध्यानमूर्ति जी द्वारा किया जा रहा है।
- संबोधि ई लाइब्रेरी में कुल 29 आगम डिजीटल रूप में अपलोड किए जा चुके हैं।

आगम-संपादन संबंधी जैन शासन की प्रभावना का विशिष्ट कार्य परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के मुख्य निर्देशन में हो रहा है, इस हेतु हार्दिक कृतज्ञता। इस कार्य में संलग्न उक्त उल्लेखित समस्त चारित्रात्माओं एवं समणीवृद्ध के प्रेरणास्पद श्रम हेतु हार्दिक कृतज्ञता। शोध विभाग के विभागाध्यक्ष श्री मदनचंद दुगड़ व संयोजक श्री जयन्तीलाल सुराणा के प्रति कृशल संचालन हेतु हार्दिक आभार। कम्प्यूटर संबंधी कार्य में कार्यालय में कार्यरत श्री प्रमोद कुर्मी, श्रीमती कुसुम जैन, श्री बहादुरसिंह, श्रीमती मधुमिता, श्री बंसत मिश्रा आदि द्वारा कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।







जैन विश्व भारती में आगम संपादन और शोध कार्य न केवल धर्म दर्शन और अध्यात्म की गहन समझ को सार्थक बनाता है, बल्कि इसे युगानुकूल तकनीकी एवं वैज्ञानिक पद्धतियों के माध्यम से वर्तमान पीढ़ी तक पहुंचाने का सफल प्रयास भी है। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में और समस्त शोधार्थियों एवं संपादकों के अथक प्रयासों से यह कार्य निरंतर गति से आगे बढ़ रहा है। आगम-संपादन की यह सेवा समूचे जैन समुदाय के लिए एक अनमोल निधि है, जिससे आने वाली पीढ़ियां भी जैन धर्म की शाश्वत महत्ता को गहराई से समझ सकेंगी और उसका सही प्रचार-प्रसार कर सकेंगी। यह संपूर्ण प्रयास जैन विश्व भारती की उच्च गुणवत्ता और परंपरा के प्रति निष्ठा का परिचायक है।

आध्यात्मिक प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र समिति

जैन विश्व भारती, लाडनुं सदैव आचार्यश्री तुलसी के दूरदर्शी दृष्टिकोण कामधेनु के रूप में ज्ञान, अध्यात्म एवं सेवा का सतत स्रोत रही है। इस दृष्टि को मूर्त रूप देने हेतु शिक्षा, सेवा, अध्यात्म, साहित्य, अनुसंधान, समन्वय एवं संस्कृति इन सात मुख्य आयामों पर कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में आध्यात्मिक प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र समिति का गठन सन् 2024-26 के कार्यकाल के लिए किया गया है। इस समिति का मुख्य उद्देश्य है -

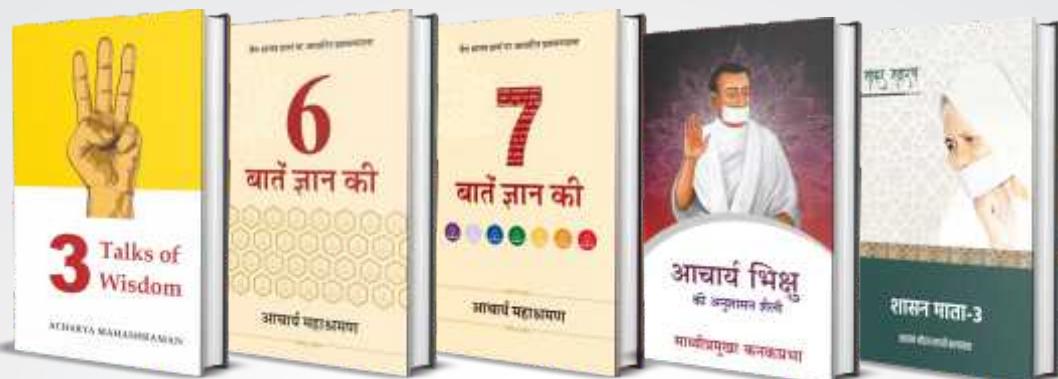
- जैन दर्शन के गूढ़ सिद्धांतों को वैज्ञानिक शोध एवं आधुनिक प्रौद्योगिकी के माध्यम से व्यावहारिक जीवन से जोड़ना।
- आध्यात्मिकता और नैतिक मूल्यों को आधुनिक युग की चुनौतियों के बीच सशक्त एवं प्रासंगिक बनाना।
- अनुसंधान, नवाचार एवं विचार नेतृत्व के माध्यम से जैन धर्म के शाश्वत संदेश को नई पीढ़ी तक पहुंचाना।
- आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन आशीर्वाद में आध्यात्मिक शोध एवं तकनीकी नवाचार का समन्वय कर समाज में संतुलन और समृद्धि लाना।

इस समिति में विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों, शोधकर्ताओं एवं अनुभवी सदस्यों को सम्मिलित किया गया है, जो अपने ज्ञान एवं अनुभव से इस केंद्र को अध्यात्म और प्रौद्योगिकी के समन्वय का वैशिक केंद्र बनाने हेतु सतत प्रयासरत रहेंगे। हमें पूर्ण विश्वास है कि इस समिति के माध्यम से जैन विश्व भारती अध्यात्म एवं अकादमिक उत्कृष्टता की नई ऊँचाइयों को स्पर्श करेगा। वर्तमान में मास-खण्ड व अठाई पर शोध जारी, संरक्षक श्री चांद्रतन दुगड़, विभागाध्यक्ष डा. प्रताप संचेती, सह विभागाध्यक्ष श्री कमलेश जैन, श्री ताराचंद जैन का आभार।



श्री जयंतीलाल सुराणा

श्री मदनचंद दुगड़





संस्कृति

जैन विश्व भारती-सकार

तुलसी कला दीर्घा

गणाधिपति पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी की पुण्य स्मृति में स्थापित तुलसी कला दीर्घा जैन विश्व भारती के सांस्कृतिक और कलात्मक वैभव का अनुपम उदाहरण है। यह कला केन्द्र विभिन्न आयु और वर्ग के दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करता है तथा जैन धर्म की समृद्धि एवं सौंदर्य को अभिव्यक्त करता है। यहाँ जैन धर्म को समर्पित प्राचीन एवं आधुनिक चित्रों शिल्पों एवं हस्तकलाओं का विशाल संग्रह सुरक्षित एवं प्रदर्शित किया गया है।

तुलसी कला दीर्घा में प्रदर्शित सामग्री न केवल कलात्मक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है बल्कि ऐतिहासिक सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से भी इसकी अपार महत्ता है। यहाँ तेरापंथ के महान आचार्यों को प्राप्त राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मानों पुरस्कारों के प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्रों एवं अन्य स्मारकीय वस्तुओं को विशेष शो विंडो में बारीकी से सजाकर प्रदर्शित किया गया है।

वर्तमान में जैन विश्व भारती के आगामी योगक्षेम वर्ष की महती परियोजना को ध्यान में रखते हुए तुलसी कला दीर्घा का पूर्णतः नवीनीकरण किया जा रहा है। इस नवीनीकरण कार्य में अत्याधुनिक तकनीकों का समावेश किया गया है ताकि दीर्घा का सौंदर्य और भी अधिक प्रभावशाली और दर्शनीय बन सके। अपेक्षित है कि नवीनीकृत तुलसी कला दीर्घा न केवल एक सांस्कृतिक केंद्र के रूप में बल्कि सभी के लिए एक प्रेरणादायक दृश्य स्थल के रूप में प्रतिष्ठित होगी।

इस नवीनीकरण कार्य का सशक्त एवं सफल संचालन लाडनूँ के निवासी, कोलकाता प्रवासी श्री महेन्द्रसिंह भूतोङ्गिया एवं उनके परिवार द्वारा किया जा रहा है, जिनके उदार अनुदान और सहयोग के लिए जैन विश्व भारती की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया जाता है।

साथ ही, तुलसी कला दीर्घा के निरंतर विकास एवं संचालन हेतु जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी का भी समय पर मूल्यवान मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है, जिसके लिए संस्थान सदैव कृतज्ञ रहेगा।

हस्तलिखित भंडार

जैन विश्व भारती में अत्यंत प्राचीन, दुर्लभ और अमूल्य जैन हस्तलिखित ग्रंथों का एक समृद्ध भंडार सुरक्षित है। ये पाण्डुलिपियाँ जैन विश्व भारती के हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग के अन्तर्गत संरक्षण एवं सुरक्षा की दृष्टि से संरक्षित हैं।

हस्तलिखितों की सुरक्षा के लिए विशेष टीमों द्वारा नियमित निरीक्षण और मूल्यांकन किए जाते हैं, जिनके अमूल्य सुझावों के आधार पर पाण्डुलिपियों को विशेष प्रकार की लकड़ी की पेटियों में रखा गया है, जो उनकी दीर्घकालिक सुरक्षा के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं। वर्तमान में इन पाण्डुलिपियों की संख्या 3122 है, जो 364 पेटियों में सुव्यवस्थित रूप से संरक्षित हैं।

यह पाण्डुलिपियाँ न केवल जैन धर्मसंघ के आचार्यों, साध्वियों एवं मुनिवृंद द्वारा लिपिबद्ध हैं, बल्कि इनमें ऐसे गूढ़ रहस्य और ज्ञान निहित हैं, जो आज के समय में प्रायः लुप्त होते जा रहे हैं। इसलिए यह पाण्डुलिपियाँ शोधार्थियों और विद्वानों के लिए अमूल्य स्रोत हैं।

विशेष रूप से इन पाण्डुलिपियों में 18वीं शताब्दी के ताड़पत्रों पर कन्नड़ भाषा में लिखित भगवद् गीता, कृष्ण-गोपी लीला जैसे महवपूर्ण ग्रंथ भी संग्रहित हैं, जो उनकी ऐतिहासिक एवं भाषाई महत्ता को दर्शाते हैं। संस्थान के माध्यम से इन पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिए प्राकृतिक रसायनों के उपयोग से संरक्षण का विशेष प्रोजेक्ट भी वर्तमान में सक्रिय है, जो इन प्राचीन दस्तावेजों को सुरक्षित और दीर्घजीवी बनाए रखने में सहायक होगा।

आलोच्य अवधि में अनेक विशिष्टजनों एवं विद्वानों ने जैन विश्व भारती का भ्रमण कर इस हस्तलिखित भंडार तथा कला दीर्घा का अवलोकन किया है। आगामी समय में इन पाण्डुलिपियों का शोधार्थी उपयोग बढ़ाने हेतु विशेष प्रयास किए जाएंगे, जिससे जैन धर्म, दर्शन, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में और अधिक गहन अध्ययन व शोध संभव हो सके।

इस प्रकार तुलसी कला दीर्घा और हस्तलिखित भंडार जैन विश्व भारती के सांस्कृतिक एवं शोध संबंधी प्रयासों के प्रमुख स्तंभ हैं, जो न केवल हमारे गौरवशाली अतीत को संरक्षित करते हैं, बल्कि भविष्य में जैन धर्म की समृद्धि एवं प्रचार-प्रसार में भी महवपूर्ण भूमिका निभाएंगे। संस्थान इस दिशा में समर्पित विद्वानों, शुभचिंतकों एवं सहयोगियों के सतत समर्थन एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा करता है। यह समर्पित प्रयास हमारे सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत को जीवंत एवं यथासंभव सुरक्षित रखने हेतु आवश्यक है, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ भी इस अमूल्य धरोहर से लाभान्वित हो सकें।





विदेशों में केन्द्र

विदेशों में जैन विश्व भारती के केन्द्र एवं उनकी गतिविधियाँ

जैन विश्व भारती ने न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी जैन धर्म, दर्शन एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु सक्रिय केन्द्र स्थापित किए हैं। ये केन्द्र वैश्विक जैन समाज को एकजुट करने, जैन शिक्षाओं का प्रसार करने तथा सामाजिक, आध्यात्मिक विकास हेतु अनेक प्रकार की गतिविधियों का संचालन करते हैं। समणियों के मार्गदर्शन में ये केन्द्र विद्वता, साधना, सांस्कृतिक एवं सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से जैन विश्व भारती के उद्देश्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रभावी रूप से प्रस्तुत कर रहे हैं।

वेटिकन सिटी में क्रिश्चियन और जैन कान्फ्रेंस

वेटिकन सिटी में आयोजित क्रिश्चियन और जैन कान्फ्रेंस-बेहतर भविष्य का निर्माण में तेरापंथ धर्मसंघ का प्रतिनिधित्व समणी नियोजिका डा. अमलप्रज्ञाजी व समणी डा. श्रेयसप्रज्ञाजी ने किया और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जैन दर्शन की अवधारणा के संदर्भ में रोचक प्रस्तुति दी। समणीवृन्द के साथ वैश्विक जैन प्रतिनिधिमंडल ने भी सहभागिता की। ज्ञातव्य है कि लंदन के जैनालॉजी संस्थान ने पोप कार्यालय वेटिकन सिटी के इस कार्यक्रम की मेजबानी की। समणीवृन्द का पोप के समक्ष अंतर्राष्ट्रीय संवाद का यह प्रथम अवसर सम्पूर्ण समाज के लिए गौरव का प्रतीक है। आयोजन में विशिष्ट सहयोगी श्री हासुभाई वोरा एवं डा. मेहुल शाह का विशेष सहयोग रहा।

शिकागो में जैना इंटरनेशनल कान्फ्रेंस में जैन विश्व भारती की सहभागिता

शिकागो में आयोजित जैना इंटरनेशनल कान्फ्रेंस में जैन विश्व भारती के न्यूजर्सी केन्द्र व ह्यूस्टन केन्द्र पर विराजित समणीवृन्द क्रमशः समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी, समणी पुण्यप्रज्ञाजी, समणी आर्जवप्रज्ञाजी व समणी स्वातिप्रज्ञाजी के मार्गदर्शन जैन विश्व भारती के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री पन्नालाल बैद, दिल्ली द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया।

ज्ञातव्य है कि तेरापंथ जैन समाज को इस कान्फ्रेंस में प्रथमतः विशिष्ट स्थान दिया गया जिसमें जैन विश्व भारती की गतिविधियों की एक डाक्यूमेन्ट्री भी दिखाई गई जिसे व्यापक सराहना प्राप्त हुई। जैन विश्व भारती में आगामी योगक्षेम वर्ष हेतु एक बड़े समूह ने आने की भावना भी व्यक्त की। कार्यक्रम की आयोजन में श्री अतुलभाई शाह का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

जैन विश्व भारती, न्यूजर्सी - विराजित समणीवृन्द - समणी समत्वप्रज्ञाजी व समणी अभयप्रज्ञाजी

- समणी समत्वप्रज्ञाजी व समणी अभयप्रज्ञाजी के मार्गदर्शन में 26 अप्रैल 2025 को कम्युनिटी इनोजमैंट का आयोजन।
- अर्थ वीक के अन्तर्गत एनुअल स्प्रिंग किलन-अप का आयोजन।
- समणी समत्वप्रज्ञाजी के सान्निध्य में आगम स्वाध्याय के विशेष सत्र-धर्म आराधना का आयोजन।
- दिनांक 5 अप्रैल 2025 को भगवान महावीर जयन्ती के कार्यक्रम का समणी आर्जवप्रज्ञाजी के सान्निध्य में आयोजन।
- जैन विश्व भारती न्यूजर्सी सेन्टर के पूर्व चैयरमैन डॉ. प्रताप जैन की सक्सैसफुल लाईफ नामक इवेन्ट का आयोजन।
- हार्ट डिजिज व लाईफ स्टाईल विषय पर डॉ. विमल छाजेड़ द्वारा जैन विश्व भारती न्यूजर्सी सेन्टर में कार्यशाला का आयोजन।
- समणी अभयप्रज्ञाजी व समणी समत्वप्रज्ञाजी का मंगलभावना समारोह आयोजन।
- दिनांक 14 सितम्बर 2024 को समणीवृन्द के सान्निध्य में भिक्षु भक्ति संध्या का आयोजन।
- दिनांक 31 अगस्त से 7 सितम्बर तक महापर्व पर्युषण का समणीजी के सान्निध्य में आयोजन।
- दिनांक 10 अगस्त 2024 को Awakening with Preksha meditation नामक कार्यशाला का समणीवृन्द के सान्निध्य में आयोजन।
- चातुमासिक धर्म आराधना नामक विशेष कार्यक्रम का समणीवृन्द के सान्निध्य में आयोजन।
- भक्तामर, मंत्र साधना, शनिवार सामायिक जैसे कार्यक्रम निरन्तर जारी।

समणीवृन्द के प्रति हार्दिक कृतज्ञता!

Address: Jain Vishva Bharati, NA (New Jersey), 151 Middle Sex Avenue, Iseline, NJ-08830 USA, T. : 0732-404-1430

जैन विश्व भारती, लंदन - विराजित समणीवृन्द - समणी मलयप्रज्ञाजी व समणी नीतिप्रज्ञाजी

- यूनिवर्सिटी ऑफ हिडनवर्ग ऑफ जर्मनी दिनांक 18 से 22 अक्टूबर 2024 तक समणीवृन्द के मार्गदर्शन जैन दर्शन व संस्कृति विषय पर व्याख्यान का आयोजन।





- स्टॉकहॉम में दिनांक 14 से 18 नवम्बर 2024 को समणी मलयप्रज्ञाजी व समणी नीतिप्रज्ञाजी के सान्निध्य में 5 दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन।
- दिनांक 12 से 16 दिसम्बर 2024 को समणीवृन्द के सान्निध्य में 5 दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का सेन्टर पर आयोजन।
- दिनांक 17 से 21 दिसम्बर 2024 को नीदरलैण्ड में जैन फिलॉस्फी विषय पर व्याख्यानमाला में समणीवृन्द की प्रतिभागिता।
- 1 दिसम्बर 2024 को 12 घंटे का सतत ध्यान सत्र।
- ओरलैण्डो से आए डॉ. देवेन्द्र द्वारा माईडफुलनेस विषय पर विशेष सत्र।
- नियमित पाठ्यक्रमों के अंतर्गत कल्याण मंदिर, भक्तामर, मंत्रप्रेक्षा एवं संस्कृत पाठ्यक्रमों का संचालन।

जैन विश्व भारती, ह्यूस्टन - विराजित समणीवृन्द - समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी व समणी पुण्यप्रज्ञाजी

- समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी व समणी पुण्यप्रज्ञाजी के मार्गदर्शन में जैन विश्व भारती के इस केन्द्र पर विविध गतिविधियों का आयोजन।
- The truth of five factors behind every situation विषय पर समणीवृन्द के निर्देशन में कार्यशाला का आयोजन।
- साप्ताहिक आयोजनों के अन्तर्गत प्रत्येक रविवार को भक्तामर व प्रेक्षाध्यान विषयक व्याख्यान का आयोजन।
- 22वें वार्षिक फेमिली कैम्प का 5 अप्रैल से 8 अप्रैल 2025 आयोजन। इसके अन्तर्गत संस्कृति संरक्षण के साथ-साथ अन्य रोचक कार्यक्रमों का भी आयोजन।
- दिनांक 21 जून को विश्व योग दिवस के अवसर पर प्रेक्षा मेडिटेशन सेन्टर ह्यूस्टन में आयोजन।
- दिनांक 12 जनवरी 2025 को जैन विश्व भारती ह्यूस्टन सेन्टर के सिल्वरजुबली कार्यक्रम का विशेष आयोजन समणी अजर्वप्रज्ञाजी एवं समणी स्वातिप्रज्ञाजी के सान्निध्य में प्रेम व वैराग्य की अमर कहानी के नाम से नाटक का मंचन।
- दिनांक 13 अक्टूबर को 15वें एनवल सेलिब्रेसन-अध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन।
- प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के अवसर पर सैन ऑटोनियो सिटी ऑफ अमेरिका में समणीवृन्द के सान्निध्य में 2 दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन जिसमें श्री स्वतंत्रजी जैन, श्री प्रमोद बैंगानी की भी सहभागिता रही।
- अन्य आयोजनों के अन्तर्गत भगवान महावीर जयंती, विश्व योग दिवस, दीवाली पूजन, भगवान महावीर निर्माण दिवस का आयोजन।
- जैन विश्व भारती ह्यूस्टन केन्द्र के चैयरमेन श्री स्वतंत्र जैन व उनकी पूरी टीम का सक्रिय सहयोग व सहभागिता प्राप्त रहती है अतएव हार्दिक आभार।

Address: Jain Vishva Bharati, Houston, 1712 Hwy 6 South Houston, Texas 77077 (USA), T : 281-5969642, -4959733

जैन विश्व भारती, ओरलेण्डो - विराजित समणीवृन्द - समणी जिनप्रज्ञाजी एवं समणी क्षांतिप्रज्ञाजी

- समणी जिनप्रज्ञाजी एवं समणी क्षांतिप्रज्ञाजी के सान्निध्य में साप्ताहिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत जैन विद्या परीक्षा प्रशिक्षण, जैन तत्व विद्या, जीव अजीव, रायपसेणियं, उत्तराध्ययन सूत्र पर स्वाध्याय का कार्यक्रम।
- व्रत दीक्षा, भक्ताम्बर कंठस्थ, अर्हत वंदना, उपसर्गहर स्त्रोत पर कार्यशालाओं का आयोजन।

Address: Jain Vishva Bharati, USA (Orlando), 7819 Lillwill Avenue, Orlando, FL 32809 (USA), T : 407-852-8694

उपर्युक्त केन्द्रों में प्रवासित समणीवृन्द के सान्निध्य में संस्कार निर्माण एवं जैन विद्या से संबंधित विभिन्न गतिविधियां सुचारू रूप से संचालित हैं। विदेशों में प्रवासित अनेक जैन परिवारों से समय पर जैन विश्व भारती की गतिविधियों हेतु सहयोग प्राप्त हुआ। सभी सहयोगी परिवारों के प्रति हार्दिक आभार। केन्द्रों के पदाधिकारीगण एवं सक्रिय रूप से जुड़े कार्यकर्तागण के सहयोग एवं सेवाओं हेतु आभार। ह्यूस्टन सेन्टर संयोजक श्री स्वतंत्र जैन, लंदन सेन्टर संयोजक हासु जे. वोरा एवं डा. सुनील दुगड़, ओरलेण्डो सेन्टर संयोजक श्री देवांग चितलिया, श्री मनोज गांधी, श्री अशोक जैन एवं न्यूजर्सी सेन्टर संयोजक श्री सुरेन्द्र जैन कांकिरिया का विशेष आभार। जैन विश्व भारती सेन्टर्स पर विराजित समस्त चारित्रात्माओं के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। विदेशों में स्थित ये सभी केन्द्र समणीवृन्द के मार्गदर्शन में संस्कार निर्माण जैन शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार और सांस्कृतिक गतिविधियों के संचालन के माध्यम से समस्त जैन परिवारों को आध्यात्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से समृद्ध कर रहे हैं। जैन विश्व भारती के विदेशी केन्द्रों यथा ह्यूस्टन, न्यूजर्सी, मियामी और अन्य विदेशी केन्द्रों यथा दुबई, मलेशिया, इण्डोनेशिया से समय-समय पर अर्थ सहयोग प्राप्त होता है, जिसके लिए विशेष आभार।

विदेशों में अनेक जैन परिवारों से समय पर जैन विश्व भारती की गतिविधियों हेतु सहयोग प्राप्त हुआ है, जिसके लिए हम सभी सहयोगी परिवारों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।







समन्वय

सम्मान एवं पुरस्कार - प्रतिष्ठित प्रायोजकों के सहयोग से जैन विश्व भारती द्वारा प्रदान किए जाने वाले विशिष्ट पुरस्कार

जैन विश्व भारती की ओर से विद्वानों, शोधार्थियों एवं समाजसेवियों के प्रेरणादायी कार्यों को सम्मानित करने हेतु अनेक विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। ये पुरस्कार न केवल उत्कृष्टता के प्रतीक हैं बल्कि तेरापंथ समाज के सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं आध्यात्मिक उत्थान में योगदान करने वालों के लिए प्रोत्साहन का स्रोत भी हैं। इन पुरस्कारों की स्थापना एवं संचालन विभिन्न प्रतिष्ठित परिवारों एवं चेरिटेबल ट्रस्टों द्वारा किया जाता है जिनके प्रति हम हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

नीचे उल्लेखित पुरस्कार और उनके समर्पित प्रायोजक एवं पुरस्कार राशि का विस्तृत विवरण प्रस्तुत है-

आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा सम्मान

प्रायोजक : एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता

पुरस्कार राशि : 1,51,000/- प्रतिवर्ष

अधोषित : अधोषित

महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषा पुरस्कार

प्रायोजक : एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता

पुरस्कार राशि : 1,00,000/- प्रतिवर्ष

अधोषित : ..

गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार

प्रायोजक : एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता

पुरस्कार राशि : 1,00,000/- प्रतिवर्ष

पुरस्कार प्राप्तकर्ता : डा. राजकुमारी सुराणा, कोलकाता

जय तुलसी विद्या पुरस्कार

प्रायोजक : चौथमल कन्हैयालाल सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, सूरत

पुरस्कार राशि : 2,00,000/- प्रतिवर्ष

प्रस्तावित नाम : अधोषित

संघ सेवा पुरस्कार

प्रायोजक : नेमचंद जेसराज सेखानी चेरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता

पुरस्कार राशि : 1,25,000/- प्रतिवर्ष

प्रस्तावित नाम : श्री सुरेन्द्र कुमार चौरड़िया, कोलकाता

आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार

प्रायोजक : के. बी. डी. फाउण्डेशन, कोलकाता

पुरस्कार राशि : 1,00,000/- प्रतिवर्ष

प्रस्तावित नाम : अधोषित

आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार

प्रायोजक : सूरजमल सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, गुवाहाटी

पुरस्कार राशि : 1,00,000/- प्रतिवर्ष

प्रस्तावित नाम : श्री योगेन्द्र शर्मा, भीलवाड़ा

प्रज्ञा पुरस्कार

प्रायोजक : श्री उम्मेदसिंह, विनोदसिंह, दिलीप दुग्ध, तुरा-हैदराबाद-गुवाहाटी

पुरस्कार राशि : 1,00,000/- प्रतिवर्ष

प्रस्तावित नाम : श्री अभय दुग्ध, जयपुर-बैंगलौर

आचार्य तुलसी अनेकान्त सम्पादन

प्रायोजक : एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता

पुरस्कार राशि : 1,00,000/- प्रतिवर्ष

अधोषित : ..

सभी पुरस्कार प्रायोजक परिवारों/ट्रस्टों के प्रति हार्दिक आभार एवं पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं के प्रति मंगलकामना।









विशिष्ट आयोजन

आध्यात्मिक आयोजनों की निरंतर शृंखला

जैन विश्व भारती में चल रही आध्यात्मिक अनुष्ठान की शृंखला निरंतर जारी है, जो पूरे परिसर में एक विशेष आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार कर रही है। इन अनुष्ठानों में न केवल लाडनूँ शहर अपितु आस-पास के क्षेत्रों के हजारों व्यक्तियों की सक्रिय सहभागिता से यह आयोजन केवल धर्मिक अनुष्ठान न रहकर एक सामूहिक आत्मिक जागरण का रूप ले चुका है। समवेत साधना, ध्यान और प्रार्थनाओं के माध्यम से साधकों को आध्यात्मिक शांति और प्रेरणा का अनुभव हो रहा है। यह शृंखला न केवल आध्यात्मिक उन्नयन का माध्यम बनी है, बल्कि जैन विश्व भारती की साधना परंपरा और मूल्यों की जीवंत प्रस्तुति भी कर रही है। जैन विश्व भारती परिसर में विराजित मुनिश्री विजयकुमारजी, मुनिश्री जयकुमारजी, साध्वी कल्पलताजी व वृद्ध साध्वी केन्द्र में विराजित साध्वी कार्तिकयशाजी आदि के मार्गदर्शन व सान्निध्य में आध्यात्मिक अनुष्ठानों का सतत आयोजन परिसर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर रहा है।

नमस्कार महामंत्र, लोगस्स, विश्व शांति अनुष्ठान, भक्तामर-कल्प अनुष्ठान, ध्यान दिवस आदि अनुष्ठानों का आयोजन

- नमस्कार महामंत्र** इन आयोजनों की शृंखला प्रारम्भ हुई नमस्कार महामंत्र के अनुष्ठान के द्वारा। संपोषणम में आयोजित इस कार्यक्रम में मुनिश्री रणजीतकुमारजी, मुनिश्री जयकुमारजी के सान्निध्य का लाभ प्राप्त हुआ। लाडनूँ, राजलदेसर, छापर, चाड़वास, सुजानगढ आदि क्षेत्रों के नागरिकों ने भी समवेत स्वरों में नमस्कार महामंत्र का समवेत उच्चारण किया।
- लोगस्स** आचार्यश्री तुलसी स्मारक पर मुनिश्री रणजीतकुमारजी व मुनिश्री जयकुमारजी के सान्निध्य में लोगस्स अनुष्ठान का आयोजन किया गया।
- विश्व शांति अनुष्ठान** आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षाध्यान केन्द्र में विश्व शांति अनुष्ठान का आयोजन किया गया जिसमें साध्वी कल्पलताजी व साध्वी कार्तिकयशाजी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता डीडवाना-कुचामन जिले के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री हिमांशु शर्मा द्वारा की गई।
- भक्तामर-कल्प अनुष्ठान** जैन विश्व भारती में विराजित मुनिश्री विजयकुमारजी व मुनिश्री जयकुमारजी के पावन सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी स्मारक पर भक्तामर-कल्प अनुष्ठान का आयोजन जिसमें जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों, संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों, श्रावक समाज आदि की उपस्थिति रही।
- ध्यान दिवस** विश्व ध्यान दिवस के अवसर शक्ति, शांति व समर्पण की यात्रा के विशेष आयोजन में साध्वी कल्पलताजी व साध्वी कार्तिकयशाजी का सान्निध्य प्राप्त हुआ एवं आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र में विद्यालय के छात्र-छात्राओं सहित नगर की समस्त संघीय संस्थाओं, गणमान्यजन की उपस्थिति रही।

समस्त आध्यात्मिक आयोजनों में परिसर संयोजक श्री धर्मचन्द लुंकड़, संचालिका समिति सदस्य श्री राजेन्द्र खटेड़, डॉ. विजयश्री शर्मा की संयोजकीय भूमिका रही, अतएव हार्दिक आभार।

हरितीकरण एवं सौंदर्यकरण अभियान

शुभकाम वेंचर्स के संयुक्त तत्त्वावधान में पर्यावरण दिवस के पावन अवसर पर एक व्यापक और सघन हरितीकरण अभियान का शुभारम्भ किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन जैन विश्व भारती और शुभकाम वेंचर्स के सहयोग से जैन विश्व भारती परिसर एवं लाडनूँ शहर में सौंदर्यकरण के अंतर्गत किया गया। इस महवर्षी आयोजन में वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी श्री कन्हैयालाल स्वामी प्रभारी सचिव उपखंड अधिकारी, तहसीलदार, पुलिस उप अधीक्षक, लाडनूँ की प्रेरक उपस्थिति रही। साथ ही, शुभकाम वेंचर्स की ओर से श्री राकेश कठोतिया - श्रीमती आरती कठोतिया और जैन विश्व भारती की ओर से संरक्षक श्री भागचंद बरड़िया, परिसर संयोजक श्री धर्मचन्द लुंकड़, कुलपति प्रो. बच्छराज दुगड़ एवं नगर की समस्त संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण उपस्थित थे। इस अभियान के माध्यम से न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलाए बल्कि शहर एवं परिसर का सौंदर्य भी संवारा गया।





राष्ट्रीय साहित्यिक संगोष्ठी एवं विराट कवि सम्मेलन - 'काव्य की सुर सरिता'

जैन विश्व भारती, लाडनूं के पावन, आध्यात्मिक एवं शैक्षणिक परिसर में 14 एवं 15 जुलाई 2025 को द्विदिवसीय राष्ट्रीय साहित्यिक संगोष्ठी एवं विराट कवि सम्मेलन काव्य की सुर सरिता का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस आयोजन का पावन सान्निध्य शासनश्री मुनि विजयकुमारजी एवं मुनिश्री जयकुमारजी ने किया।

इस आयोजन में देश के 15 विभिन्न राज्यों से सुप्रसिद्ध कवि, शिक्षक, भाषाविद, साहित्यकार एवं विद्वत्जनों ने भाग लिया। प्रमुख प्रतिभागियों में डॉ. अशोक बत्रा, डॉ. आदित्य जैन, डॉ. कमलेश जैन 'वसंत', श्री करण सिंह जैन, श्री केसरदेव मारवाड़ी, श्रीमती दीपा सैनी, श्री नरेश शांडिल्य, श्रीमती प्रियंका राय, ओम नंदिनी, श्रीमती बलजीत कौर, श्रीमती मधु मोहिनी उपाध्याय, श्री मनोज गुर्जर, श्री महेश दुबे, श्री योगेंद्र शर्मा, डॉ. रसिक गुप्ता, श्री राजेश चेतन, डॉ. राहुल अवस्थी, डॉ. रुचि चतुर्वेदी, श्रीमती श्रद्धा शौर्य, श्री संदीप शजर, श्रीमती सपना सोनी, श्री समोद सिंह 'कमांडो', श्रीमती सरला मिश्रा, श्रीमती सरिता जैन, श्रीमती सोनल जैन, डॉ. सुरेंद्र जैन एवं श्री हरीश हिन्दुस्तानी जैसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कवि-कवयित्रियाँ सम्मिलित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ 14 जुलाई को प्रातःकाल 'अध्यात्म और कविता' विषयक संगोष्ठी से हुआ। अपराह्न में साहित्य सदन में 'तेरापंथ का हिन्दी साहित्य में योगदान' विषय पर गहन साहित्यिक चर्चा हुई। सायंकाल में संपोषणम् में 'काव्य की सुर सरिता काव्य पाठ का आयोजन हुआ, जिसमें डीडवाना-कुचामन जिले के कलेक्टर डॉ. महेंद्र खड़गावत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

15 जुलाई को प्रातःकालीन सत्र में शासनगैरव साध्वी कल्पलताजी के सान्निध्य में साध्वियों एवं समणीवृद्ध की सेवा-उपासना के साथ-साथ हस्तलिखित पाण्डुलिपियों एवं हस्तनिर्मित कलाकृतियों की प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। प्रतिभागियों ने यहां प्रस्तुत उत्कृष्ट कलाकृतियों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। दिनांक 15 जुलाई को जैन विश्व भारती संस्थान में कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ।

समापन सत्र में शासनश्री मुनि विजयकुमारजी एवं मुनिश्री जयकुमारजी के सान्निध्य में मुनिश्री जयकुमारजी का प्रभावशाली एकल काव्य पाठ हुआ, जिसने सभी कविवृद्धों को भावविभोर कर दिया। तत्पश्चात् आगंतुक विद्वानों एवं कवियों ने आयोजन पर अपने समीक्षात्मक विचार प्रस्तुत किए।

इस विराट साहित्यिक आयोजन को चन्दनतारा दुगड़ फाउंडेशन की ओर से श्री राजेश दुगड़ ने प्रायोजित किया। मुनिश्री जयकुमारजी के दिशा-निर्देशन में आयोजित इस आयोजन के सूत्रधार अंतर्राष्ट्रीय कवि एवं प्रखर वक्ता श्री राजेश चेतन, परिसर संयोजक श्री धरमचंद लुंकड़ एवं आयोजन संयोजक श्री इन्द्र बैंगानी थे।

कार्यक्रम में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री अमरचंद लुंकड़, मंत्री श्री सलिल लोढा, न्यासी श्री राजेश दुगड़, आदर्श साहित्य विभागाध्यक्ष श्री विजयराज आंचलिया, संचालिका समिति सदस्य श्री भंवरलाल गोठी, श्री हसमुख बी मेहता, नवीन बैंगाणी एवं श्री राजेन्द्र खटेड़ सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। इस समस्त आयोजन की सफलता में मुनिद्वय और समस्त सहभागी कवि एवं विद्वानों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की जाती है। यह आयोजन न केवल साहित्य के क्षेत्र में तेरापंथ की अपार समृद्धि को दर्शाता है, बल्कि जैन विश्व भारती के समर्पित प्रयासों एवं सांस्कृतिक संवर्धन की भी सशक्त मिसाल प्रस्तुत करता है।







विशिष्टजन आगमन

जैन विश्व भारती में आलोच्य अवधि में विशिष्ट महानुभावों व गणमान्य का आगमन हुआ जिनमें से निम्न का उल्लेख ज्ञातव्य है -

- राजस्थान राज्य के माननीय राज्यपाल श्री हरिभाउजी बागड़े जी का जैन विश्व भारती में हार्दिक स्वागत हुआ। इस अवसर पर महामहिम राज्यपाल द्वारा जैन विश्व भारती चिकित्सालय का शिलान्यास किया गया, जो संस्थान के लिए एक ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण क्षण था। साथ ही महामहिम ने साहित्य सदनम् का भी विशेष रूप से भ्रमण किया, जहां उन्होंने संस्था की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की सराहना की।
- राजस्थान राज्य के ऊर्जा राज्यमंत्री श्री हीरालाल नागर जी का आगमन हुआ। मंत्री महोदय ने इस दौरान जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक वातावरण में निवासरत मुनिश्री जयकुमारजी के सेवादर्शन का सुअवसर प्राप्त किया, जो उनके लिए आध्यात्मिक अनुभूति का एक महवपूर्ण क्षण रहा। इस अवसर पर मंत्री महोदय ने आगामी योगक्षेम वर्ष की अपेक्षाओं के अनुसार परिसर में विद्युत व्यवस्थाओं के सुचारु संचालन हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया।
- रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की सलाहकार श्रीमती रसिका चौबे ने जैन विश्व भारती का एक दिवसीय सान्निध्य ग्रहण किया। इस दौरान उन्होंने विमल विद्या विहार के विद्यार्थियों के साथ विशेष परिचर्चा की, जिसमें विद्यार्थियों के उत्कर्ष और प्रगति हेतु प्रेरक संवाद हुआ।
- जगद्गुरु रामानंदचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर के कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे जी ने जैन विश्व भारती में आगमन कर संस्था का भ्रमण किया तथा विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन किया।
- महर्षि वाल्मीकी संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा के कुलपति प्रो. रमेशचंद भारद्वाज जी का भी जैन विश्व भारती में आगमन हुआ, जिन्होंने संस्थान के सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक कार्यों की सराहना की।
- वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी श्री कन्हैयालाल स्वामी, प्रभारी सचिव, जिला डीडवाना व नागौर ने जैन विश्व भारती में एक दिवसीय प्रवास किया। इस अवसर पर उन्होंने सघन हरितीकरण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया, जो पर्यावरण संरक्षण के प्रति संस्था की प्रतिबद्धता का प्रतीक है।
- जर्मनी से प्रो. क्लेयर एवं इंजीनियर मिस अगाता का पंचदिवसीय प्रवास रहा। प्रो. क्लेयर विशेष रूप से यहाँ संथारा विषय पर शोध हेतु प्रवासित रहीं, जो संस्था के शोध एवं अध्ययन कार्य को अन्तर्राष्ट्रीय आयाम प्रदान करता है।
- मेरठ यूनिवर्सिटी के संस्कृत विभागाध्यक्ष श्री संजय शर्मा ने जैन विश्व भारती का भ्रमण किया तथा विभागीय सहयोग एवं शोध कार्यों पर विचार-विमर्श किया।
- सकल जैन समाज संघ, औरंगाबाद के अध्यक्ष श्री महावीर जैन पाटनी का जैन विश्व भारती में दो दिवसीय प्रवास रहा। उल्लेखनीय है कि माननीय राज्यपाल श्री हरिभाउजी बागड़े के आगमन कार्यक्रम में श्री पाटनी जी का विशेष सहयोग रहा।
- डीडवाना-कुचामन जिले में पदस्थापित कलेक्टर श्री पुखराजजी सेन एवं डॉ. महेंद्रजी खड़गावत ने जैन विश्व भारती में आगमन कर विभिन्न आयोजनों में सक्रिय सहभागिता निभाई। जिला कलेक्टर महोदय ने योगक्षेम वर्ष की तैयारियों की दृष्टि से समस्त विभागों से समन्वय स्थापित करवाया और हरसंभव सहयोग के प्रति आश्वस्त किया।
- इसी प्रकार डीडवाना-कुचामन जिले के पुलिस अधीक्षक श्री हनुमानप्रसाद मीणा एवं श्रीमती ऋचा तोमर ने भी जैन विश्व भारती में आगमन कर विविध कार्यक्रमों में भाग लिया। पुलिस अधीक्षक द्वारा योगक्षेम वर्ष में सुरक्षा की दृष्टि से अस्थायी पुलिस चौकी की स्थापना हेतु सहयोग का आश्वासन दिया।
- जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के न्यासी श्री हेमंत पटावरी (वर्तमान कुलपति) एवं कार्यकारिणी सदस्य श्री भैरुलाल सेठिया ने संस्था में आगमन कर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।
- जैन विश्व भारती के संरक्षक श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी एवं श्री अभय दुगड़ ने संस्थान का भ्रमण किया तथा अपने सहयोग और मार्गदर्शन का आश्वासन दिया।
- जैन विश्व भारती में जिला अल्पसंख्यक अधिकारी श्री गोपाल जी नगर का आगमन एवं भ्रमण भी हुआ, जिन्होंने संस्था की सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की सराहना की।
- बैंगलोर के माइक्रोलैब्स के चैयरमेन श्री दिलीप सुराणा के साथ जैन विश्व भारती के प्रतिनिधिमंडल की महवपूर्ण बैठक भी संपन्न हुई, जिसमें आपसी सहयोग एवं विकास की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया गया।
- लाडनूँ के लोकप्रिय नेता ठाकुर करणीसिंहजी का जैन विश्व भारती में समय-समय पर विविध आयोजनों में आगमन एवं आगामी योगक्षेम वर्ष की पूर्व तैयारियों में सक्रियता से हरसंभव सहयोग का आश्वासन।
- सीकर रेंज के आईजी श्री ओमप्रकाशजी मेहरड़ा का भी जैन विश्व भारती में आगमन हुआ और संस्था के पदाधिकारियों से औपचारिक वार्ता हुई। इन विशिष्टजनों के आगमन से जैन विश्व भारती संस्थान को न केवल मान-सम्मान प्राप्त हुआ, बल्कि संस्था के सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में योगदान और विस्तार को भी प्रोत्साहन मिला। समस्त आगंतुकों एवं सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया जाता है, जिन्होंने अपने समय एवं अनुभव से संस्था को समृद्ध किया।









जैन विश्व भारती की यह परंपरा है कि वह सभी विशिष्टजनों का सम्मानपूर्वक स्वागत करते हुए अपने उद्देश्य और संदेश को व्यापक स्तर पर प्रसारित करता है, जिससे संस्था का आदर्श और प्रभाव स्थायी रूप से बढ़ता रहे।

अन्य आयोजन

1. मुनिश्री जयकुमारजी एवं मुनि मुदित कुमारजी का चतुर्मास हेतु पावन प्रवेश

जैन विश्व भारती में पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य एवं निर्देशानुसार मुनिश्री जयकुमारजी एवं मुनिश्री मुदित कुमारजी का चतुर्मासिक प्रवास हेतु पावन प्रवेश हुआ। इस महवपूर्ण अवसर को श्रद्धा एवं भक्ति के साथ समायोजित करने हेतु ऋषभद्वार से जैन विश्व भारती तक एक भव्य रैली का आयोजन किया गया, जिसमें मुनिद्वय का स्वागत विशेष उत्साह एवं भावभीनी श्रद्धा के साथ किया गया। इस रैली में जैन विश्व भारती के समस्त पदाधिकारीगण एवं संघीय संस्थाओं के गणमान्य सदस्य उपस्थित थे, जिन्होंने मुनिश्रीजी की अगवानी कर इस पावन पर्व को और भी गौरवपूर्ण बनाया। वर्तमान में मुनिश्री महाश्रमण विहार में विराजित है, जहां वे अपने आध्यात्मिक प्रवास के माध्यम से साधकों के कल्याण एवं धर्म प्रचार में निरंतर लगे हुए हैं।

2. गणाधिपति पूज्य गुरुदेव तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर श्रद्धांजलि एवं आध्यात्मिक आयोजन

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव तुलसी के महाप्रयाण दिवस के अवसर पर जैन विश्व भारती में शासनगैरव साध्वीश्री कल्पलताजी एवं साध्वी कार्तिकयशाजी के पावन सान्निध्य में एक भव्य आध्यात्मिक जाप एवं श्रद्धार्पण का आयोजन संपन्न हुआ। इस श्रद्धांजलि कार्यक्रम में जैन विश्व भारती के पदाधिकारीगण, विभिन्न संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी तथा श्रावक समाज के गणमान्य सदस्य एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे। यह आयोजन पूज्य गुरुदेव के प्रति असीम श्रद्धा, उनकी शिक्षाओं के प्रति समर्पण और उनके आदर्शों का स्मरण करने का एक सशक्त माध्यम बना। कार्यक्रम में सभी उपस्थितजनों ने उनके अतुलनीय योगदानों को याद करते हुए भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करने का संकल्प लिया। इस प्रकार ये आयोजन न केवल जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक जीवन में महवपूर्ण स्थान रखते हैं, बल्कि समाज में धर्म की संस्कृति और अनुशासन को मजबूत करने का भी प्रभावशाली साधन हैं।

श्रद्धा-प्रणति

जैन विश्व भारती की प्रत्येक गतिविधि एवं प्रगति का सशक्त आधार है हमारे परम पूज्यवर, आचार्यश्री महाश्रमणजी। पूज्यप्रवर द्वारा प्रदत्त दिव्य मार्गदर्शन, अविरल प्रेरणा और संप्रेषित आध्यात्मिक ऊर्जा ही हमें निरंतर विकास की ऊँचाइयों की ओर अग्रसरित करती है। उनके अनंत अनुग्रह के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु शब्द भी अल्प पड़ जाते हैं। हम अपने हृदय के समस्त भावों सहित पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अपनी अनंत श्रद्धा और विनम्र वंदन पूर्ण समर्पण भाव से करते हैं।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के पावन पथ प्रदर्शन, अनुग्रहपूर्ण कृपादृष्टि के लिए हम हृदय से कृतज्ञ हैं। आदरणीय 'मुख्य मुनि' मुनिश्री महावीरकुमारजी तथा 'साध्वीवर्या' साध्वीश्री संबुद्धयशाजी के प्रेरक मार्गदर्शन के लिए हम उनके प्रति गहन कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक आदरणीय मुनिश्री कीर्तिकुमारजी का संस्थान की विविध गतिविधियों के विकास एवं समुचित संचालन हेतु सम्यक चिंतन तथा मार्गदर्शन हमें समय पर प्राप्त होता रहता है, जिसके लिए हम मुनिप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

संस्था की आध्यात्मिक गतिविधियों के सुचारू एवं सम्यक संचालन हेतु 'शासनश्री' मुनिश्री धर्मरूचिजी, मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री कुमारश्रमणजी, मुनिश्री जयकुमारजी, मुनिश्री रजनीशकुमारजी, मुनिश्री जम्बूकुमारजी, मुनिश्री विश्रुतकुमारजी सहित अन्य मुनिवृंद एवं साध्वीश्री जिनप्रभाजी, 'शासनगैरव' साध्वीश्री कल्पलताजी, 'शासनगैरव' साध्वीश्री राजीमतीजी, साध्वीश्री कनकश्रीजी, साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी आदि साध्वीवृंद का मौलिक चिंतन एवं सतत मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है। अतः हम समस्त चारित्रात्माओं के प्रति हृदय से कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

जैन विश्व भारती सेवा केन्द्र में वर्तमान में प्रवासित सेवाकेन्द्र व्यवस्थापक मुनिश्री विजयकुमारजी एवं पूर्व में विराजित मुनिश्री रणजीतकुमारजी, मुनिश्री कौशलकुमारजी, मुनि तन्मयकुमारजी आदि मुनिवृंद के मार्गदर्शन एवं कार्यक्रमों में सान्निध्य प्राप्ति हेतु हार्दिक कृतज्ञता। साथ ही, चतुर्मासिक प्रवास हेतु विराजित मुनिश्री जयकुमारजी, मुनिश्री मुदित कुमारजी, वर्तमान समणी नियोजिका मधुप्रज्ञाजी, पूर्व नियोजिका समणी अमलप्रज्ञाजी, समणी ऋजुप्रज्ञाजी, समणी कुसुमप्रज्ञाजी, समणी शुभप्रज्ञाजी, समणी श्रेयसप्रज्ञाजी आदि समणीवृंद के सतत दिशा-निर्देशन हेतु कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। इसके अतिरिक्त समस्त चारित्रात्माओं एवं समण-समणीवृंद के प्रेरक मार्गदर्शन हेतु भी हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

विनम्र श्रद्धांजलि

जैन विश्व भारती के अहिंसा भवन में दीर्घकालीन प्रवासरत मुनिश्री विजयराजजी का दिनांक 8 नवम्बर 2024 को देवलोकगमन हुआ। बैंकुठी यात्रा में उनके परिवारजन, गणमान्यजन एवं श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। मुनिश्री विजयराजजी जीवन विज्ञान के प्राध्यापक थे और राजगढ़ के मुशरफ बैंगाणी परिवार से सम्बद्ध थे। वे पूज्य गुरुदेव तुलसी के शासनकाल में दीक्षित हुए थे। जैन विश्व भारती परिवार की ओर से मुनिश्री विजयराजजी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

आलोच्य अवधि में अनेक चारित्रात्माओं ने अपनी संयम यात्रा पूर्ण कर पंडित मरण को प्राप्त किया। हम सभी दिवंगत चारित्रात्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके आध्यात्मिक उन्नयन और परमानंद की कामना करते हैं।





आभार ज्ञापन

जैन विश्व भारती का वार्षिक प्रतिवेदन पूर्ण करते हुए मैं उन समस्त महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपने अमूल्य समय, श्रम एवं समर्पण से संस्था की विभिन्न प्रवृत्तियों के विकास और उन्नयन में महवृपूर्ण योगदान दिया।

मैं विशेष रूप से जैन विश्व भारती के दूरदर्शी एवं प्रेरक अध्यक्ष श्री टी. अमरचंद्रजी जैन लुंकड़ का आभार प्रकट करता हूँ, जिनके मार्गदर्शन में मैंने अपने दायित्वों का निर्वहन किया और इस कार्यकाल की सफलता उनके सहयोग के बिना असंभव थी। उनकी संगठित योजना एवं नेतृत्व से संस्था को अपार लाभ मिला।

मुख्य न्यासी श्री जयंतीलालजी सुराणा, जिनको समस्त संघ परिवार उदारमना भामाशाह के रूप में जानता है, को उनकी उदारमना सोच एवं कार्य स्वतंत्रता के लिए हार्दिक धन्यवाद। न्यासीण श्री जोधराजजी बैद, श्री राजेशजी दुगड़, श्री सुभाषचंद्रजी नाहर, श्री जतनलालजी पारख, श्री सुरेन्द्रकुमारजी कोठारी, श्री गणेशमलजी बोथरा, श्री इन्द्राजमलजी भूतोड़िया एवं श्री दर्शनजी बोहरा को समय पर प्राप्त सहयोग हेतु धन्यवाद। वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री पन्नालालजी बैद, उपाध्यक्ष श्री छत्तरमलजी बैद, श्री अजीतसिंह चैरड़िया, श्री प्रमोदजी बैद, संयुक्त मंत्री श्री रमेशजी खटेड़ एवं श्री नवीनजी बैंगानी को उनकी सक्रिय भूमिका और सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद।

कोषाध्यक्ष श्री राजेशजी कोठारी को विशेष रूप से लेखा एवं एफ.सी.आर.ए. नवीनीकरण में पूर्ण सजगता व सहयोग हेतु आभार।

पंचमंडल के सदस्यों श्री भीखमचंदजी पुगलिया, श्री उत्तमचंदजी नाहटा एवं श्री जे. गौतमचंदजी सेठिया के सहयोग हेतु आभार। परामर्शक मंडल के सदस्यों एवं संरक्षकों के समय पर प्रदत्त मार्गदर्शन के लिए हार्दिक कृतज्ञता। जैन विश्व भारती की संचालिका समिति व उपसमितियों के सभी सदस्यों को सहयोग व सेवाओं हेतु धन्यवाद।

जैन विश्व भारती के परिसर विकास कार्य के लिए मैं पथ प्रदर्शक वर्तमान परिसर संयोजक, पूर्व अध्यक्ष श्री धर्मचंदजी लुंकड़ का विशेष आभार प्रकट करता हूँ, जिनके अथक प्रयास और नेतृत्व के बिना यह विकास कार्य संभव नहीं था।

शिक्षा विभाग एवं विमल विद्या विहार के संयोजक श्री गौरवजी जैन मांडोत, सह-संयोजक श्री प्रवीणजी बरड़िया, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल टमकोर के संयोजक श्री रणजीतसिंहजी कोठारी, श्री सुदेशजी आंचलिया, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल जयपुर के संयोजक श्री गौरवजी जैन मांडोत, सह संयोजक श्री भंवरलालजी गोठी, श्रीमती चित्राजी बैद, समण संस्कृति संकाय के विभागाध्यक्ष श्री मालचंदजी बेगानी, सह-विभागाध्यक्ष श्री हनुमानचंद लुंकड़ संयोजक श्री गौतमजी डागा, श्री पुखराजजी डागा डॉ. विजय भागचंद संचेती, प्रेक्षा फाउंडेशन के विभागाध्यक्ष श्री अशोकजी चंडालिया, संयोजक श्री अरुणजी संचेती, श्री अमितजी जैन, श्री विमलजी गुनेचा, आदर्श साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष श्री विजयराजजी आंचलिया, संयोजक श्री बजरंगजी सेठिया, श्री इन्द्ररजी बैंगानी, शोध विभाग के विभागाध्यक्ष श्री मदनचंदजी दुगड़, श्री जयन्तीलाल जी. सुराणा, पुरस्कार चयन समिति के संयोजक श्री बी. रमेशचंदजी बोहरा, सदस्य श्री प्रफुल्लचंदजी बैताला, श्री रमेशजी सूतरिया, मीडिया एवं प्रचार-प्रसार समिति के संरक्षक श्री महावीर बी. सेमलानी, विभागाध्यक्ष श्री संजय वेदमेहता, संयोजक श्री मनोज बैद, सह-संयोजक श्री संदीप मुथा, श्री विनोद डांगरिया, श्री अमित कांकरिया, श्री रमेश डोडावाला, श्री धर्मेन्द्र डागलिया समकित पारख एवं समस्त सहयोगियों को उनके अमूल्य योगदान हेतु हार्दिक धन्यवाद।

संस्था की प्रगति में समय व श्रम के साथ-साथ अर्थ पक्ष भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मैं आभारी हूँ हमारे समस्त समुत्थान के सारथियों-हमारे अनुदानदाताओं के प्रति जिनका उदारमना सहयोग जैन विश्व भारती को विकास का नवीन अभिक्रम बना रहा है। समस्त अनुदानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार।

जैन विश्व भारती के समस्त तकनीकी कार्यों में अपनी विशिष्ट दक्षता एवं तत्परता के साथ निरंतर योगदान देने वाले श्री उमेश सेठिया जी के प्रति हम हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। उनकी तकनीकी योग्यता एवं समर्पित सेवा के कारण ही संस्थान की विभिन्न गतिविधियाँ प्रभावशाली और सुचारू रूप से संचालित हो पा रही हैं।

सभी केंद्रीय एवं स्थानीय संघीय संस्थाओं, सामाजिक संगठनों तथा उदारमना महानुभावों के सहयोग के लिए विशेष आभार। जिनके उदार सहयोग से संस्था ने अपने विकास के नवीन शिखरों को छुआ और इस कार्यकाल में सबसे अधिक अनुदान प्राप्त कर इतिहास रचा। आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, सूरत के पदाधिकारियों श्री संजय सुराणा, डा. संजय जैन व श्री संजय भंसाली का व्यवस्थाओं में सहयोग हेतु आभार। लाडनून नगर की समस्त संघीय व स्थानीय संस्थाओं का हार्दिक आभार।

जैन विश्व भारती के अंकेक्षक एन. के. बोरड एण्ड कंपनी, जयपुर एवं आंतरिक अंकेक्षक सी.ए. नौरतनमल प्रजापत को उत्कृष्ट सेवाओं हेतु साधुवाद। वित्तीय सलाहकारिता के लिए पूर्व कोषाध्यक्ष श्री बिमलचंद भण्डारी, श्री गौतमचंद समदडिया एवं श्री प्रदीप छाजेड़ का हार्दिक आभार।

राजस्थान सरकार, डीडवाना-कुचामन जिला प्रशासन, जिला कलेक्टर, पुलिस थाना, नगरपालिका मंडल लाडनून, उपखण्ड व तहसील कार्यालय, रजिस्ट्रार ऑफ सोसाइटी लाडनून सहित सभी सरकारी एवं गैर सरकारी विभागों, स्थानीय संघीय एवं सामाजिक संस्थाओं एवं व्यक्तियों के सहयोग





हेतु हार्दिक धन्यवाद। वर्तमान विधायक श्री मुकेशजी भाकर एवं लाडनूं के लोकप्रिय नेता ठाकुर करणीसिंह जी का जैन विश्व भारती को सदैव अधिकाधिक सहयोग रहा है एवं आगामी योगक्षेम वर्ष की पूर्व तैयारियों में विशेष सजगता से सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं, आपके प्रति विशेष आभार। नगरपालिका चैयरमेन श्री रावत खां के प्रति भी हार्दिक आभार। जैन विश्व भारती संस्थान 'मान्य विश्वविद्यालय' परिवार के सभी सहयोगियों का हार्दिक आभार। आचार्यश्री महाश्रमण योगक्षेम प्रवास व्यवस्था समिति, लाडनूं का अधिकाधिक समन्वय हेतु हार्दिक आभार। लाडनूं नगर की समस्त संघीय संस्थाओं के प्रति हार्दिक आभार।

कार्यालय सचिव डॉ. विजयश्री शर्मा का विभिन्न प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन में विशेष सहयोग, लेखा विभाग प्रमुख श्री दिनेश सोनी, श्री जयप्रकाश सांखला, कार्यालय सहायक एवं सेवा केन्द्र व्यवस्थापक श्री संजय बोथरा, कंप्यूटर विशेषज्ञ श्री दीपक महतो, परिसर व्यवस्थापक श्री सुशील मिश्रा, श्री इन्द्रचंद्र बुच्छा, श्री अभिषेक कासलीबाल, श्री भूराम देवासी, श्री राहुल महतो, अतिथि गृह व्यवस्थापक श्री हेमन्त चैहान, भण्डार प्रबंधक श्री जोगेन्द्र सिंह सांखला, बिजली-पानी व्यवस्थापक श्री राजेश भदौरिया, सुरक्षा प्रभारी श्री जगवीर सिंह सहित समस्त कर्मियों का निष्ठापूर्ण दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद।

सूचना संप्रेषण में सहयोगी श्री हेमन्त बैद, श्री आकाश सैन, श्री नंदराम सिमार, श्री बबलू एवं श्री राजा का आभार।

स्थानीय एवं अखिल भारतीय समाचार पत्रों, तेरापंथ टाइम्स, विज्ञप्ति, अणुव्रत सहित सभी संघीय एवं सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं, संस्कार चैनल, पारस चैनल, अमृतवाणी चैनल तथा सोशल मीडिया नेटवर्क 'संघ संवाद', 'जैन तेरापंथ न्यूज़', 'एम.एम.बी.जी.' और 'अमर रहेगा धर्म हमारा' की टीमों को प्रभावशाली समाचार प्रसार हेतु विशेष धन्यवाद। स्थानीय मीडियाकर्मियों का भी आभार व्यक्त करता हूँ।

जैन विश्व भारती में विराजित समस्त चारित्रात्माओं की सेवा हेतु प्रत्येक समय तत्पर डॉ. विजयसिंहजी घोड़ावत, वैद्य डॉ. महेशजी मिश्रा, राजकीय चिकित्सालय लाडनूं के बीसीएमओ चिकित्सकों आदि का जागरूकता के साथ समर्पित सेवा प्रदान करने हेतु हार्दिक आभार।

मैं उपरोक्त समस्त सहयोगियों एवं ज्ञात-अज्ञात सभी सहायकों, श्रावक-श्राविकाओं एवं समाज के सदस्यों को हृदय से धन्यवाद एवं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी जैन विश्व भारती को आपका सक्रिय सहयोग, सद्वावना एवं मार्गदर्शन निरंतर प्राप्त होता रहेगा।

आप सभी के प्रति हार्दिक मंगलकामनाओं सहित।

ओम अर्हम्

सलिल लोढ़ा

मंत्री

अंतिम अभिव्यक्ति:

इस सत्र के प्रथम वर्ष की पूर्णता के उपलक्ष्य में मैं परमपूज्य आचार्यप्रवर, समस्त चारित्रात्माओं तथा समण-समणीवृद्ध से विनम्रतापूर्वक क्षमायाचना करता हूँ यदि कार्यकाल के दौरान मेरी ओर से किसी भी प्रकार की अनजानी भूल, अविनय या आशातना हुई हो। मैं जैन विश्व भारती की पूरी टीम, केन्द्रीय व स्थानीय संघीय संस्थाओं तथा सम्पूर्ण श्रावक-श्राविका समाज से सहदय क्षमायाचना करता हूँ।





आध्यात्मिक प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र समिति

(Spiritual Technology Research Center Committee - STRC)



श्री विजयराज आंचलिया

जैन विश्व भारती, आचार्य श्री तुलसी की दूरदर्शी दृष्टि इकामधेनुरु के रूप में सदैव ज्ञान, अध्यात्म एवं सेवा का सतत स्रोत रही है। संस्थान की स्थापना के साथ ही शोध-सकार को प्रमुख आयाम के रूप में अपनाया गया। प्राचीन आगमों को व्याख्या सहित प्रकाशन संस्था का अभूतपूर्व प्रयास है।

आधुनिक युग में साहित्यिक शोध से आगे बढ़कर प्रायोगिक शोध की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सन् 2024 के सूरत चातुर्मास में आध्यात्मिक प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र (STRC) की स्थापना की गई।

इस विभाग के मुख्य उद्देश्य में जैन दर्शन के गूढ़ सिद्धांतों को वैज्ञानिक शोध एवं आधुनिक तकनीक के माध्यम से व्यावहारिक जीवन से जोड़ना, आध्यात्मिकता और नैतिक मूल्यों को आधुनिक युग की चुनौतियों के बीच सशक्त एवं प्रासंगिक बनाना, अनुसंधान, नवाचार एवं विचार नेतृत्व के माध्यम से जैन दर्शन का प्रसार, आध्यात्मिक शोध एवं तकनीकी नवाचार का समन्वय करना।

इस विभाग के मुख्य शोध विषय निम्न होंगे:

- | | |
|----------------------------------|-------------------------------------------------|
| 1. Jain Fasting (जैन उपवास) | 2. Preksha Meditation (प्रेक्षा ध्यान) |
| 3. Space Research (अंतरिक्ष शोध) | 4. Consciousness (चेतना अध्ययन) |
| 5. Particle Physics (कण भौतिकी) | 6. Non-Violent Technology (अहिंसक प्रौद्योगिकी) |

समिति में

- श्री चांद रतन दुगड़ (मुम्बई) संरक्षक एवं परामर्शक
- ए. एस. किरण कुमार (पूर्व अध्यक्ष, ISRO) – चैयरमैन
- डॉ. सुधीर शाह (BARC)
- डॉ. बी. आर. भंडारी
- डॉ. नरेन्द्र भंडारी (ISRO)
- श्री अशोक कोठारी (IRS)
- श्री आलोक बरडिया की सेवाएं प्राप्त हैं।

इस कमिटी के शोध कार्य हेतु वैज्ञानिक एवं शोध दल IIT-Delhi, IIT-Gandhinagar सहित विभिन्न संस्थानों के विशेषज्ञों को शामिल किया जाएगा।

STRC का प्रथम शोध कार्य Jain Fasting विषय पर परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के आशीर्वाद से अहमदाबाद चातुर्मास में सम्पन्न हुआ। इस शोध में 11 तपस्वियों पर अध्ययन किया गया, जिन्होंने अठाई तप (लगातार 8 उपवास) किए थे। साथ ही 6 तपस्वियों पर भी अध्ययन किया गया, जिन्होंने मास खमन तप (लगातार 30 उपवास) पूरे किए थे। इन सभी तपस्वियों पर चिकित्सीय एवं वैज्ञानिक मापदंडों के आधार पर व्यापक अध्ययन किया गया।

यह अध्ययन IIT-Delhi एवं IIT-Gandhinagar के सहयोग से सम्पन्न हुआ। इस शोध में मुख्य भूमिका डॉ. सुरभि तियालोके की रही और उनके सहयोगी वैज्ञानिक थे- डॉ. राहुल गर्ग (IIT-Delhi), प्रो. वैभव त्रिपाठी (IIT-Gandhinagar), डॉ. खिलन प्रकाश थे।

इस शोध के निष्कर्ष आगामी महीनों में अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित होंगे, जिससे जैन उपवास की आध्यात्मिक व वैज्ञानिक महत्ता का वैश्विक स्तर पर प्रचार-प्रसार होगा।

आगामी योजनाओं में - Preksha Meditation, Space Research एवं Consciousness Studies पर उच्च स्तरीय वैज्ञानिक शोध कार्यों की तैयारियाँ प्रगति पर हैं।

विशेष मुनि श्री सिद्ध कुमारजी के श्रम और मार्गदर्शन हेतु कृतज्ञता।

उत्कृष्ट सेवाओं के लिए विभागाध्यक्ष - डॉ. प्रतापजी संचेती (वरिष्ठ न्यूरोसर्जन) है और उनके सहयोगी के रूप में संयोजक श्री तरुण गुंदेचा एवं श्री कमलेश रांका का आभार।





साधुवादः समृद्धि के सारथियों को

किसी भी संस्था की समृद्धि उदारमना श्रावक समाज के बिना संभव नहीं होती है। हमें भी प्रत्येक समय ऐसे ही उदारमना श्रावकों का अप्रतिम सहयोग प्राप्त हुआ और जैन विश्व भारती की समृद्धि निरन्तर जारी है। हम साधुवाद प्रकट करते हैं हमारे समस्त समृद्धि के सारथियों का...

- श्री शुभकरण जोधराज बैद, रत्नगढ़-दिल्ली
- श्री रणजीतसिंह कोठारी, कोलकाता
- श्रीमती चन्दा सुराणा, कोलकाता
- श्री राजेन्द्रकुमार, सुरेन्द्रकुमार महेन्द्रकुमार बच्छावत, कोलकाता
- श्री मनोज-राजेश दूगड़, चंदनतारा फाउण्डेशन, वापी-लाडनूं
- श्रीमती प्रेमदेवी श्री भागचंद प्रवीण बरड़िया, लाडनूं
- श्री अजीतसिंह चैरड़िया, सूरत
- श्री विनोद-अरिहंत बैद, कोलकाता
- श्री माणकचंद नाहटा, (बुच्चा) परिवार, कोलकाता
- श्री भीखमचंद-सुशीला पुगलिया, कोलकाता
- श्री सुरेन्द्र कांकरिया, न्यूजर्सी
- श्री सूरजमल सूर्या-श्री नानकचंद तनेजा परिवार, धूलिया
- जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं
- पारमार्थिक शिक्षण संस्थान, लाडनूं
- श्री प्रकाश-प्रमोद बैद, कोलकाता
- श्री विमलचन्द रुणवाल, जयसिंगपुर
- श्री गणेशमल-छतरमल बैद, चैन्नई
- श्री सतीशचंद घोड़ावत, जयसिंगपुर
- डॉ. आलम अली, नूर फाउण्डेशन, लाडनूं
- श्री विकास-मनीषा बोथरा, इस्लामपुर
- श्री सुभाषचंद नाहर, औरंगाबाद
- श्री जतनलाल पारख, कोलकाता
- श्री पन्नालाल बैद, दिल्ली
- श्री अशोक पारख, सिलीगुड़ी
- श्री अरविन्द सेठिया, तिरुवंतपुरम
- श्री बी. केवलचंद मांडोत, चैन्नई
- श्री मदनचंद दूगड़ 'जौहरी', मुंबई
- श्रीमती निर्मला कोठारी, रायपुर
- श्री स्वतंत्र-विमला जैन, ह्यूस्टन
- श्री कमलसिंह-डॉ. रत्ना बैद, जयपुर
- श्री बी. रमेशचंद बोहरा, चैन्नई
- श्री बुधमलजी सुरेन्द्र, कमल दूगड़, कोलकाता
- श्री राकेश-रचना बोहरा, दुबई
- श्री गणेशमल बोथरा परिवार, बीकानेर
- श्रीमती माणकदेवी-शांतिलाल बरमेचा, मुंबई
- श्री राकेश-आरती कठोतिया, मुंबई
- स्व. श्री हाथीमल जसकरण बैंगणी परिवार, कोलकाता
- श्री जयंतीलाल जी. सुराणा, चैन्नई
- माइक्रोलैब्स, बैंगलोर
- श्री हनुमानमलजी-महेन्द्र भूतोड़िया, कोलकाता
- अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं, श्रीमति सरिता डागा, श्रीमती नीतू ओस्तवाल, श्रीमती आरती कठोतिया, जयपुर, भीलवाड़ा, मुंबई
- चैथमल-कन्हैयालाल सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, छापर
- श्री रतनलाल-आनंद-निधि, अमित-नेहा सेखानी, सूरत
- मित्र परिषद्, कोलकाता
- श्री महेन्द्र गोलछा, लाडनूं
- श्री अनिल चिण्डालिया, सूरत
- श्री अमरचंद धरमचंद लुंकड़, चैन्नई
- श्री मूलचंद नाहर, बैंगलोर
- श्री विजयसिंह डागा, गुवाहाटी
- अशोक परमार, चैन्नई
- श्री अनिल समदड़िया, सूरत
- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, केसिंगा
- श्री दीपक प्रवीण टांटिया, चैन्नई
- श्री मदनलाल तातेड़, मुंबई
- श्री बाबूलाल बच्छावत, कोलकाता





- श्री मंगल टैक्सटाइल, अहमदाबाद
- श्री राकेश-पूनमचन्द डागा, चैन्नई
- श्रीमती ललिता गोलछा, सिंगापुर
- श्री शशी भाई, मियांमी
- श्री सुरेशचंद गोयल, कोलकाता
- श्रीमती सुमिता बैंगाणी, मुंबई
- अभिलाषा लोनारी, नासिक
- बाबूलाल कच्छारा, मुम्बई
- भंवरलाल गोठी, जयपुर
- दिनेश पोखरणा, बैंगलोर
- गजेन्द्र भंडारी, अहमदाबाद
- लालचंद बैद, कटक
- डॉ. मधु जैन, कोलकाता
- महेन्द्र मरलेचा, औरंगाबाद
- नरपतसिंह बैताला, छोटी खाटू
- पंवन मांडोत, बैंगलोर
- पारसमल कोठारी, अहमदाबाद
- सुशील जैन, दिल्ली
- सुभाष लूणावत, चैन्नई
- शांतिलाल भंसाली, जयपुर
- श्री विजयराज आंचलिया, चैन्नई
- श्री कन्हैयालाल कमलसिंह सुराणा, गुवाहाटी
- श्री चैनरूप बैद, गुवाहाटी
- श्री शुभकरण बोथरा, गुवाहाटी
- श्री शांतिलाल कुण्डलिया, गुवाहाटी
- श्री तारकेश्वर संचेती, गुवाहाटी
- श्री विमल मण्डोत, गुवाहाटी
- श्री विनोद सिंघवी, गुवाहाटी
- श्री सलिल लोढा, मुंबई
- श्री नवीन बैंगाणी, कोलकाता
- श्री ललित दूगड़, चैन्नई
- श्री राजेश डोसी, चैन्नई
- श्री ऋषभ बोथरा, गुवाहाटी
- श्री सम्पत्तमल नाहटा, मुंबई
- श्री सुनील बोहरा, अहमदाबाद
- श्री संजय रतीराम जैन, टिटिलागढ़
- श्री सूर्यप्रकाश श्यामसुखा, लुधियाना
- अंजू जैन, गौरखपुर
- बलवंतराज पीपाड़ा, जसोल
- दलपत मेहता, जोधपुर
- गौतमचंद समदरिया, चैन्नई
- जवेरीलाल सुराणा, पुणे
- माणकचंद संकलेचा, जसोल
- महावीर गोलछा, ह्यूस्टन
- मनोज भादानी, कोलकाता
- पंकज डोसी, गंगाशहर
- पुष्पराज कोठारी, जसोल
- सुशील आच्छा, भीलवाड़ा
- सुशील हीरावत, कोलकाता
- शान्तिलाल बैद, लाडनू
- विमला दूगड़, दिल्ली
- आचार्य तुलसी महाश्रमण एज्यूकेशन ट्रस्ट, गुवाहाटी
- श्री के. एल. सेठिया, गुवाहाटी
- श्री महेन्द्र मण्डोत, गुवाहाटी
- श्री शांतिलाल कोठारी, गुवाहाटी
- श्री सुमेरमल-चंचलदेवी झूंगरवाल, गुवाहाटी
- श्री अमचंद नाहटा, गुवाहाटी
- श्री विजयसिंह डोसी, गुवाहाटी
- श्री पुखराज बडोला, चैन्नई
- श्री राजेश कोठारी, चैन्नई
- श्री रमेश खटेड़, चैन्नई
- श्री महावीर पीपाड़ा, वलाजाबाद





कोषाध्यक्ष की कलम से...



सर्वप्रथम वंदन है पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमणजी को जिनकी कृपा से ही जैन विश्व भारती जैसी गरिमामयी संस्था में कोषाध्यक्ष के रूप में कार्यभार प्राप्त हुआ और आगामी योगक्षेम वर्ष के कार्यों में मुझे वित्तीय प्रबंधक के रूप में सहभागिता का अवसर प्राप्त हुआ है। गुरुदेव की प्रेरणा और आशीर्वाद ही हमारी प्रत्येक योजना और वित्तीय व्यवस्था को पवित्रता एवं पारदर्शिता प्रदान करते हैं।

संस्था के कोषाध्यक्ष के रूप में प्रस्तुत यह आलेख केवल संख्याओं का प्रतिवेदन नहीं, अपितु उन सभी संवेदनाओं का प्रतिबिंब है जो जैन विश्व भारती की प्रगति यात्रा में आपके सहयोग से जुड़ी हैं।

मुझे अपार हर्ष होता है कि जैन विश्व भारती ने इस वर्ष वित्तीय सुदृढता के रूप में नवीन आयाम स्थापित किए हैं। इस वर्ष अनुदान, संस्थागत सहयोग व श्रावक समाज के सहयोग के माध्यम से संस्था ने अपने विविध विकास कार्यों को गति दी। प्रत्येक लेन-देन में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और अनुशासन को सर्वोपरि रखा गया।

हमारे लिए सौभाग्य का विषय है कि जैन विश्व भारती का एफसीआरए खाते का इस वर्ष पूज्यप्रवर के आशीर्वाद से नवीनीकरण हो गया है, उक्त कार्य विगत समय से लम्बित था। संघीय संस्थाओं में महत्वपूर्ण दायित्व होता है वित्तीय लेन-देन में पारदर्शिता व विधिकता का, और मुझे आत्मतोष है कि मैं उक्त दोनों दायित्वों को हमारे प्रबंधन की सहायता से पूर्ण कर पाया।

मैं कृतज्ञता स्वरूप पूज्यप्रवर को कुछ शब्द निवेदन करना चाहता हूं -

वैराग्य-विभूषित संतवर, साधना ज्योति अपार

महाश्रमण प्रभु पथ प्रदर्शक, धर्म दीप साकार

इस अवसर पर मैं विशेष रूप से हमारे अध्यक्ष महोदय एवं मंत्री महोदय का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने निरंतर मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया। उनके नेतृत्व ने वित्तीय अनुशासन और संस्था की प्रगति को नई दिशा दी। मेरा विशेष आभार श्री धरमचंद जी लुंकड़ के प्रति जिन्होंने मुझे प्रत्येक कदम पर मार्गदर्शन प्रदान किया और मेरे उत्साह को सदैव प्रोत्साहन दिया।

सभी दानदाताओं, सहयोगी बंधुओं और श्रावक समाज को भी धन्यवाद, जिनके योगदान से जैन विश्व भारती सेवा, शिक्षा और साधना का आलोक बनकर जगमगा रही है। जैन विश्व भारती के प्रबंधन सदस्यों, न्यास मंडल, परामर्शक मंडल, समस्त सहयोगीगण का सादर आभार जिन्होंने संस्था के विकास में समर्पित भाव से कार्य किया।

इस सत्र के प्रथम वर्ष के कार्यकाल की सम्पन्नता के अवसर पर आय-व्यय का लेखा जोखा सदस्य परिवार की सादर सूचनार्थ प्रस्तुत करते हुए मन को प्रसन्नता हो रही है। कार्यकाल में मेरे सहयोगी रहे समस्त महानुभावों का हार्दिक आभार।

अंत में, एक विनम्र निवेदन, हम सब मिलकर जैन विश्व भारती को गुरुदेव के सपनों के अनुरूप आध्यात्मिकता, शिक्षा और अनुसंधान का विश्वस्तरीय केन्द्र बनाने का संकल्प दोहराएँ और योगक्षेम वर्ष को ऐतिहासिक आयोजन बनाने में योगभूत बनें।

राजेश कोठारी

कोषाध्यक्ष





N. K. Borar & Company
Chartered Accountants

INDEPENDENT AUDITOR'S REPORT

To the Members of Jain Vishva Bharati, Ladnun

Opinion

We have audited the financial statements of **Jain Vishva Bharati, Ladnun (The Institution)**, which comprise the Balance Sheet at March 31, 2025, the Statement of Income and Expenditure for the year then ended and notes to the financial statements including a summary of significant accounting policies.

In our opinion, the accompanying financial statements give a true and fair view of the financial position of the institution as at March 31, 2025, and of its financial performance for the year then ended in accordance with the Accounting Standards issued by the Institute of Chartered Accountants of India (ICAI).

Basis for Opinion

We conducted our audit in accordance with the Standards on Auditing (SAs) issued by ICAI. Our responsibilities under those standards are further described in the Auditor's Responsibilities for the Audit of the Financial Statements section of our report. We are independent of the institution in accordance with the ethical requirements that are relevant to our audit of the financial statements and we have fulfilled our other ethical responsibilities in accordance with these requirements. We believe that the audit evidence we have obtained is sufficient and appropriate to provide a basis for our opinion.

Responsibilities of Management and those charged with governance for the Financial Statements

The Managing Committee (Committee) is responsible for the preparation and fair presentation of the financial statements in accordance with the aforesaid Accounting Standards and for such internal control as committee determines is necessary to enable the preparation of financial statements that are free from material misstatement, whether due to fraud or error.

In preparing the financial statements, committee is responsible for assessing the institution's ability to continue as a going concern, disclosing as applicable, matters related to going concern and using the going concern basis of accounting unless committee either intends to liquidate the institution or to cease operations or has no realistic alternative but to do so.

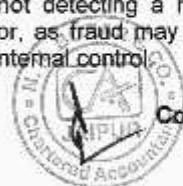
Those charged with governance are responsible for overseeing the institution's financial reporting process.

Auditor's Responsibilities for the Audit of the Financial Statements

Our objectives are to obtain reasonable assurance about whether the financial statements as a whole are free from material misstatement, whether due to fraud or error, and to issue an auditor's report that includes our opinion. Reasonable assurance is a high level of assurance, but is not a guarantee that an audit conducted in accordance with SAs will always detect a material misstatement when it exists. Misstatements can arise from fraud or error and are considered material if, individually or in the aggregate, they could reasonably be expected to influence the economic decisions of users taken on the basis of these financial statements.

As part of an audit in accordance with SAs, we exercise professional judgment and maintain professional skepticism throughout the audit. We also:

- Identify and assess the risk of material misstatement of financial statements, whether due to fraud or error, design and perform audit procedures responsive to those risks, and obtain audit evidence that is sufficient and appropriate to provide a basis for our opinion. The risk of not detecting a material misstatement resulting from fraud is higher than from one resulting from error, as fraud may involve collusion, forgery, intentional omissions, misrepresentations, or the override of internal control.



Contd...2



N. K. Borar & Company
Chartered Accountants

(2)

- Obtain an understanding of internal control relevant to the audit in order to design audit procedures that are appropriate in the circumstances, but not for the purpose of expressing an opinion on the effectiveness of institution's internal control.
- Evaluate the appropriateness of accounting policies used and the reasonableness of accounting estimates and related disclosures made by the committee.
- Conclude on the appropriateness of management's use of the going concern basis of accounting and based on the audit evidence obtained, whether a material uncertainty exists related to events or conditions that may cast significant doubt on institution's ability to continue as a going concern. If we conclude that a material uncertainty exists, we are required to draw attention in our auditor's report to the related disclosures in the financial statements or if such disclosures are inadequate to modify our opinion. Our conclusions are based on the audit evidence obtained up to the date of our auditor's report. However, future events or conditions may cause the institution to cease to continue as a going concern.

We communicate with those charged with governance regarding, among other matters, the planned scope and timing of the audit and significant audit findings including any significant deficiencies in internal control that we identify during our audit.

For N.K. Borar & Co.
Chartered Accountants
FRN : 004844C

Place : Jaipur
Date : 30.07.2025



(Surendra Shah)
Proprietor
M. No. : 073411

UDIN : 250734LLBMIDLK54L4





Jain Vishva Bharati, Ladnun
Balance Sheet as at 31 March 2025

Particulars	Note	31 March 2025	(Amounts in ₹) 31 March 2024
I. Sources of Funds			
(1) NPO Funds	3		
(a) Unrestricted Funds		884,986,518.14	676,054,346.12
(b) Restricted Funds		214,457,785.69	221,039,935.69
Total		1,099,444,303.83	897,094,281.81
(2) Non-current liabilities			
(a) Long-term borrowings	-	-	-
(b) Other long-term liabilities	4	934,921.00	850,921.00
(c) Long-term provisions	-	-	-
Total		934,921.00	850,921.00
(3) Current liabilities			
(a) Short-term borrowings	-	-	-
(b) Payables	5	6,080,180.72	3,048,466.00
(c) Other current liabilities	6	21,989,069.90	64,871,305.55
(d) Short-term provisions	-	-	-
Total		28,069,250.62	67,919,771.55
Total Sources of Funds		1,128,448,475.45	965,864,974.36
II. Application of Funds			
1. Non-current assets			
(a) Property, Plant and Equipment and Intangible assets	7		
(i) Property, Plant and Equipment		579,423,289.19	566,365,375.15
(ii) Intangible assets		-	-
(iii) Capital work in progress		281,875,505.37	95,417,369.61
(iv) Intangible asset under development		-	-
(b) Non-current Investments	8	95,270,568.00	126,981,302.00
(c) Long Term Loans and Advances	-	-	-
(d) Other non-current assets	9	914,290.75	914,290.75
Total		957,483,653.31	789,678,337.51
2. Current assets			
(a) Current investments	-	-	-
(b) Inventories	10	28,846,747.61	25,590,550.61
(c) Receivables	11	4,299,449.59	3,993,737.04
(d) Cash and cash equivalents	12	127,719,063.92	132,993,136.48
(e) Short Term Loans and Advances	13	6,295,850.27	9,702,689.55
(f) Other current assets	14	3,803,710.75	3,906,523.17
Total		170,964,822.14	176,186,636.85
Total Application of Funds		1,128,448,475.45	965,864,974.36

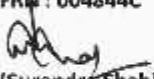
See accompanying notes to the financial statements

As per our Report of even date

For N. K. Borar & Company

Chartered Accountants

FRN : 004844C


(Surendre Shah)
Proprietor
M. No. : 073411

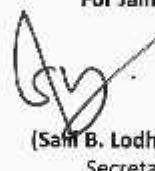


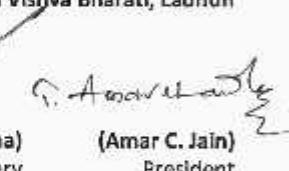
Place: Jaipur

Date: 30.07.2025


(Rajesh K. Kothari)
Treasurer

For Jain Vishva Bharati, Ladnun


(Sam B. Lodha)
Secretary


(Amar C. Jain)
President



Statement of Income and Expenditure for the year ended on 31st March, 2025

Jain Vishva Bharati, Ladnun

(Amounts in '₹')

Particulars	Note	31 March 2025		31 March 2024			
		Unrestricted funds	Restricted funds	Total	Unrestricted funds	Restricted funds	Total
I. Income							
(a) Donations and Grants Received	15	256,731,526.00	-	256,731,526.00	132,718,328.15	-	132,718,328.15
(b) Fees from Rendering of Services	16	53,565,763.00	-	53,565,763.00	45,936,917.38	-	45,936,917.38
(c) Sale of Goods	17	12,019,433.78	-	12,019,433.78	13,022,517.75	-	13,022,517.75
II. Other Income	18	37,747,134.82	-	37,747,134.82	32,824,484.71	-	32,824,484.71
III. Total Income (I+II)		360,063,857.60		360,063,857.60	224,502,247.99		224,502,247.99
IV. Expenses:							
(a) Material consumed/distributed	19	3,909,607.65	-	3,909,607.65	10,166,380.86	-	10,166,380.86
(b) Donations/contributions paid	20	4,344,000.00	-	4,344,000.00	-	-	-
(c) Employee benefits expense	21	56,720,490.38	-	56,720,490.38	48,440,911.00	-	48,440,911.00
(d) Depreciation and amortization expense	7	23,678,200.00	-	23,678,200.00	23,194,551.00	-	23,194,551.00
(e) Finance costs	22	-	-	-	120,491.00	-	120,491.00
(f) Other expenses	23	1,551,919.90	-	1,551,919.90	1,654,231.30	-	1,654,231.30
(g) Charitable expenses	24	65,484,467.65	-	65,484,467.65	52,910,736.49	-	52,910,736.49
Total expenses		155,688,685.58		155,688,685.58	136,487,301.65		136,487,301.65
V. Excess of Income over Expenditure before exceptional and extraordinary items (III-IV)		204,375,172.02		204,375,172.02	88,014,946.34		88,014,946.34
VI. Exceptional items		-	-	-	-	-	-
VII. Excess of Income over Expenditure before extraordinary items (V-VI)		204,375,172.02		204,375,172.02	88,014,946.34		88,014,946.34
VIII. Extraordinary items		-	-	-	-	-	-
IX. Excess of Income over Expenditure for the year (VII-VIII)		204,375,172.02		204,375,172.02	88,014,946.34		88,014,946.34
Balance transferred/utilised to General Fund		204,375,172.02		204,375,172.02	88,014,946.34		88,014,946.34

See accompanying notes to the financial statements

As per our Report of even date

For N. K. Borar & Company
Chartered Accountants

FRN: 00484AC



Place: Jaipur

Date: 30.07.2025

Treasurer

For Jain Vishva Bharati, Ladnun

(Mallesh K. Kohli)
Secretary
(Amar C. Jain)
President



Jain Vishva Bharati, Ladnun

Notes forming part of Financial Statements as at 31st March, 2025

1 Being about the Entity:

Jain Vishva Bharti, Ladnun is a not-for-profit organization established with the objective of promoting education and yoga activities, registered under The Rajasthan Societies Registration Act, 1958. It is also registered under The Rajasthan Public Trust Act, 1959.

2 Significant Accounting Policies :**a Basis of Preparation :**

The financial statements are prepared in accordance with Indian Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) under the historical cost convention on the mercantile basis except as under :

(i) Bills of suppliers are adjusted only after being approved by the management irrespective of date of Purchase.

(ii) Advance receipt of subscription in respect of Preksha Dhyan Patrika is shown as income in the year of its receipt.

Accounting policies have been consistently applied.

b Revenue Recognition:

Revenue is recognised to the extent it is probable that the economic benefits will flow to the Trust and its revenue can be reliably measured.

(i) Corpus Donation:

Donation made with a specific direction that they shall form part of the corpus of the trust are added to the corpus fund and declared as liability in the Balance Sheet.

(ii) Voluntary Contribution:

Contribution received other than Corpus Donations are recognised as income in the year of receipts.

(iii) CSR Donation:

Donation received for carrying out CSR activities is recognised as income only to the extent of its utilisation towards CSR activities. Unutilised amount is treated as Current Liability.

c Property, Plant & Equipment:

Property, Plant & Equipment are shown at cost of acquisition or construction except in case of certain Property, Plant & Equipment which have been revalued are shown at the revalued amount less accumulated depreciation.

d Depreciation and Amortization :

Depreciation on Property, Plant & Equipment is provided on rates specified in Appendix I of Income tax rules, 1962 read with section 32 of Income Tax Act 1961 on written down values. The additional charge of depreciation on incremental value on account of revaluation is charged to revaluation reserve.

However no Depreciation is provided on Manuscripts as in the opinion of the Management, the value of Manuscripts appreciates over a period of time.

e Cash & Cash Equivalents:

Cash & Cash Equivalents includes cash in hand, demand deposits with banks with original maturity of three months or less.

f Investments:

Investments are stated at cost.

g Closing Stock :

Stocks at the year end are valued at Cost except Literature Publications which is valued at 40% of printed price as per practice followed by the Management since incorporation.





Jain Vishva Bharati, Ladnun
Notes forming part of Financial Statements as at 31st March, 2025

3. NPO Funds

(Amounts in ₹)

Particulars	Funds			
	Opening Balance As at 01st April 2024	Transferred/Received during the year	Utilised during the year	Closing Balance As at 31st March 2025
(A) Unrestricted Funds				
(i) Corpus Funds				
-Corpus Funds / Specific Funds (Note 3.1)	171,330,973.00	475,000.00	-	171,805,973.00
-Building Fund	228,267,185.00	-	-	228,267,185.00
(ii) General Funds*	276,456,188.12	208,457,172.02	-	484,913,360.14
(iii) Designated Funds	-	-	-	-
	676,054,346.12	208,932,172.02	-	884,986,518.14
(B) Restricted Funds				
-Revaluation Reserve (Building)	131,642,995.69	-	(6,582,150.00)	125,060,845.69
-Revaluation Reserve (Land)	89,396,940.00	-	-	89,396,940.00
	221,039,935.69	-	(6,582,150.00)	214,457,785.69
Total	897,094,281.81	208,932,172.02	(6,582,150.00)	1,099,444,303.83

(Amounts in ₹)

Particulars	Funds			
	Opening Balance As at 01st April 2023	Transferred/Received during the year	Utilised during the year	Closing Balance As at 31st March 2024
(A) Unrestricted Funds				
(i) Corpus Funds				
-Corpus Funds / Specific Funds (Note 3.1)	171,005,973.00	325,000.00	-	171,330,973.00
-Building Fund	226,167,185.00	2,100,000.00	-	228,267,185.00
(ii) General Funds*	186,816,241.78	89,639,946.34	-	276,456,188.12
(iii) Designated Funds	-	-	-	-
	583,989,399.78	92,064,946.34	-	676,054,346.12
(B) Restricted Funds				
-Revaluation Reserve (Building)	138,571,573.69	-	(6,928,578.00)	131,642,995.69
-Revaluation Reserve (Land)	89,396,940.00	-	-	89,396,940.00
	227,968,513.69	-	(6,928,578.00)	221,039,935.69
Total	811,957,913.47	92,064,946.34	(6,928,578.00)	897,094,281.81

General Funds*

(Amounts in ₹)

Particulars	31 March 2025	31 March 2024
Opening Balance	276,456,188.12	186,816,241.78
Add: Special Membership Fees Received	3,200,000.00	1,100,000.00
Add: Life Membership Fees Received	882,000.00	525,000.00
Add: Net Surplus / (Deficit) transferred from Statement of Income & Expenditure	204,375,172.02	88,014,946.34
Closing Balance	484,913,360.14	276,456,188.12

4. Other non current liabilities

(Amounts in ₹)

Particulars	31 March 2025	31 March 2024
Security Deposit (Payable)	934,921.00	850,921.00
Total	934,921.00	850,921.00

5. Payables

(Amounts in ₹)

Particulars	31 March 2025	31 March 2024
Sundry Creditors	6,080,180.72	3,048,466.00
Total	6,080,180.72	3,048,466.00





Jain Vishva Bharati, Ladnun

Notes forming part of Financial Statements as at 31st March, 2025

6 Other current liabilities

(Amounts in ₹)

Particulars	31 March 2025	31 March 2024
Statutory Dues Payable	488,837.90	297,157.24
Unutilised CSR Donation	1,500,000.00	40,796,234.00
Other Payable		
Caution Money Payable	2,502,780.00	2,256,380.00
Advance Fees Received from Students	1,596,770.00	1,055,310.00
Advance for Awas, Electricity & Water	101,893.00	90,400.00
Advance for Room Booking	327,883.00	2,302,692.00
Advance for Shop Rent	800,000.00	-
Advance against Sale of Property	-	3,300,000.00
Advance against Sale of Literature	70,906.00	173,132.31
Other Liability (For Global School Land)	14,600,000.00	14,600,000.00
Total	21,989,069.90	64,871,305.55





Notes forming part of Financial Statements as at 31st March, 2025

7 Property, Plant & Equipment and Intangible Assets

Particulars	Addition during the year		Deduction during the year	Total as on 31st March, 2025	Statement of Income & Expenditure	Depreciation for the year	W.D.V as on 31.03.2025
	W.D.V as on 01.04.2024	Upto 02-10-2024					
Property, Plant & Equipment							
Land	111,778,163.81	12,134,050.00	2,393,530.00	121,518,683.81			121,518,683.81
Building	418,116,592.40	17,275,037.00	2,112,097.49	437,504,126.89	15,241,437.00	5,582,150.00	415,680,539.89
Office Equipments	9,848,975.55	2,394,770.96	-	14,246,656.43	1,984,531.00	-	12,232,175.43
Plant & Machinery	10,939,485.90	670,990.00	1,011,937.65	12,628,413.55	2,930,670.00	-	9,697,743.55
Vehicles	5,269,694.00	667,000.00	6,723,413.08	12,660,107.08	2,424,618.00	-	10,235,489.08
Furniture & Fixtures	10,512,063.49	371,172.00	372,415.94	11,155,651.43	1,096,944.00	-	10,058,707.43
Total	566,365,375.15	33,513,019.96	12,198,774.08	2,393,530.00	609,683,639.19	23,678,200.00	579,423,289.19
Previous Year	521,372,725.63	43,491,293.81	36,119,292.71	4,454,808.00	596,488,504.15	23,194,551.00	6,928,578.00

Capital work in progress

Particulars	Cost as on 01.04.2024	Addition during the year	Capitalised during the year	Cost as on 31.03.2025
Building Under Construction	95,417,369.61	203,733,172.76	17,275,037.00	281,875,505.37
Total	95,417,369.61	203,733,172.76	17,275,037.00	281,875,505.37
Previous Year	63,603,982.73	96,058,310.50	64,244,923.62	95,417,369.61





Jain Vishva Bharati, Ladnun

Notes forming part of Financial Statements as at 31st March, 2025

	(Amounts in ₹)	
	31 March 2025	31 March 2024
8 Non current investments		
Particulars		
Bonds		
Bank of India (9.30%)	10,298,490.00	10,298,490.00
Bank of Maharashtra (8.75%)	30,270,120.00	30,270,120.00
Industrial Finance Corporation of India (9.75%)	3,057,000.00	3,057,000.00
Industrial Finance Corporation of India (9.90%)	-	4,124,000.00
IDBI Bank (9.50%)	-	24,526,050.00
PNB Housing Finance Limited (8.39%)	2,046,128.00	2,046,128.00
Punjab National Bank (8.50%)	10,134,670.00	10,134,670.00
Punjab National Bank (9.15%)	-	3,050,684.00
Union Bank of India (8.50%)	10,116,420.00	10,116,420.00
Union Bank of India (8.64%)	29,347,740.00	29,347,740.00
Total	95,270,568.00	126,981,302.00
9 Other non current assets		
Particulars		
Security Deposit (Receivable)	914,290.75	914,290.75
Total	914,290.75	914,290.75
10 Inventories		
Particulars		
Inventory at the end of the year		
(As taken, valued & certified by the management)		
Building Material	316,287.61	322,637.61
Gas Cylinder	12,495.00	5,831.00
Sahitya (Books)	28,517,965.00	25,262,082.00
Total	28,846,747.61	25,590,550.61
11 Receivables		
Particulars		
Receivable against use of Electricity & Water	1,239,316.00	930,677.00
Fees Receivable from Students	2,197,379.00	1,941,085.00
Receivable for Sale of Sahitya	862,754.59	1,121,975.04
Total	4,299,449.59	3,993,737.04
12 Cash and cash equivalents		
Particulars		
Cash on hand	343,127.95	225,935.95
Balances with banks		
In Current Accounts	724,290.30	6,665,153.93
In Saving Accounts	34,357,108.67	25,349,868.60
Bank Deposit having maturity of less than 3 months	23,110,347.00	14,950,480.00
Sub-Total	58,534,873.92	47,191,438.48
Other Bank Balances		
Deposits with original maturity for more than 3 months but less than 12 months	47,620,060.00	18,820,086.00
Deposits with original maturity for more than 12 months	21,564,130.00	66,981,612.00
Total	127,719,063.92	132,993,136.48
13 Short Term Loans and Advances		
Particulars		
Balances with Government Authorities		
Tax Deducted and Collected at Source	1,848,122.57	2,121,823.60
GST Input Tax Credit Balance	960.00	1,858,804.69
Other loans and advances [Unsecured, considered good]		
Advance to Creditors	4,255,631.70	1,097,457.26
Advance to Staff	191,136.00	224,604.00
Loan Given	-	2,300,000.00
Advance against Purchase of Land	-	2,100,000.00
Total	6,295,850.27	9,702,689.55





Jain Vishva Bharati, Ladnun

Notes forming part of Financial Statements as at 31st March, 2025

14 Other current assets

(Amounts in ₹)

Particulars	31 March 2025	31 March 2024
Accured Interest	3,567,766.00	3,733,696.00
Prepaid Expenses	235,944.75	172,827.17
Total	3,803,710.75	3,906,523.17

15 Donations and Grants Received

(Amounts in ₹)

Particulars	31 March 2025	31 March 2024
Donations and Grants Received		
General Donation	109,266,292.00	47,152,916.00
FCRA Donation	-	6,297,433.15
CSR Donation	147,465,234.00	79,153,766.00
Grant Received (For Yoga Programme)	-	114,213.00
Total	256,731,526.00	132,718,328.15

16 Fees from Rendering of Services

(Amounts in ₹)

Particulars	31 March 2025	31 March 2024
Fees Realised from Students	45,001,814.00	40,029,025.00
Fees Realised from State Govt. for RTE Students	2,289,294.00	1,229,886.00
Fees Received from Others	6,040,155.00	4,445,056.38
Samyak Darshan Karyashala Receipts	234,500.00	232,950.00
Total	53,565,763.00	45,936,917.38

17 Sale of Goods

(Amounts in ₹)

Particulars	31 March 2025	31 March 2024
Sale of Sahitya	12,019,433.78	13,022,517.75
Total	12,019,433.78	13,022,517.75

18 Other Income

(Amounts in ₹)

Particulars	31 March 2025	31 March 2024
Interest Received		
On Fixed Deposit Receipts & Bonds	16,138,070.00	15,056,847.30
On Saving Bank Accounts	284,803.01	298,434.00
On Auto Sweep	1,143,410.00	569,757.00
On Income Tax Refund	98,999.43	21,931.00
Rent Received	10,811,757.68	9,135,183.31
Profit on Sale of Property, Plant & Equipment	2,716,470.00	-
Miscellaneous Receipts	6,553,624.70	7,732,332.10
Total	37,747,134.82	32,824,484.71

19 Material consumed/distributed

(Amounts in ₹)

Particulars	31 March 2025	31 March 2024
Opening Stock	25,262,082.00	24,340,404.00
Add: Purchase/Publication of Sahitya	7,165,490.65	11,088,058.86
Less: Closing Stock	(28,517,965.00)	(25,262,082.00)
Total	3,909,607.65	10,166,380.86

20 Donations/contributions paid

(Amounts in ₹)

Particulars	31 March 2025	31 March 2024
General Donation Paid	4,344,000.00	-
Total	4,344,000.00	-

21 Employee Benefit Expenses

(Amounts in ₹)

Particulars	31 March 2025	31 March 2024
Salary, Wages & Allowances	51,812,218.00	44,468,449.00
Employer ESI Contribution	808,385.00	716,988.00
Employer PF Contribution	2,952,740.00	2,557,689.00
Staff Welfare Expenses	1,147,147.38	697,785.00
Total	56,720,490.38	48,440,911.00





Jain Vishva Bharati, Ladnun

Notes forming part of Financial Statements as at 31st March, 2025

22 Finance Costs

Particulars	31 March 2025	31 March 2024	(Amounts in ₹)
Interest Paid to Bank	-	120,491.00	
Total	-	120,491.00	

23 Other expenses

Particulars	31 March 2025	31 March 2024	(Amounts in ₹)
Bank Charges	79,677.48	99,278.09	
Premium on Purchase of Bonds	710,734.00	506,801.00	
Interest on TDS delay Deposit	15,516.00	3,120.00	
Income Tax Refundable W/off	14,453.03	-	
Miscellaneous Expenses	731,539.39	1,045,032.21	
Total	1,551,919.90	1,654,231.30	

24 Charitable expenses

Particulars	31 March 2025	31 March 2024	(Amounts in ₹)
Aayojan & Function Expenses	1,016,888.00	879,884.00	
Agam Competition Expenses	142,526.00	139,759.00	
Jain Vidyashala Expenses	-	22,610.00	
Jain Vidyas Expenses	157,028.00	64,775.00	
Audit Fees & Expenses	288,491.00	155,095.00	
Internal Audit Expenses	75,000.00	150,000.00	
Advertisement Expenses	1,175,602.00	2,375,085.13	
Dikshant Samaroh Expenses	1,045,059.00	1,241,807.00	
Samyak Darshan Karyashala Expenses	44,866.00	33,016.00	
Electricity And Water Expenses	7,248,000.00	6,002,207.00	
Generator Expenses	356,441.88	438,725.49	
Tube Well Expenses	475,720.25	1,103,918.88	
Entertainment & Function Expenses	2,250,124.38	1,889,244.74	
Security Expenses	2,384,817.05	1,883,885.58	
Mess Expenses	2,502,118.51	3,019,188.09	
Vehicle Running & Maintenance Expenses	3,708,935.12	3,395,178.68	
Postage, Telegram & Telephone Expenses	969,617.88	1,088,971.24	
Repair & Maintenance Expenses	26,189,656.46	8,695,279.18	
Travelling & Conveyance Expenses	1,395,703.00	1,477,926.81	
Legal & Professional Expenses	298,285.00	67,410.00	
Website Expenses	729,925.32	678,769.86	
Printing & Stationery Expenses	1,037,805.28	1,687,245.19	
Garden & Campus Maintenance Expenses	3,584,086.71	9,238,560.86	
Functions & Festival Expenses	888,805.00	1,255,385.24	
Computer Expenses	249,970.02	180,587.88	
Housekeeping Expenses	620,387.00	415,566.00	
Office Expenses	110,880.00	45,430.00	
News Paper & Periodicals	98,625.00	3,169.00	
School Running Expenses	218,083.00	121,576.00	
Exam Fees Paid	463,435.00	425,175.00	
Parishar Expenses	138,045.00	27,744.00	
Computer Software Expenses	14,663.79	6,602.00	
Patrika Expenses	508,199.50		
Sadhan Shibir Expenses	1,665,605.24	836,436.00	
Grant Expenses (For Yoga Programme)	-	114,213.00	
Stall Expenses	487,953.80	471,527.00	
Insurance Expenses	80,306.19	83,241.83	
Commission on Online Sale	542.45	-	
Packing & Forwarding Expenses	506,908.76	932,285.94	
Software Expenses	199,980.00	34,668.00	
Miscellaneous Expenses	2,155,381.06	2,228,586.85	
Total	65,484,467.65	52,910,736.49	





Jain Vishva Bharati, Ladnun

3.1 Corpus Funds / Specific Funds annexed to and forming part of Financial Statements as at 31st March, 2025

S.No.	Particulars	Balance as on	Additions	Deduction	Balance as on
		01.04.2024 [Rs]	during the year (Rs)	during the year (Rs)	31.03.2025 (Rs)
Corpus / Specific Funds					
1	JVB Akshay Nidhi Kosh				
	J.V.B.A.N. Corpus Fund	7,500,000.00	-	-	7,500,000.00
		7,500,000.00	-	-	7,500,000.00
2	Sahitya Akshay Nidhi Kosh				
	S.A.N. Corpus Funds	5,500,000.00	-	-	5,500,000.00
		5,500,000.00	-	-	5,500,000.00
3	Preksha Dhyan Akshay Nidhi Kosh				
	P.D.A.N. (Tulsi Adhyatma Needam) Corpus Fund	3,895,000.00	475,000.00	-	4,370,000.00
	Prekshadhyyan Life Membership Fees Fund	3,718,337.00	-	-	3,718,337.00
	Prekshadhyyan Sanrakshak Fees Fund	282,954.00	-	-	282,954.00
		7,896,291.00	475,000.00	-	8,371,291.00
4	Saman Sanskriti Sankay Akshay Nidhi Kosh				
	S.S.S.A.N. Corpus Funds	4,000,000.00	-	-	4,000,000.00
	S.S.S. Samposak Fund	586,000.00	-	-	586,000.00
		4,586,000.00	-	-	4,586,000.00
5	Shiksha Akshay Nidhi Kosh				
	Indira Devi Sethia Scholarship Fund	50,000.00	-	-	50,000.00
	Jugal Kishor Sarangi Student Welfare Fund	51,000.00	-	-	51,000.00
	Kailashwati Bharat Singh Jain Student Scholarship	51,000.00	-	-	51,000.00
	Mahadev Lal Saroogi Student Welfare Fund	100,000.00	-	-	100,000.00
	Rajendra Kumar Suneharidevi Scholarship Fund	200,000.00	-	-	200,000.00
	Siksha Akshay Nidhi Corpus Funds	4,987,704.00	-	-	4,987,704.00
	Scholarship Funds	2,978,000.00	-	-	2,978,000.00
	Vimal Vidhya Vihar Corpus Fund	2,146,100.00	-	-	2,146,100.00
	MIS Tamkore Corpus Fund	1,000,000.00	-	-	1,000,000.00
		11,563,804.00	-	-	11,563,804.00
6	Other Kosh				
	Akashya Kosh Fund	7,803,000.00	-	-	7,803,000.00
	Acharya Tulsi Akshay Nidhi Kosh [As per Note 3.1(a)]	82,046,130.00	-	-	82,046,130.00
	Amar Visarjan Fund	3,300,572.00	-	-	3,300,572.00
	Bhanwarlal Rankawari Devl Jahn Vidhya Vikas Nidhi	7,511,000.00	-	-	7,511,000.00
	Bidasar Shodhi Nidhi Fund	314,337.00	-	-	314,337.00
	Bhanwarlal Pugalia Foundation Fund	500,000.00	-	-	500,000.00
	Bheemraj Khemchand Sethia Charitable Trust	200,000.00	-	-	200,000.00
	Deepchand Manakchand Bhura Memorial Fund	121,000.00	-	-	121,000.00
	Development Fund	5,000,000.00	-	-	5,000,000.00
	Girish Bhagwat P.	50,000.00	-	-	50,000.00
	Gangashahar Residents Fund (For Yoga Lab.)	217,303.00	-	-	217,303.00
	Jan Seva Fund	51,000.00	-	-	51,000.00
	Kothari Seva Sadan Corpus Fund	500,000.00	-	-	500,000.00
	M.G. Sarogai Corpus Fund	5,100,000.00	-	-	5,100,000.00
	Pragya Puruskar Fund	500,000.00	-	-	500,000.00
	Preksha Health (9 Research Granth) Fund	550,000.00	-	-	550,000.00
	Sita Saroogi Seva Sansthan	300,000.00	-	-	300,000.00
	Sahitya & Shodhi Fund	100,000.00	-	-	100,000.00
	Surajmal Surana Charitable Trust Fund	700,000.00	-	-	700,000.00
	Shiksha Samposhan Corpus (For JVBI) (Donation in Kind)	9,547,792.00	-	-	9,547,792.00
	Sh. T Okchand & Sons	75,000.00	-	-	75,000.00
	Kesari Chand Jaisukhlal Sethia Charitable Trust	100,000.00	-	-	100,000.00
	Other Corpus Funds	6,566,644.00	-	-	6,566,644.00
	P. B. Distributors Fund	100,000.00	-	-	100,000.00
	Rajasthan Patrika Fund	500,000.00	-	-	500,000.00
	Sangh Sampada Samvardhan Corpus Fund	1,800,000.00	-	-	1,800,000.00
	Santosh Industries	30,100.00	-	-	30,100.00
	Tola Ram Bhaturel Dugar Fund	701,000.00	-	-	701,000.00
		134,284,878.00	-	-	134,284,878.00
	Total	171,330,973.00	475,000.00	-	171,805,973.00
	Previous Year	171,005,973.00	325,000.00	-	171,330,973.00





Jain Vishva Bharati, Ladnun

3.1(a) Acharya Tulsil Akshay Nidhi Kosh annexed to and forming part of Financial Statement as at 31st March, 2025

S.No.	Prerana	Balance as on 01.04.2024 (Rs)	Amount received during the year (Rs)	Balance as on 31.03.2025 (Rs)
1	Padamchand Parasmal Bhutoria	1,100,000.00	-	1,100,000.00
2	Gulab Chand Choraria	1,100,000.00	-	1,100,000.00
3	Bhanwarlal Sharad Kumar Bald	1,100,000.00	-	1,100,000.00
4	Bijay Karen Anchalia	1,100,000.00	-	1,100,000.00
5	Rukhamchand Pugalia	1,100,000.00	-	1,100,000.00
6	Pokarnal Chimandal Bucha	1,100,000.00	-	1,100,000.00
7	Malichand Manik Chand Kochar	1,100,000.00	-	1,100,000.00
8	Jatan Lal Pugalla	1,100,000.00	-	1,100,000.00
9	Kamal Kishore Lalwani	1,100,000.00	-	1,100,000.00
10	Roop Chand Dugar	1,100,000.00	-	1,100,000.00
11	Manoj Lunia	1,100,000.00	-	1,100,000.00
12	Prakash Pramod Bald	1,100,000.00	-	1,100,000.00
13	Kiran Devi Mahendra Kumar Anchalia	1,100,000.00	-	1,100,000.00
14	Nagraj Tater	1,100,000.00	-	1,100,000.00
15	Nauratanmal Sunilkumar Doshi	1,100,000.00	-	1,100,000.00
16	Pyarelal Pitalia	1,100,000.00	-	1,100,000.00
17	Madanlal Tater	1,100,000.00	-	1,100,000.00
18	Khemchand Rampuria	1,100,000.00	-	1,100,000.00
19	Chandanmal Rajiada	1,100,000.00	-	1,100,000.00
20	Shreechand Sanjay Chopra	1,100,000.00	-	1,100,000.00
21	Vinay Kumar Choraria	1,100,000.00	-	1,100,000.00
22	Sumermal Daga	1,100,000.00	-	1,100,000.00
23	Noratanmal Surana	1,100,000.00	-	1,100,000.00
24	Tarachand Jatalal Parasmal Rampuria	1,100,000.00	-	1,100,000.00
25	Hanumanmal Madanchand Dugar (Johari)	1,100,000.00	-	1,100,000.00
26	Devendra Kumar Chetan Dugar	1,100,000.00	-	1,100,000.00
27	Babulal Bothra	1,100,000.00	-	1,100,000.00
28	Nirmal Kumar Dakalia	1,100,000.00	-	1,100,000.00
29	Santosh Kumar Surendra Kumar Dugar	1,100,000.00	-	1,100,000.00
30	Manak Chand Nahata	1,100,000.00	-	1,100,000.00
31	Champa Lal, Amit Kumar Chopra	1,100,000.00	-	1,100,000.00
32	Babulal Sanjay Surana	1,100,000.00	-	1,100,000.00
33	Dhanpat Singh Dugar	1,100,000.00	-	1,100,000.00
34	Amolak Chand Sethia	1,100,000.00	-	1,100,000.00
35	Punam Chand Jasraj Maloo	1,100,000.00	-	1,100,000.00
36	Prakash Chand Maloo	1,100,000.00	-	1,100,000.00
37	Omprakash Jalan	1,100,000.00	-	1,100,000.00
38	Ajay, Sanjay, Deepak Surana	1,100,000.00	-	1,100,000.00
39	Ramesh Chandra Bardia	1,100,000.00	-	1,100,000.00
40	Sumati Chand Gotli	1,100,000.00	-	1,100,000.00
41	Jain Vishva Bharti, North America (NJ)	1,100,000.00	-	1,100,000.00
42	Hukam Chand Choraria	1,100,000.00	-	1,100,000.00
43	Shrichand Dilip Kumar Sanjay Kumar Bhutoria	1,100,000.00	-	1,100,000.00
44	Prakash Chand Kothari & Pushpa Kothari	30,946,130.00	-	30,946,130.00
45	Tara Chand, Dharan Chand Lunked	1,100,000.00	-	1,100,000.00
46	Rajendra Kumar Dabriwala	1,100,000.00	-	1,100,000.00
47	Kharag Singh Kanhaiya Lal Dudheria	500,000.00	-	500,000.00
48	Jiwanmal Jain (Malu)	1,100,000.00	-	1,100,000.00
Total		82,046,130.00	-	82,046,130.00
Previous year		82,046,130.00	-	82,046,130.00





Jain Vishva Bharati, Ladnun
Notes forming part of Financial Statements as at 31st March, 2025

25 ADDITIONAL INFORMATION TO THE FINANCIAL STATEMENTS**25.1 Capital commitments and contingent liability :**

Particulars	(Amounts in ₹)	
	31 March 2025	31 March 2024
Estimated amount of unexecuted capital contracts (Net of advances and deposits)	Nil	Nil
Claims against the institute not acknowledged as debts	Nil	Nil

- 25.2 Balances of Current Liabilities, Current Assets, Loans and Advances, and other debit and credit balances are subject to confirmation. In the opinion of Management, all the current assets, loans and advances and Deposits given have a realizable value equal to the value stated in the books of accounts and accordingly they have been shown as good.
- 25.3 In the opinion of management, realizable value of each of the Property, Plant & Equipment of the Institution is greater than the book value of each of the Property, Plant & Equipment, hence no impairment of the Asset has been recognized by the management at the year end.
- 25.4 The Organisation is registered under GST Act. Though due care has been taken to comply with the provisions of GST Act and Rules, however we have not checked the same in depth. The organisation is in the process of reconciliation of GST liability with Income, Input credit claimed and verifying the completeness, correctness and accuracy of the returns filed and reconciling the same with the financial records. The organisation may be liable for any tax, Interest, Late fees and penalty for non compliance if any found during the course of reconciliation which will be accounted for / paid after completion of reconciliation process. The organisation is therefore contingently liable for any tax, interest, late fees and penalty, if any, imposed by the department at the time of assessment.
- 25.5 Previous year figures have been regrouped/rearranged wherever necessary, to make them comparable with the figures of current year.
- 25.6 The breakup of expenses in to various activities or departments has been done by the management.

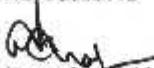
Signatures to notes 1 to 25.6

As per our Report of even date

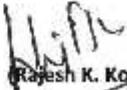
For N. K. Borar & Company

Chartered Accountants

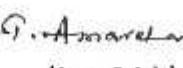
FRN : 004844C


(Surendra Shah)
Proprietor
M. No. : 073411


For Jain Vishva Bharati, Ladnun


(Rajesh K. Kothari)
Treasurer


(Sali B. Lodha)
Secretary


(Amar C. Jain)
President

Place: Jaipur

Date: 30.07.2025





- जैन विश्व भारती के सत्र 2024- 26 की संचालिका समिति ओर न्यास मंडल की प्रथम बैठक 20 अक्टूबर 2024 को आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल, सूरत में आयोजित हुई।
- जैन विश्व भारती के सत्र 2024- 26 की संचालिका समिति ओर न्यास मंडल की द्वितीय बैठक 01 जनवरी 2025 को आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल डोलियां, गुजरात में आयोजित हुई।
- जैन विश्व भारती के सत्र 2024- 26 की न्यास मंडल और संचालिका समिति की तृतीय बैठक दिनांक 05 मार्च 2025 को ऑफलाइन/ऑनलाइन कोलकाता में प्रधान न्यासी श्री जयंतीलाल सुराणा एवं अध्यक्ष श्री अमरचंद लुंकड की अध्यक्षता में आयोजित हुई।
- जैन विश्व भारती के सत्र 2024- 26 की न्यास मंडल और संचालिका समिति की चतुर्थ बैठक दिनांक 23 मार्च 2025 को जैन विश्व भारती संस्थान सभा कक्ष में प्रधान न्यासी श्री जयंतीलाल सुराणा एवं अध्यक्ष श्री अमरचंद लुंकड की अध्यक्षता में आयोजित हुई।
- जैन विश्व भारती की संचालिका समिति के सत्र 2024-2026 की पंचम मीटिंग 15 जून 2025
- जैन विश्व भारती की संचालिका समिति के सत्र 2024-2026 की षष्ठम मीटिंग 31 जुलाई 2025





॥ क्षमायाचना बारम्बार ॥



हृदय से उठे आज एक ही पुकार

जो भी हुई भूल, करें उसे पार।

मन-वचन-काया से जो अपराध हुए

उन सब पर क्षमा के सुमन खिले।

द्वेष की रेखा मिटे, प्रेम का दीप जले

मैत्री का संदेश हर हृदय में पले।

संवत्सरी की बेला में कहूँ बार-बार

“मिछामि दुक्कडम्” स्वीकारो अपार।



विकास के कर्णधार : अतीत से वर्तमान



स्व. मोहनलाल बांगिया



स्व. हेमचंद सेविया



स्व. सूरजमल गोठी



स्व. श्रीचंद रामपुरिया



स्व. बिहारीलाल जैन



स्व. गुलाबचंद चिंडालिया



स्व. श्रीचंद बैंगानी



स्व. धरमचंद चौपड़ा



श्री चैनरूप भंसाली



स्व. मूलचंद बोथरा



श्री दुधमल दुग्गल



स्व. सिद्धराज भंडारी



श्री सुरेन्द्र कुमार चोराडिया



स्व. ताराचंद रामपुरिया



श्री धरमचंद लुंकड़



श्री बी. रमेशचंद बोहरा



श्री अरविन्द संचेती



श्री मनोज कुमार लूनिया



श्री टी. अमरचंद जैन





“ श्रावक समाज स्वयं को शक्ति सम्पन्न और आत्मिक आनन्द से आप्लावित करने के लिए जैन विश्व भारती में समायोजित योगक्षेम वर्ष के साथ जुड़े। सम्यक ज्ञान, दर्शन, चारित्र की तेजोमयी किरणों से स्वयं के भावित करें। ”

योगक्षेम वर्ष में स्वागत को आतुर

जैन विश्व भारती



JAIN VISHVA BHARATI

Post Box No. 8, Post - Ladnun - 341306

Dist. Deedwana-Kuchaman, Rajasthan (India) | +91-1581-226080 / 224671

Email : ladnun@jvbharati.org jainvishvabharati@yahoo.com www.jvbharati.org